उलबा चाउर

उलबा चाउर

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

ULBA CHAUR (उलबा चाउर)
Collection of Maithili Stories by Shri Jagdish Prasad Mandal

ISBN: 978-93-87675-17-9
दाम: 251/- (भा.रु.)

पाँचिम संस्करण: 2023 (पहिल संस्करण: 2013, श्रुति प्रकाशन, दिल्ली)

प्रकाशक: पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं.: 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार: 847452
मुद्रक: पल्लवी प्रकाशन (मानव आर्ट)

वेबसाइट: http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल: pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल: 6200635563; 9931654742

फोण्ट सोर्स: https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts
आवरण: श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल), बिहार: 847452
अक्षर संयोजन: डॉ. उमेश मण्डल

समर्पण भाव

अपना-ले सभ जीबै-मरै छी
अपने-ले जीबैक लूरि सीखू
अपने-आन आनमे अपने
सम समदाउन गाएब सीखू।
अपना-ले सभ...।

सम-समदाउनिक गति सीखिते
दिन, दिन-चरिया बनाएब सीखू।
दिने चरिया चरिये दिनक
दिन-चरिया चलाएब सीखू।
दिन-चरिया...।

सभ चाहैए आगू दौड़ी
दौड़-दौड़ीक रूप बनाएब सीखू।
दौड़ा-दौड़ी करैत-करैत
कुदि समुद्रक टपान सीखू।
कुदि समुद्रक टपान...।

अनुक्रमः

कियो ने

डेढ़ मासक शीतलहरी समैयक रोहणियेँ उतारि देलक। पला-पला ओस पाला बनि दिन-राति बर्फवारी करैत जइसँ मनुक्खकेँ के कहए जे मालो-जाल आ गाछो-बिरीछ जिनगीसँ तंग-तंग भऽ काहि कटैसँ मरबे नीक बुझए लगल। काहि काटि कऽ मरबसँ नीक चटपट मरब होइते छइ। जहिना माल-जालक रूइयाँ भरि दिन भुलकल ठाढ़ तहिना मनुक्खोक। मुदा माल-जाल जकाँ सौंसे देहक नहि। कारणो अछि जे मनुक्खकेँ रूइयाँ संग केशो होइ छै, माल-जालकेँ से नै होइ छइ। गाछ-बिरीछक पात अपन रंगेटा नै बदललक, पीअर भऽ भऽ सुखौ लागल आ तुबि-तुबि खसौ लागल अछि।

आने-आन जकाँ पचासी बर्खक सुगियोकाकीक मनमे हुअ लगलैन जे आब छियासियम अगहन भरिसक नहियेँ देखब। जेहो जारैन-काठी आ अन-पानि घरमे छल सेहो सठि गेल, शीतलहरीक कोनो ठेकान नै अछि, जीब केना?

सुगिया काकीकेँ आगूक कोनो बाटे ने भेटैन। भेटबो केना करितैन, जँ माटिक रस्ता बाट होइ आ दिन-राति बर्खा होइत रहै, तखन पक्की सड़कक सुख कल्पने हएत किने? मुदा मरितो दम तक लोक जीबैक आशा थोड़े तोड़ैए जे सुगिया काकी तोड़ितैथ, कोनो कि हिनकर पचासी बर्खक पाकल फलक आँठी जकाँ देह सक्कत नै छैन। सकताएले आँठीमे ने अँकुरैक शक्ति सेहो अबै छइ।

सुगिया काकीक नजैर गेलैन व्यास बाबापर। ओ जे कण्ठ फाड़ि-फाड़ि कहै छथिन जे ‘लूटि लाउ, कुटि खाउ, भिनसर भने फेर जाउ।’ से समैयक ठेकान किए ने केलखिन जे जखन घरसँ निकलैबला समय बनत तखने ने लोक घरसँ निकैल किछु करत आ जखन घरसँ निकलैबला समैये ने हेतै, तखन केना दोसर दिन किछु करए निकलत? मुदा पेट से थोड़े

बुझत। देहक जे सुख छै से केना भेटतै? आकि व्यासबाबा एअर कंडीशन मकान आ भरल-पूरल अन-पानिक जिनगी बुझि बजै छथिन..?

जेते सुगिया काकी मनकेँ मथैत तेते ओझराएले जाइत। जीबैक बाट कि भेटतैन जे आरो मन सोगाएले चलि गेलैन। असगर छोड़ि घरमे दोसराइतो तँ नहियेँ अछि जे दुनू गोरेक बुधियो आ हाथो-पएर लड़ा-चला कऽ देखितिऐ जे जीब सकै छी की नहि। एहने समयमे ने दोसराइतिक जरूरत होइ छइ। आन समय हेबे किए करतै। असकरे लोक चाह पीब लइए, खेनाइ खा लइए, सुति-पड़ि रहैए। तखन दोसराइतक जरूरते की? दिन-रातिमे ऐसँ बेसी चाहबे की करी? चौबीसो घन्टा कटैक धार तँ बनले अछि किए ने कटत। मुदा से नहि, उमेरो तँ किछु छी? बुढ़ाड़ी मृत्युक कारण छी मुदा जुआनीकेँ केना से कहबै? होइ छै तेकरो हजारो कारण मुदा कारण कारण तँ नहि भऽ सकै छइ। अकारण कारण केना भऽ सकै छइ।

हिया कऽ दुनियाँ दिस सुगिया काकी तकली तँ बुझि पड़लैन बेसौंगरकेँ ठेंगो एकटा टाँगक काज करै छै तँए एकटा सहयोगीक जरूरत तँ अछिए। मुदा सहयोगी हएत के? बेटी सासुरे बसैए, नैहरो हटले अछि, तखन? मुदा जरूरत तँ अछि औझुका। से तँ लगेक लोकसँ भऽ सकैए।

मनमे प्रश्न अबिते उत्तर स्पष्ट भऽ गेलैन जे रीतलालक ऐठाम जा अपन बात कहिऐ जे ओ की कहैए। ‘अनेरे बाबू जन लेबह हौ, तँ पनरह बापूत अपने छी।’ तइसँ तँ काज नै चलत, काज तँ अछि अपन बनि अपना जकाँ जिनगीक पार लगबैक? मुदा तइसँ पहिने विचारि लेब नीक हएत जे जँ भार उठा लेलक तँ बड़ बेस आ जँ नै उठौत तखन? तखन की, तखन यएह ने जे रीतलाल सन-सन बाबन गाही गाममे पसरल अछि। सभ कि कोलिफटुए आकि रसफटुए भऽ जाएत। जेकरा हम अपन बना अपनेबै से किए ने अपनौत। जँ सेहो नहि अपनौत तँ पहिने बुझा कऽ कहबै पछाइत बुझेबै...।

उमेद-नाउमेदक बीच सुगिया काकी रीतलाल ऐठाम विदा भेली। ठंढसँ जहिना देह सिरसिराइत तहिना देहक फाटल-पुरान वस्त्र सिमसिमाएल रहैन।

सुगिया काकीकेँ देखिते रीतलाल अचम्भित भऽ गेल जे एहनो समयमे निकैल काकी दरबज्जापर एली! सुगिया काकीकेँ रीतलाल साक्षात् लक्ष्मी रूप बुझैत। गुणसँ भरल, जेहने कण्ठक स्वर, तेहने नजैरक गुण आ तेहने हाथक लूरिसँ भरल-पूरल सुगिया काकी। जाड़सँ सिरसिराइत देखिते रीतलाल अपन देह परहक कम्मल सुगिया काकीकेँ ओढ़बैत अगियासी जोड़लक।

अगियासीक दुनू कात दुनू गोरेकेँ बैसते गप-सप्प उखड़ैक मनसून बनए लगल। मुदा दुनू अपन-अपन मुँह दबने। मनमे अपन-अपन राग-दोख।

रीतलालक मनमे होइत जे केना पुछबैन, काकी केमहर एलौं। दरबज्जापर एली तँ चाहक बेर चाह, जलखै बेर जलखै, कलौबेर कलौ आ सुतैबेर ओछाइनिक ओरियान कऽ देबैन।

तहिना सुगिया काकीक मनमे उठैत जे घरवारी पहिने किछु हँ-निहँस बाजत तखन ने उतारामे अपनो दुखनामा कहबै।

गुमा-गुम्मी पसरल रहल। गुमा-गुमी देखि किछुकाल भेला पछाइत सुगिया काकी गुमगुमबैत गुमगुमा जकाँ बजली-

“बौआ, एक तँ तूँ एक वंशक छह, दोसर अंश तोरामे अछि जे सुतलो-सुतल कानसँ सुनैत रहै छी, तँए...।”

‘तँए’ कहिते सुगिया काकीक बोल ब्लॉटिंग पेपरमे सोंखल रोसनाइ जकाँ बन्न भऽ गेलैन। मुदा किछु प्रश्न तँ उठिए गेल छल- ‘जे तूँ एक वंशक छह। तैसंग लूरि-बुधिक अंश सेहो अछिए।’

रीतलाल बाजल-

“काकी, तेहेन दुरकाल भऽ गेल अछि जे चिड़ै-चुनमुनीक कोन बात जे नमहरको-नमहरकाक जान बँचब कठिन भऽ गेल अछि। चीन-पहचीन सेहो मेटाएल जा रहल छै, तखन तँ लोक ताबते धरि ने धीरज रखत जाबत धरि आँखि तकैए। ओना, तकितो आँखि देहक दुआरे अथबल भऽ जाइ छै मुदा तैयो तँ भूख लगने टंगटुटा चुट्टी जकाँ नेंगराइतो चलिते अछि। नेंगराइत-नेंगराइत जखन बेदम भऽ जाइए आ पेटक आगिमे जरए लगैए

तखने ने अपनाकेँ हवन चढ़बैए। मनुक्ख तँ सहजे मनुक्ख छी।”

रीतलालक बातकेँ सुगिया काकी किछु बेसीए बुझलैन। बेसी बुझैक कारण काकीक सोचक धार छिऐन। होइतो अहिना छै जे एक्के मुँहक बात कियो बेसी बुझैए तँ कियो कम। मुदा तैसंग तेसरो बुझनिहार तँ होइते अछि जे समगम बुझैए। समगम ई जे जेते प्रश्नकर्ताक बात रहल तेतबे सुननिहार बुझलक। सुगिया काकी तँ सहजे सुग्गाक बोल परखनिहारि छथिए।

जहिना कोनो रंगक वस्त्रपर दोसर रंग चढ़बैक विधि अलग-अलग अछि, अलग-अलग ई जे कियो बेधड़क दोसर रंग घोरि वस्त्रकेँ डुमा देलक तँ कियो आस्ते-आस्ते रंग घोरि बेर-बेर डुमा-डुमा रंग चढ़बैए, तहिना काकी मने-मन सोचए लगली जे बेधड़क अपन विचार रखैसँ पहिने, आस्ते-आस्ते मनक उदगार व्यक्त करब बेसी नीक हएत।

काकी विचारिते छेली कि रीतलालक पत्नी चाह नेने पहुँचली। काकीक हाथमे चाहक गिलास पकड़बैत कबुतरी कहलकैन-

“काकी, तेहेन टिकजरौना समय भऽ गेल जे एक तँ दुनियाँ जाड़सँ जड़ा गेल अछि तैपर आगियो-छाइकेँ कि ओ तेजी छै जे बैशाख-जेठमे रहै छइ। ओइ समयमे जेते जारैनसँ रोटी-तरकारी बनैए तेतेसँ अखन खाली चाह बनैए।”

कबुतरीक रस-रसाएल बोल सुनि कोइली-बोलीमे सुगिया काकी बाझक स्वरलहरी छिटकबैत बजली-

“कनियाँ, एहने-एहने समयमे पुरुखक पुरुखपना परिवारमे देखल जाइ छइ। सभ किछु सुरीत रहने भारियो काज हल्लुके बुझि पड़ै छै, मुदा सभ किछु विपरीत रहने जे अपन-अपन परिवार, समाज आ मातृभूमिक सेवा करैए, वएह ने पुरुखपना भेल। बुढ़ भेलौं, कोनो कि भगवान छी जे जे कहब से भइये जाएत। मुदा एते तँ कहबे करबह जे भगवान हमरे सनक नमहर जिनगी सभकेँ देथुन जे हँसैत-खेलैत दुनियाँ देखैत चलत।”

एक संग अनेको बात काकी बाजि गेली। किछु बात कबुतरी बुझबो केलक आ किछु नहियोँ बुझलक। तहिना रीतलालो सोल्हन्नी बात तँ नहियेँ

बुझलक मुदा पत्नीसँ बेसी तँ बुझबे केलक। दोसर बात रीतलालक मनमे ईहो ठहकल जे परिवारक भीतरक जे प्रश्न अछि ओइमे परिवारक सभकेँ विचार रखैक समान अधिकार छै मुदा समाजक बीच तँ एक-मतक जरूरत होइ छइ। तइले परिपक विचारक जरूरत होइते छइ...।

कबुतरियोकेँ गर भेटल, मुँहमे ताला-लगा पति दिस आँखि उठौलक।

पत्नीक नजैर पड़िते रीतलाल बाजल- “काकी, अखने देखियौ जे एक गिलास चाह पीलौं। यएह चाह गरम समयमे मन भरि दैत मुदा अदहोसँ कम शक्ति रहि गेल छै, तहिना तँ मनुक्खोक शक्तिकेँ होइ छइ?”

रीतलालक प्रश्न सुगिया काकी ठाढ़ काने सुनलैन। प्रश्नक एकभग्गू उत्तर नइ दैत बजली- “रीतलाल, तोंही दुनू परानी अखन ऐठाम छह। परिवार तँ दुनू गोरेक छिअ। जे सन्तान छह ओहो सम्मिलिते छह, तँए परिवारमे ओहन विचारक धार बहबैक छह जे जिनगीक संग हँसैत-खेलैत-बोहैत चलए। हँसी-खेल दुनियाँमे कहाँ छै, ओ छै अपन काजमे। अपन परिवार छी आकि परिवार अपन छी, एकरा नीक जकाँ बुझनहि लोक अपन परिचए बुझि पबैए।”

काकीक विचार सुनि रीतलाल, पत्नीकेँ कहलक-

“काकी की केतौ पड़ाएल जाइ छैथ जे गपे सुनैमे रहि जाएब। जाउ, भानसक जोगार करू। खेला-पीला पछाइत निचेनसँ गप-सप्प करब।”

पतिक सह पाबि कबुतरी बाजल-

“एहेन समयमे काकियो केतए जेती। हम सभ जुआन-जहान छी से तँ एक मोटा वस्त्र देहमे सटने छी, काकीक तँ सहजे सुखाएल हड्डी छैन, बेसीए जाड़ होइत हेतैन। पहिने चाइटा गोरहा आनि कऽ घूरमे दऽ दइ छिऐन जे लगले टनगर भऽ जेती। अच्छा ई कहौथ जे कथी खाइक मन होइ छैन ?”

आशा पाबि सुगिया काकी आश दैत आस मारली- “कनियाँ, भने दुनू बेकती छह, एक तँ भगवान बेसी अज-गज नै देलैन, तैयो अपन काजे

ओहन रहल जे सभ दिन अजे-गजेमे बीतल। मुदा जे किछु अपन अछि सभ समेट लिअ। पाँच कट्ठा खेत बढ़ने अहूँक उपजा बढ़ि जाएत आ हमरो दिन घुसकैत कटि जाएत।”

काकीक बात सुनि रीतलाल बाजल- “काकी, हमरासँ लगो अहाँकेँ बहुत अज-गज अछि पहिने ओ..?”

झपैट कऽ काकी बजली-

“पहिने पाछू किछु नहि, चिड़ैकेँ जेतए घोघ भरै छै तेतए रहै छइ। जे कियो अपन छैथ ओ एहेन दुरकाल समय नै देखि रहल छैथ।”

“देखि किए ने रहल छैथ मुदा सबहक तँ अपने जान भौर भऽ गेल छैन, तखन अनकापर नजैर केना जेतैन?”

रीतलालक बात सुनि सुगिया काकीकेँ कटु लगलैन। कटु लगिते मन रबरबेलैन। रबरबाइते कबकबाइत बजली- “बौआ रीतलाल, कहलह तँ बड़-बढ़ियाँ मुदा मनुक्ख तँ विवेकी होइ छै, ओकरा तँ विवेकसँ डेग उठबए पड़ै छइ। जँ से नइ उठौत तँ मनुक्खता केना औतै। खाली दूटा हाथे-पएर रहने तँ नइ हेतइ। दूटाकेँ के कहए जे चारियोटा पएर रहने पशु तँ पशुए भेल किने। जे हाथी पाँच गोरेकेँ पीठपर लादि चलैए। मुदा ओकरो तँ अपना रहैक ठौर-ठेकान आ खाइ-पीबैक ओरियान करैक लूरि नहियेँ होइ छइ। ई दीगर बात जे बिनु दोसराइते बोन-झाड़मे रहि जीवन-जापन कऽ लइए मुदा पालतू तँ तखने कहबैए जखन मनुक्खक संग जीबैए।”

सुगिया काकीक बात रीतलाल नीक जकाँ नै बुझि सकल। प्रश्न उनटबैत बाजल- “काकी, जखन मनुक्ख मनुक्ख छी तखन दोसराइतकेँ बाँहि पकैड़ उठाबए आकि दोसराक बाँहिक आशा अपने उठैमे करए...।”

रीतलालक विचार सुनि सुगिया काकी मुस्कियाइत बजली-

“बौआ, कालक्रमे मनुक्ख धरतीपर आबि आगू मुहेँ चलैत अछि। तहीले परिवार-समाजक जरूरत होइ छइ। जखन बच्चाक जन्म होइ छै तखन जँ ओकरा दोसर रक्षा नै करतै तँ की ओ उठि ठाढ़ भऽ सकैए। नइ भऽ सकैए। तहिना बुढ़ाड़ीमे, जखन शरीरक सभ अंग आस्ते-आस्ते काज करब छोड़ि दइ छै तखनो तँ दोसराइतक जरूरत होइते छइ। जँ एतबो

बात लोक नै बुझत तँ की ओ मनुक्ख कहबैक अधिकार रखैए?”

सुगिया काकीक बात सुनि रीतलालक मनमे उठल- अनेरे काकी सन लोककेँ ओझरीमे ओझरबै छिऐन। अपनो नीक नहियेँ होइए। नीक तँ तखन हएत जखन कामधेनु सन काकीसँ दूधक आशा राखब। तइले दुधारू भोजन आ रहैक ओरियान करए पड़त। मुदा जइ लीकपर गप-सप्प उतैर गेल अछि, तइसँ हटि दोसर लीकपर जाइमे बाधा तँ बीचमे अछिए...।

अपनाकेँ ओझराएल देखि रीतलाल बाजल- “काकी, अहाँ अपन जिनगी आ अपन विचारक मालिक अपने छी। जे मन हुअए से करब, अखन एतबे जे जेते दिन अपन बुझि रहए चाहब, तइमे बाधा नै हएत। आगू अपन जानी।”

रीतलालक विचार सुनि सुगिया काकीक मन मानि गेलैन जे रहै-जोकर स्थानपर पहुँच गेलौं।

सात भाए-बहिनक बीच सुगिया काकी अन्तिम तेसर बहिन। श्याम वर्ण, चाकर-चौरस देह, गोल मुँह, मझोल कदक सुगिया काकी। गाममे बेछप जनाना। ओना, समाजक जनानाक बीच एकरूपता बेसी मुदा तइसँ भिन्न रहने सुगिया काकी बेछप रहली। समाजक बहुलांश जनाना खेती-बाड़ीसँ जुड़ल तँए दिन-राति ओइ चक्कीकेँ चलबै पाछू बेहाल...।

बेहालो किए ने रहती? मनुक्ख बनि जखन ऐ धरतीपर खेल खेलैले एलौं, भिनसरमे घर-दुआर बना लेब, दुपहरमे बिलैम रौद-बसात जीड़ा लेब आ साँझमे सभकेँ उसारि अपने उसैर जाएब, यएह ने भेल जिनगी। से तँ सबहक सोझहेमे अछि। पतियानी लगौने बाबा अपन बेटाकेँ बाबा बना अपने उसैर-बिसैर जाइ छैथ। अहिना ने दोसर दिससँ पोता-बेटा बनैत, बाबाक कुट्टी लग पहुँच अपन समाधि लइए। मुदा ऐ बीच जे कुत्सित बाधा बिचमाइन करैत रहल ओकरा तँ देखए पड़त किने?

समाजमे सुगिया काकी ऐ दुआरे बेछप छेली जे जेहने हाथक लूरि बदलल छेलैन तेहने छातीक धड़कनक संग कण्ठक स्वर रहलैन, जे मुँहक बोल होइत निकलैत रहलैन। गीत-संगीतक प्रेमी सुगिया काकी। भित्ति-

चित्र वृत्तिवाली सुगिया काकी। अदौरी, दनौरी, बिऔड़ी इत्यादिक संग आमक अँचार-मोरब्बासँ लऽ कऽ तिल-तिसी धरिक अँचार बनौनिहारि सुगिया काकी। तैसंग सतरंग सागक संग सतरंग तरकारी-भुजिया-तरूआ बनौनिहारि सुगिया काकी।

साठि बर्ख पूर्व सुगिया काकी वसन्तपुर एली। जइ परिवारमे एली ओ परिवार बहुत जत्था-जमीनबला नहि। घराड़ीक संग पाँच कट्ठा चास। मुदा जेकरा संग बिआह भेलैन, ओ जेहने देखैमे भव्य तेहने कण्ठक सुरील। भजन-कीर्तन, नाच-गानसँ सोमनाथकेँ बच्चेसँ सिनेह छेलैन। जेना पाछूए-सँ नेने आएल होथि तहिना। दसे-बारह बर्खसँ जे घर छोड़ि वौड़ाए लगल ओ रंगमंचक धीर कलाकार बनि वौड़ाइते रहला।

पुश्तैनी–तीन पुश्त आगूसँ–सुगिया काकीक नैहरक परिवार गीत-संगीतसँ जुड़ल। सोमनाथो घुमैत-घामैत सालक तीन-तीन-चरि-चरि मास रहबो करैथ आ सीखबो करैथ।

किसान परिवार रहितो सुगिया काकीक पिता–विश्वनाथ–क परिवार कृषि कार्यसँ अलग छेलैन। ओना परिवारमे बीस बीघा चास आ पाँच बीघा गाछी-कलमक संग नमगर-चौरगर बासो आ पोखैरो-इनार छेलैन्हे। कला-मर्मज्ञ विश्वनाथक परिवार, सोमनाथक बिआह अपन परिवारमे करा लेलैन। ने सोमनाथक घर-दुआर देखलैन आ ने धन-सम्पैतक हिसाब-किताब पढ़लैन।

वसन्तपुर अबिते सुगिया काकी परिवारक स्थिति देखि मर्माहत भेली। मुदा उपाए की। अर्थ रूपमे पतिक कमाइ किछु ने, सालमे पाहुने-परक जकाँ पतिक आन-जान। पेटक आगि शान्त करै-खातिर सासु-ससुर दिन-राति एकबट्ट केने मुदा कटमटी तँ रहबे करैन।

नव कनियाँ बनि सुगिया काकी घरमे एली, केना सासु-ससुर कहितैन जे कनियाँ बोइन-बुत्ता करए संगे चलू...।

परिवारक प्रतिष्ठा तँ प्रतिष्ठा छिऐ, भलेँ जिनगी भरि नै निमहौ। एको दिन आकि एको क्षणक महत तँ जिनगीमे अछिए।

अपन दिन-दुनियाँ देखैत सुगिया काकी अपना दिस तकलैन तँ

भरल-पूरल खजाना देखलैन। परती देखि जहिना किसानीक जिज्ञासा जगैत, बाजार देखि बेपारक जिज्ञासा जगैत तहिना सुगिया काकीकेँ भेलैन। मुदा, सासु-ससुरक आगू मुँह केना उठौती, ई तँ प्रश्न रहबे करैन।

जिनगी जीबैत-जीबैत मनुक्खो आ पशुओ-पक्षी अभ्यस्त भेने आनन्दित जिनगीक सुख-भोग तँ करिते अछि। मुदा जँ बरिसल पानिकेँ खेतक आड़ि बान्हि-बान्हि नै राखब तँ खेतमे पानि केना अड़त? आ जाबे खेतमे पानि नै अड़त ताबे धान केना रोपब? जँ से नै रोपब तँ बोनिहारिन-बोनिहारक पुतोहुक कलंक केना धुआएत? आ जँ से नै धुआएत तँ जिनगीए केहेन भेल..?

रंग-बिरंगक प्रश्न सुगिया काकीक मन बरसैत पानिक बुलबुला जकाँ इन्द्रधनुषी रंग नेने बनैत आ फुटैत...। मने-मन विचारली जे सभसँ पहिने अपन ढेकी-जत्ताक ओरियान करी। जखन ढेकी-जत्ता भऽ जाएत तखन समाजक कुटौन-पिसौन कऽ अपन स्वतंत्र कारोबार अपना घर-आँगनमे करब। की हमरा चूरा-चाउर कुटैक लूरि नइए। की हमरा मेदा-चिक्कस पीसैक लूरि नइए। तखन तँ भेल जे उक्खैर-समाठ, ढेकी-जात्ताक ओरियान करब। केना सासु-ससुरकेँ कहबैन जे अहाँ कर्जा लऽ कऽ हमरा कीनि दिअ। मुदा अपना माए-बापकेँ तँ कहि सकै छी। देह-हाथ मारि जे आँगनमे बैसल रहै छी तइसँ नीक जे अपन घर-आँगनमे किए ने अपन लूरिक किताब लिखब शुरू करी।

आँगनक ओसारपर ओछाएल ओछाइनपर बैस सुगिया काकी अपन दिन-रातिक झख-झखैत मने-मन सुमारक करए लगली जे केना पौतीमे राखल खीरा-करैलाक बीआ समैपर माटिमे गाड़ल जाइ छै आ समय पाबि जखन माटि पकैड़ हाल पबिते फुरफुरा कऽ अँकुरि माटिक ऊपर आबि अपनाकेँ गाछ कहए लगै छइ..!

बौधिक रूपेँ अगुआएल सुगिया काकीक उत्साह जगलैन- किए ने फूल जकाँ गन्ध सिरैज हवाक संग वायुमण्डलमे पसरब। मुदा बीचमे बाधा तँ ऐछे, ओ अछि जइ परिवारमे एलौं ओ परिवार अपन छी कि नहि। कहैले तँ सभ कियो छैथ मुदा अपन विचारक केते महत अछि से तँ थाहला पछाइत बुझब। मुदा थाहो लेब तँ कठिन अछिए। एकरूपा सासुकेँ तँ

सम्हारि बाजि सम्हारि लेब मुदा ससुर तँ पुरुख छैथ। पुरुखक करेज बेसी स्वार्थी होइए, अपन विचारकेँ दाव-चाप बले राखए चाहैए...। सुगिया काकीक मन ठमकलैन। ठमैकते मनमे बिजलोका जकाँ छिटकलैन। मन मानि गेलैन जे सासुकेँ संगी बनौल जा सकैए। जखने सासु समटेती तखने ससुर उसरता, उसरैत-उसरैत अपने उसरागा बनि सोझ भऽ जेता।

दोसर दिन, साँझू पहर सुगिया काकी चुल्हिक ओरियान करिते छेली कि तखन सासु-ससुर अनका खेतसँ खटि पहुँचलैन। पुतोहुकेँ काजमे लगल देखि रधिया पतिकेँ कहलखिन-

“बड़ काजुल कनियाँ घरमे पएर रखलैन अछि।”

पत्नीक बोलकेँ नकारब सोहनलाल उचित नै बुझलैन, बुझलैन ई जे संगे-संग संगी बनि भरि दिन संगे काज केलौं तखन जेहने विचार अपन अछि तेहने ने हुनको हेतैन, लोकक काजो तँ लोकक पहचान छी। तहूमे भरि दिनक थाकल-मारल अपनो घरमे जँ अराम नै करब से केहेन हएत...।

अष्टयाम कीर्तनमे जहिना अगुआ-पछुआ एक्के धूनमे जयकार करैए तहिना सोहनलाल ताल मिलबैत बजला-

“हम सभ तँ हिनके सबहक नौकरी करै छी। ओना उचितो अछि। तेहेन भगवान जनम देलैन जे सोझहे हाथे-पैरटा देलैन। मुदा ओइमे बेइमानी नै केलैन, ओ चारू सुरेब अछि। जँ चारूमे सँ एकोटा अबाह रहैत तखन के केकरा पुछैत। अहीं हमरा पुछितौं कि हमहीं अहाँकेँ पुछितौं? भीख मांगब छोड़ि दोसर कोनो रस्ता जीबैक रहितए?”

नमगर-चौड़गर पतिक बात सुनि रधिया भाव-विह्वल भऽ गेली। निशाँएल साहित्यकार जकाँ जे जहिना गुदरी-चेथरीक आगिसँ सोनाक लंका जरबै छैथ, तहिना सासुक बोल सुगिया काकीक कानमे पड़लैन। अनुकूल मनसून देखि सुगिया काकी अपन दाउ सम्हारली, भरल बाल्टीन पानि आ लोटा नेने पुतोहु आगूमे पहुँच गेली।

पुतोहुक आग्रह देखिते जहिना बरफ-पानि हवा बनि अकासमे उड़ि जाइए तहिना रधिया उड़ैत बजली- “कनियाँक सभटा सीख-लीक

खनदानीए छैन!”

रधियाक संग सोहनलाल आरो उड़िया गेला। उड़ियाइत बजला-

“जहिना दबो भोज्य-वस्तु चमकैत थारीमे परसलापर अनेरो खेबैयाक मन भरछए लगैत तहिना घरक चिष्टेचार ने घरकेँ घर बनबैए। ई घर कि कोनो हमरे छी कि आब हिनके सबहक भेलैन। जेना सम्हारैथ।”

ससुरक बोल सुनि सुगिया काकीक मन कहलकैन- जेहने परिवारमे भगवान जन्म देलैन भरिसक सासुरो तेहने भेला। मने-मन भगवानकेँ गोड़ लगिते जगलैन- ई दलिदता केते दिन छहटा हाथ पैरक आगू ठाढ़ रहत? मुदा सासु-ससुरकेँ जे जिनगी भरिक बात पेटमे छैन से जाबे सुनि नै लेब ताबे बुढ़ी थोड़े कहती अपन चौथारीक गप-सप्प। तइ सुनैले तँ किछु पूजी लगबै पड़त...।

जहिना बड़का करखन्ना बैसबैले बड़का घर बनबए पड़ै छै तहिना नमहर गप-सप्प सुनैले बेसी धैर्यक जरूरत पड़िते अछि। जइ बनबैमे किछु बेसियो समय लागि सकैए किने।

खेला-पीला पछाइत सुगिया काकी मालीमे तेल नेने सासु-ससुर लग पहुँचली। भरि दिनक थाकल-ठेहियाएलक दबाइयो छी तेल।

सोहनलाल रधियाकेँ कहलखिन-

“काल्हि धनरोपनी समापत भऽ जाएत। गाममे केते गिरहत तँ आठ दिन पहिनहि रोपनी उसारलैन। ई तँ गुण अछि जे अपना सभ केकरो बान्हल जन नै छी, नहि तँ अपनो सबहक काज आठ दिन पहिनहि समापत भऽ गेल रहितए।”

आगूक बात सोहनलालक पेटेमे रहैन कि तैबीच पुतोहुक हाथमे माली देखलैन। माली देखिते घरक मालीपर नजैर गेलैन। अपने फुरने बाजए लगला- “भगवान तेहेन बेटा देलैन जेकरा ने अपन खाइये-पीबैक ठेकान छै आ ने परिवारेक ठेकान। ओहन मनुक्ख बुते घर चलत। अखन अपने दुनू बेकती थेहगर छी, कहुना कऽ घीच-तीड़ परिवारकेँ ससारने चलै छी।”

बेटापर पिताक आछेप सुनिते रधियाक मनक महथीन बाजल-

“बेटा धन छी, कोनो कि बेटी छी जे घर-अँगनाक टाटक अढ़मे नुकाएल रहत। भगवान हमरो सबहक औरुदा ओकरे दउ जे आरो वोनाएल रहए।”

ससुरक बात सुनि जहिना सुगियाक मन विसविसेलैन तहिना सासुक बात सुनि मन तनतनेबो केलैन। मुदा सासु-ससुरक बीचक बातमे नव कनियाँकेँ पड़क चाही की नहि? सुगियाक मन तहीमे ओझरा गेलैन। मुदा नीककेँ ‘नीक’ आ ‘अधला’केँ अधला जँ नै कहल जाए तँ के पटकाएत तेकर कोनो ठीक छइ। हँसियो होइ छै आ हहासो होइ छइ। गम्भीरो हँसब होइ छै आ फुलहो हँसब होइ छै, मुदा से बुझत के? हँसी तँ हँसीए छी। मुँह खोलि बत्तीसीकेँ जोरसँ छिड़िया देलिऐ, बड़का हँसब भेल..!

तारतम करैत सुगिया सासुक विचारपर, सासु दिस घुमि, डिबियाक इजोतमे–मन्हुआएल चोकटल फूल जकाँ नहि, खिलैत कली जकाँ– आँखि-भौ-नाकक संग मुस्कियेली।

पुतोहुक मधुर मुस्कान देखि रधियाकेँ जहिना गोबरखत्तोक पानि धाराक संग पाबि गंगामे पहुँच गंगाजल बनि जाइए तहिना भेलैन। सौंझुका बेला-बेली जहिना अपन चौंसैठो कलासँ नाचए-गाबए लगैए तहिना रधिया पतिकेँ देखबैत बजली-

“सोमनाथ अपन गुणक हिसाबसँ दुनियाँक गुणा-भाग जोड़ैए। जोड़ह, आरो जोड़ह। हम सभ माए-बाप भेलिऐ, तँए जीता-जिनगी ई नै कानमे आबए जे माए-बाप बेटा-पुतोहुकेँ बान्हि कऽ रखने छइ।”

सासुक बात सुनि सुगियाकेँ जहिना अपन शक्ति मुँह जगौलकैन तहिना रधियाकेँ सेहो दमपति-शक्ति जगलैन।

मन्दिरक आगू दुनू हाथ जोड़ि भक्त जहिना आराधना करैत तहिना अखन धरि सुगियो हाथमे माली रखने आराधना करैत रहली। माली देखि रधिया सुगिया काकीकेँ कहलखिन-

“कनियाँ, अहाँ बैसू जे सेवा सासुरक छी ओ तँ सासुरेमे ने सीखब। हम अपने अहाँ ससुरकेँ देह-हाथ ससारि दइ छिऐन।

ओना, ससुरोक सेवा पुतोहुक करतब छी मुदा स्थान-विशेषक

अनुकूल। पिताक सेवा आ ससुरक सेवा एक रहितो दू प्रक्रियासँ चलै छइ। तहिना जन्मदात्ती माए आ पोसनिहारि सासु-माइक सेवामे सेहो भेद होइ छइ। अहाँक ससुर सन भगवान केकरा ससुर देलखिन। भगवान एहने सभकेँ देथुन।”

परिवारक बीच अपन प्रतिष्ठा पबैत सोहनलालक मन सोहनगर होइत-होइत सोन्हाएल दूधक डाबाक मक्खन सदृश सुगन्ध निकालैत बजला-

“कनियाँ, ऐठाम तीनियेँ गोरे छी। अही तीनू गोरेक ने ई घर छी। ऐ घरक भार तँ तीनियेँ गोरेक ऊपर अछि किने। अहूँ खनदानी घरक बेटी छी। अहाँ दुनू गोरे विचारि जे कहब से मानैत चलब। सएह ने..?”

ससुरक विचार सुनि सुगिया शुभ प्रभातकेँ प्रणाम केलीह।

दोसर दिन सबेरे सासु-ससुर बोइन करए घरसँ निकललैथ आ एमहर भानस करैसँ पहिने चाह-ताह पीला पछाइत, सोलह बर्खक नव कनियाँ–सुगिया–घरक चौकैठ लग बैस अपन शक्तिकेँ खोजए लगली।

मनमे उठलैन- हमरा सन परिवारमे जँ देह धूनि श्रम नै कएल जाएत तँ परिवारक नीवमे मजगूती नहि औत। ओना, शक्तिक क्षय ‘श्रम’ आ ‘भोग’ दुनूमे होइ छइ। यएह छी अकास-पतालक दूरी। खाएर जेतए जे हौउ मुदा आइसँ अपन दिनचर्या बना चलब।

भोरहरबामे पाँचटा प्रभाती गाएब आ पहिल-दोसर साँझमे पाँचटा मंगल सेहो गाएब, अपना घरमे गाएब, अपन सासु-ससुरकेँ सुनाएब। सभ अपन घरऽ देवताकेँ पूजा करैए, हमहूँ करब। तइसँ पहिने अखने चिक्कनि माटि घोरि सभ घर-ओसारकेँ ढोरब शुरू कऽ ली। सुखैयोमे दू-तीन दिन लगबे करत। कहिया-ले आ केकरा-ले भित्ती-चित्रक लूरि राखब। जिनगीक ठेकान नहि अछि। बिनु बँटने जे संगे जरि जाएत तँ अधरम हएत किने। से नहि तँ सभ घर-ओसारमे रंग-रंगक रूप-चित्र बना लेब। कोहवर, भानस, पढ़ैक, सुतैक रूप बना नै रखब तँ लूरियो-बुधि तँ हराइते छै, हराइते जाएत।

मुदा ई सभ तँ भेल घर सजबैक। मूल तँ अछि पेट। जखन अपना

खेत नै अछि तखन खेती केना करब?

ओना, नैहरमे जँ खेत छेबे करैन तैयो तँ खेती अपने नहियेँ करै छैथ। ई तँ निसचित अछि जे जखने घर-ओसारमे चित्र बनबैक लूरि अछि तँ काजो-रोजगार अछिए। मुदा जैठाम छी तैठाम की रेडियो-अखबार छै जे लोक बुझत? लोक तँ बुझत देखिये-परेख कऽ, गाम-समाज बनत बाजार। शुभ-अवसरक संग नव-नव घर बनत, नव-नव चित्रसँ घर सजौल जाएत। से नहि तँ सभसँ पहिने पेटक मुँह भरैक ओरियान कऽ ली, तखन बुझल जेतइ। ने दुनियाँ पड़ाएल जाइ छै आ ने अपने पड़ाएल जाइ छी। रहैयोक ऐछे आ रहब तँ संगो चलइ पड़त।

परिवारमे सुगियाक सासुरक जिनगीक पहिल जीत यएह भेलैन जे परिवारक सबहक विचारसँ घर चलत। सभ मिलि काजो-राज सिरजन करब आ सभ कियो मिलि-बाँटि करबो करब...।

अपन तीनू श्रमकेँ एकठाम होइते शक्तिक रूप बनल। वएह शक्ति पूजी बनि ठाढ़ भेलैन। परिवारक दिन-दशा सुधरए लगलैन। जेना-जेना अर्थक स्तर सुधरैत गेल तेना-तेना श्रमक रूप बदलैत परिवार चलए लगल। कमो अपन पूजी–श्रम-अर्थ–जँ अपना मनोनुकूल उपयोग कएल जाएत तँ कर्कशतामे कमी अबैत। कर्कशता ओतए विकृत रूप पकड़ैत जेतए मनकेँ प्रतिकूल श्रम करए पड़ै छइ।

समय बीतैत गेल। सासु-ससुर पुतोहुक सहयोगी बनि एकधारामे परिवारकेँ ठाढ़ केलैन। ओना दस बर्ख बीतैत-बीतैत सुगियाक नाओं-जश चरिकोसीमे पसैर गेल छेलैन मुदा एते-सघन काजक समाजमे गाम छोड़ि अनतए जेबाक समैये ने भेटैन। एक बोनिहार परिवार समाजक ओइ मानचित्रपर पहुँच गेल जेकरा ‘सुतिहार परिवार’ कहल जाइए।

बीस बर्ख पुरैत-पुरैत सुगिया काकीकेँ पाँचटा सन्तान भेलैन। तीनटा बेटी आ दू बेटा। सासु-ससुरकेँ रहने सुगिया काकीक काजमे ओते बाधा नै पड़लैन जेते असगरूआ परिवारक चिलकौरकेँ पड़ै छइ। मनुक्ख पैदा करब आ मनुक्ख बना ठाढ़ करब, धिया-पुताक खेल नहि।

ऐ बातपर सुगिया काकी सदिकाल धियान रखै छेली। मुदा धियान

रखलो पछाइत दुनू बेटा मरि गेलैन। मात्र तीनू बेटी बँचलैन। समाजक लोक सुगिया काकीकेँ जेहने गीत गौनिहारि, तेहने चित्रकार आ तेहने पाक पकौनिहारि एक स्वरसँ मानै छैन।

समय बीतैत गेल। सुगिया काकीक पति–सोमनाथ–उड़ि कऽ बम्बइ चलि गेल। ओत्तै दोहरा कऽ बिआहो कऽ लेलक। साउसो-ससुर मरि गेलैन...।

आइ तीनू बेटीक संग सुगिया काकी वसन्तपुरमे बँचि गेली।

अपना जनैत सुगिया काकी तीनू बेटीक बिआह नीके घर जानि केलैन मुदा समैयक विर्ड़ोमे उधिया तीनू जमाइयो आ बेटियो मद्रासे-कर्नाटकमे जा कऽ बसि गेलैन।

अखन धरि, पचासी बर्खसँ पहिने धरि–सुगिया काकी समाजक समुद्र रूपी पेटमे हराएल रहली, मुदा सालक शीतलहरी सुगिया काकीकेँ असहनीय बना देलकैन।



शब्द संख्या: 3780

सूदि भरना

बालपनमे लागल चोट जहिना अधवेशू वा बुढ़ाड़ीमे उपैक जाइत तहिना डोमीकाकार्कें बेटी बिआहक चोट मास दिनक पछाइत उपकलैन। रोगाएल अवस्थामे जखन कियो जिनगी-मृत्युक मचकीपर झूलए लगैत आ तखन जहिना धर्मराजक दरबार लगैत तहिना डोमी काकार्कें हुअ लगलैन। निष्पक्ष समीक्षक जहिना साहित्यक कोण-कोणक समीक्षा करैत तहिना डोमीकाका सेहो करए लगला। अन्तो-अन्त अही निर्णय-पर पहुँचला जे गाममे रहने जीवन-यापन नहि कऽ पाएब तँए बिनु परदेश गेने जीब असम्भव अछि...।

केना नै असम्भव होइतैन? पाँच बीघा जमीनबला डोमी कक्काक दू बीघा जमीन घर-घराड़ीसँ लऽ कऽ गाछी-बिरछी आ खरहोरिमे बरदाएल बाँकी तीन बीघा मात्र जोतसीम जमीन छैन। समाजोक देखा-देखी आ कुटुमो-परिवारक स्तरक अनुकूल तँ करए पड़तैन। जहिना धरमोक स्वरूप समयानुसार बदैल जाइ छै तहिना ने समाजोमे अछि जे बेसी लाम-झामसँ बेटीक बिआह आ माए-बापक सराध करैए ओ समाजमे ओते ऊपर होइए। तेतबे नहि, जइ समाजमे दोससँ बेसी दुश्मन रहैत तइ समाजमे ईहो पुरौनाइ तँ जरूरीए होइत जे अनकासँ की मोर छी।

दलानक ओसारक दच्छिनबरिया चौकीपर चीत भेल पड़ल डोमीकाका अपन दहिना हाथ मोरि दुनू आँखिपर नेने परिवारक बदलैत स्वरूपपर आँखि गाड़ि सोचि रहल छला। मनमे उठलैन गलती अपनो भेल। ई तँ नजैरपर आएल जे समाज आ कुटुम-परिवारक देखौंस करब जरूरी अछि मुदा ई नहि आबि सकल जे ओहूमे पतियानी लगल अछि। एकठाम सभ समटल कहाँ छैथ! भैयारियोमे तँ होइते अछि जे संगे-संग जिनगी बनौनिहारि पितियौत बहिनक बीच एककेँ इंजीनियर-डॉक्टर संगी भेटैए तँ दोसरकेँ ऑफिसक किरानी वा स्कूलक शिक्षक भेटैए। भूल भेल!

आगू दिस तकलौं मुदा पजरबाहि आ पाछू दिस नै तकलौं। एकरा के उचित कहत जे एक-ओद्रक बेटा-बेटीक बीच इमान-बेइमान बनि जाउ। पाँच बीघा जमीन अछि चारू भाए-बहिनक हिस्साक संग पाँचम अपनो दुनू परानीक हेबे करत। जँ से नहि हएत तँ अपन जिनगी अनका हाथमे जेबे करत। मुदा गलती भेल औगताइ केने। तहूमे पत्नी आरो मन घोर कऽ देलैन। ई कहू जे अर्द्धांगिनी भऽ कऽ केहेन विचार देलैन जे ऐ गाममे कर्ज नै भेटत तँ हम नैहरसँ आनि देब। एकटा मुर्गीक जँ दसठाम हलाल होइ तँ ओकरा की कहबै?

एक तँ ओहिना परिवार महजालमे ओझराएल अछि तैपर हमरा किरतबे समाजक ऊपर आन समाजक कर्ज आबि जाए, एहेन काज जीता-जिनगी नइ करब। मुदा तइमे कनी औगताइ भेल। औगताइ ई भेल जे पच्चीस-तीस हजार रुपैए कट्ठाक चीज पाँचे हजार रुपैए भरना लगा देलिऐ। मुदा बीतलकेँ बिसरबे नीक। जँ से नै करब तँ भूतलग्गू जकाँ अपन देह-हाथ अपने नोचए पड़त..!

डोमी कक्काक नजैर भरना जमीनपर घुमलैन। केना लोक पाबैन-तिहारमे सेर-पसेरी लऽ खेतो भरना लगबैए आ बेचबो करैए? मनमे खौंझ उठलैन, कानूने बनने कि सुथनी हएत जे आठ बर्खक पछाइत भरना जमीन घुमि जाएत, मुदा होइ की छइ? तेतबे किए, जहिना महाजनीक सूदिकेँ सीमामे बान्हि देल गेल जे दोबरसँ बेसी कहियो ने हएत, तहिना बैंकक कर्जकेँ किए ने बान्हल जाइए, जे ग्रामीण-दशा–माने गामक लोकक जिनगी–आगू मुहेँ नै ससैर पाछुए मुहेँ ढरैक रहल अछि। जैठाम एते महग पढ़ाइ भऽ गेल अछि, लाखक इलाज भऽ गेल अछि, लाखक घर बनि रहल अछि तैठाम की उपाय अछि। हँ एते जरूर हेबा चाही जे जखन सभ अपने छी तखन बीचमे इमान-बेइमान नइ बनए।

जहिना बरसातक मासमे एक दिसका पानिकेँ दोसर दिसका रोकि तेसर दिसक रस्ता पकड़ैत तहिना घिचा-तिरीमे डोमी कक्काक मन असथिर भेलैन। पड़ले-पड़ल पत्नीकेँ शोर पाड़लखिन।

आँगनक ओसारक शीतल पाटीपर बैस दायरानी बिआहक उनटा गिनती करै छेली। फल्लांक करौछ हेरा गेलै, ओकरा तँ कहब जरूरी

अछि। जँ से नहि कहबै तँ अनेरे ओ दसठाम बाजत जे फल्लाँ करौछ रखि लेलक। कोन चीज छी जखन एते खर्च भेबे कएल तखन एकटा करौछे की छी। जिनगी बनबैमे जहिना जिनका जेहेन कठिन मेहनत भेल रहैए तहिना ने तिनकर जिनगियो ठाढ़ होइए। जँ से नहि तँ लाखक जिनगी केना पाँच-दसमे हारि मानत..?

दायरानीक मनमे खुशी एलैन, अपना जँ बौको डाँर लगल तैयो बैहरी दादीकेँ नफे भेलैन। टुटल चँगेरा लेलिऐन आ नवका कीनि कऽ देलिऐन। केना नै दैतिऐन ओ थोड़े बुझलखिन जे हमरा चँगेरामे केरा-आम छोड़ि दोसर चीज जाइबला नै अछि। ओना हमरो तँ काज चलिये गेल, भने पुरना गेल नव आएल। नीके भेल।

पतिक हाक सुनि ओसारेपर सँ काकी तेते जोरसँ बजली जे डोमीकाकाकेँ बुझि पड़लैन जे पत्नी लगेमे छैथ।

तैबीच काकी डोमीकाका लग चलि एली। आबि तँ गेली मुदा मनमे अपने घिरनी नचैत रहैन। एक चालि चलि जहिना घिरनी विश्राम लैत तहिना काकीकेँ सेहो भेलैन। आँखि उठा तकली तँ देखलैन जे ग्रीष्मकालीन घास-पात जकाँ कुम्हलाएल मुँह, जेठुआ गरेक मेघ जकाँ चिन्तासँ लदल आँखि, निरजन वनमे हेराएल बटोही जकाँ पतिकेँ देखि काकीक मन सहैम गेलैन। अपन कर्तव्यक एहसास भेलैन। पियासल-ले जहिना पानि आ तबधल-ले पंखाक हवाक जरूरत होइत तहिना चिन्ताएल मन-ले सेहो मीठ बोलक जरूरत होइए। आँचरसँ ढबढबाएल पतिक दुनू आँखि पोछैत बजली-

“एहेन सकल-सूरत किए बनौने छी?”

सिकीक वाण सदृश पत्नीक बोल डोमी कक्काक हृदयकेँ बेधि देलकैन। छटपटाइत बजला-

“उपाए कथी अछि जे..?”

काकी-

“तखन?”

पत्नीक मुहसँ ‘तखन’ सुनि डोमीकाका बजला- “परदेश जाएब।

दुनू बेटोकेँ नेने जाएब, नहियोँ कमा कऽ देत, मुदा पेट तँ पालत ने। जँ दसो हजार महिना कमाएब तँ एक बरखे नहि, दू बरखे नहि, पाँचो बरखे तँ खेत छोड़ाइए लेब।"

तैपर काकी बजली- "आ तइ बीच?"

काका- "अहाँकेँ जाबे धरि बरदाश हएत ताबे धरि रहब नइ तँ भाएकेँ नैहर समाद पठा देबैन।"

नैहरक नाओं सुनिते काकी बजली-

"अहाँ सभ जखन चलिये जाएब तखन घरमे कोठीए-भरली लऽ कऽ की करब। मसोमातक चुड़ी जकाँ किए ने ओकरो सभकेँ फोड़ि-फाड़ि कऽ फेकिये देबइ।"

पत्नीक बातकेँ डोमीकाका तारि बजला-

"हँसी-ठठा छोड़ू एहेन गरूगर समय केना टपब से विचार दिअ। आखिर अहूँ तँ अर्द्धांगिनीए छी किने?"

पतिक विचार सुनि विचारवान पत्नी जकाँ दायरानी काकी बजली-

"पच्चीस-तीस हजार रुपैए कट्ठाक जमीन अछि। दस-बारह कट्ठा बेच लेब, भरना छुटि जाएत। बुझबै जे तीन बीघा जोतसीम नहि, अढ़ाइए बीघा अछि।"

अखाढ़क पहिल बर्खाक पहिल बून पड़लासँ जेहेन माटिक सुगन्ध निकलैत ओहने सुगन्ध डोमीकाकाकेँ पत्नीक विचारमे लगलैन। मुस्की दैत आँखि-पर-आँखि गड़ा धन्यवाद देलखिन।



शब्द संख्या: 922

जन्मतिथि

तीस बर्ख नोकरी केला-उत्तर रविकान्त आइ.जी. पदसँ सेवा निवृत्ति भेला। जखन कि रविशंकर आइ.जी.सँ आगू बढ़ि डी.जी.पी.क पदभार सम्हारलैन। साल भरि ऐ पदपर रहता, ओते नोकरीक अवधि बँचल छैन। रविशंकरकेँ डी.जी.पी.क पदभार सम्हारला जखन तीन दिन भऽ गेल तखन रविकान्तकेँ मोन पड़लैन जे मीतकेँ बधाइ कहाँ देलिऐन। कारणो भेल जे पनरह दिन पहिनहिसँ जे कार्यभार दिअ लगलैन ओ नोकरीक अन्तिम दिन धरि नै फरिछौट भऽ सकलैन। समैयक अभावमे रविकान्तकेँ मनमे एलैन जे मोबाइलेसँ बधाइ दऽ दिऐन। मुदा एक्के काजक तँ भिन्न-भिन्न जुइत होइए। जुइतिक अनुकूले ने काजो अनुकूल हएत, तँए मोबाइलसँ बधाइ देब उचित नै बुझि पड़लैन। ओना तत्काल जानकारीक रूपमे वधाइ दैत समय लेल जा सकै छल। मुदा से नै भेलैन। चाहक कप टेबुलपर रखि दहिना बाँहि उठबैत पत्नीकेँ कहलखिन-

“की ऐ बाँहिक शक्ति क्षीण भऽ गेल जे काज नै कऽ सकैए। मुदा..!”

रश्मि अपना धुनिमे छेली। ओना एक्के टेबुलपर बैस चाहो पीबै छेली आ मेद-मेदीन जकाँ मुँहमिलानीमे गपो-सप्प करै छेली आ अपने धुनिमे मनो वौआइ छेलैन। एकठाम बैस चाह पिबतो मन दुनूक दू-दिसिया छेलैन। रश्मिक मनमे रविशंकरक पत्नी ‘किरण’ नचैत रहैन। जिनगी भरि सखी-बहीनपा जकाँ रहलौं मुदा आइ ओ रानीसँ महरानी बनि गेली आ..? की हम ओइ बटोहिनी सदृश तँ ने भऽ गेलौं जेकरा सभ किछु छीनि घरसँ निकालि देल जाइ छइ?

जहिना कोनो नीनभेर बच्चा माइक उठौलापर चहाइत उठैत बेसुधिमे बजैत तहिना पतिक प्रश्नक उत्तर रश्मि देलखिन-

“ऐ बाँहिक शक्ति ओतबेकाल रहै छै जेतेकाल शान चढ़ाएल

हथियार ओकरा हाथमे रहै छइ। नहि तँ प्राणशक्ति निकलला उत्तर शरीर जहिना माटि बनि जाइ छै तहिना बनि कऽ रहि जाइए। हाथसँ हथियार हटिते जिनगी हहरए लगै छइ।”

तैबीच चाहक कप उठा चुस्की लैत रविकान्त बजला-

“बच्चेसँ दुनू गोरे संगे रहलौं। खेनाइ-पीनाइ, खेलनाइ-धुपनाइ, घुमनाइ-फीरनाइ सभ संगे रहल। कहाँ कहियो मनमे उठल जे दुनू मीतमे कोनो दूरी अछि। अपनाकेँ के कहए जे घरो-परिवार आ सरो-समाज कहाँ कहियो बुझलैन दुनूमे कनियोँ अन्तर छै, मुदा आइ..?”

“मुदा आइ की?”

“यएह जे आइ बहुत दूरी बुझि पड़ि रहल अछि। बुझि पड़ैए जेना अकास-पतालक अन्तर भऽ गेल अछि। कोन मुँह लऽ कऽ आगू जाएब, से किछु फुरिये ने रहल अछि।”

“तखन?”

“सएह ने मन असथिर नै भऽ रहल अछि। जिनगी भरिक संगीकेँ ऐहेन शुभ अवसरपर केना नै बधाइ दिऐन। मुदा एते दिन बरबैरक विचार छल आब ओ थोड़े रहत। कहाँ ओ सिंह दुआरपर विराजमान होइबला आ कहाँ हम देशक अदना एकटा नागरिक। की अपनाकेँ ओइ कुरसीक बुझी जइसँ हेट भेलौं? सीकपर रखल वा तिजोरीमे रखल वस्तु ओतबेकाल ने जेतेकाल ओ ओतए रहैए। रविशंकर आइ ओतए छैथ जेतए हमरा सन-सन जिनगी जे अन्तिम छोड़पर पहुँचनिहार हुनकर हुकुमदारी करत। कोन नजैरिये ओ देखै छल आ आइ कोन नजैरिये देखता।”

रविकान्तक अन्तर-मनकेँ रश्मि आँकि रहल छेली। मुदा जेते आँकए चाहै छेली तइसँ बेसी घबाएल माछ जकाँ मनक सड़ैन बढ़ल जाइत रहैन। की आँखिक सोझक देखल झूठ भऽ जाएत? केना नै भऽ सकैए। दू गोरेक बीचक बात तँ ओतबेकाल धरि सत्य रहैए जेतेकाल धरि दुनू मानैए। काज थोड़े छी जे गरैज कऽ कहत जे तोरा पलटने हम थोड़े पलटबौ..!

असथिर होइते रश्मिक मनमे विचार जगलैन। दुखक दबाइ नोर छी। पैघ-सँ-पैघ दुख लोक नोरक धारमे बहा वैतरणी पार करैए। बजली-

“जहिना अहाँक मनमे उठि रहल अछि तहिना हमरो मनमे रंग-बिरंगक बात उठि रहल अछि। कहाँ रविशंकरक पत्नी किरण राजरानी आ कहाँ हम..? कहाँ राधाक संग कृष्ण आ कहाँ..! काल्हि धरि दुनू गोरे एकठाम बैस एक थारीमे खेबो करै छेलौं आ एक्के गिलासमे पानियोँ पीबै छेलौं मुदा आइ सम्भव अछि? आखिर किए?”

हवाक तेज झोंकमे जहिना डारि-डारिक पात डोलि-डोलि एक-दोसरमे सटबो करैत आ हटबो करैत तहिना पत्नीक डोलैत विचार सुनि रविकान्तो डोलए लगला। एक तँ पहिनेसँ रविकान्तक मन डोलि रहल छेलैन तैपर पत्नीक विचार आरो डोला देलकैन। अनभुआर जगह पहुँचलापर जहिना सभ हेरा जाइत तहिना रविकान्त हेरा गेला। औनाइत बजला-

“कानसँ सुनितो आ आँखिसँ देखितो किछु बुझि नै पाबि रहल छी जे की नीक की अधला! की करी की नै करी से किछु ने फूरि रहल अछि। साठि बर्खक संगीकेँ एते दूर केना बुझब? मुदा लगो केना बुझब? साठि बर्खक पथिक-संगी जँ आब दू दिशामे चली तखन केते दूरी हएत, साठि बर्खक जिनगियो तँ छोट नै भेल।”

बिच्चेमे रश्मि टपैक पड़ली-

“जिनगी तँ एक दिन, एक क्षण वा एक घटनामे बदैल जाइए आ साठि-बर्ख की धो-धो चाटब!”

“तखन?”

“सएह नै बुझि रहल छी। एतेटा जिनगी एक संग बितेलौं मुदा आइ जइ जिनगीमे पहुँच गेल छी तइ जिनगीक सम्बन्धमे किछु विचार कहियो नहि केलौं।”

जहिना आन गामक चौबट्टी, तीनबट्टीपर पहुँचते भक्क लगि जाइत, जइसँ पूब-पच्छिमक दिशे बदैल जाइत तहिना पत्नीक बात सुनि रविकान्तकेँ भेलैन। मुदा एहनो तँ होइते अछि जे ओहने चौबट्टी आकि तीनबट्टीपर भक्क खुजितो अछि। ओना रविकान्तक भक्क तेना भऽ कऽ तँ नहि खुजलैन मुदा एक प्रश्न मनमे जरूर उठलैन- बच्चासँ सियान भेलौं,

सियानसँ चेतन भेलौं, चेतनसँ बुढ़ाड़ीक प्रमाणपत्र भेट गेल। हरबाह थोड़े छी जे अधमरुओ अवस्थामे बुढ़ाड़ीक प्रमाण नइ भेटत। मुदा मन किए धकधका रहल अछि? जिनगीक चारिम अवस्था वानप्रस्थक होइ छै, संयासीक होइ छै जे दिन-राति दौगैत दुनियाँक हाल-चाल जानए चाहैए। से कहाँ मन मानि कऽ बुझि रहल अछि..?

पतिकेँ गम्भीर अवस्थामे देखि रश्मि बजली-

"अहाँक मनमे जे नाचि रहल अछि वएह हमरो मनमे नाचि रहल अछि। मुदा ईहो बात तँ झूठ नहियेँ छी जे जिनगीक संग बाटो बनै छइ आ बाटे संग बटोहियो बाट बनबै छइ?"

तैपर रविकान्त बजला-

"की बाट?"

पतिक प्रश्न सुनि रश्मि विह्वल भऽ गेली। मनमे उठलैन- हेराइत संगीकेँ बाट देखाएब बहुत पैघ काज छी। मुदा लगले मनमे उठि गेलैन जे तखन अपने किए एते वौआइ छी? कम-सँ-कम चाह पीबैकाल बैसारियोमे ऐ बातक विचार करैत अबितौं तँ औझुका जकाँ नहि वौऐतौं, जहिना जोतल आ बिनु जोतल खेतमे चललासँ पहिने धड़ियाइ छै, धड़ियेला पछाइत पतियाइ छै, पतिएला पछाइत पेरियाइत पेरा बनै छै आ वएह एकपेरिया बहुपेरिया बनैत चलै छइ...।

रश्मि बजली-

"अहाँ कौलेज छोड़ला उत्तर जिम्मा उठा सरकारी बाट पकैड़ साठि बर्ख पूरा लेलौं। ने कहियो जमीन दिस तकैक जरूरत महसूस भेल आ ने तकलौं। मुदा आइ तँ ओतइ उतैर आबि गेल छी जेकर रस्ता अखन धरिक रस्तासँ भिन्न अछि।"

पत्नीक विचार सुनि रविकान्त मुड़ी डोलबैत आँखि उठा कखनो पत्नीक आँखिपर रखैथ तँ कखनो धरती दिस ताकए लगैथ। आगिपर चढ़ल कोनो बरतनक पानि जहिना निच्चाँसँ ताउ पाबि ऊपर उठि उधियाइक परियास करैत तहिना रविकान्तक वैचारिक मन उधियाइक परियास करए लगलैन। मुदा जहिना पिजराक बाघ पिजरेमे गुम्हैर कऽ रहि

जाइत, तहिना आइ धरिक जे मन रूपी बाघ एहेन शरीर रूपी पिजरामे फँसि गेल छेलैन जे जेते आगू मुहेँ डेग उठबैक कोशिश करैथ ओते समुद्री वादल जकाँ आस्ते-आस्ते ढील होइत रहैन। आगूक झलफलाइत बाट देखि रविकान्त बजला-

"विचारणीय बात जरूर अछि, मुदा बिनु बुझल जिनगीक संग तँ अहुँक जिनगी चलल कहाँ केतौ बेवधान भेल। आइ जे कहलौं ओ तँ ओहू दिन कहि सकै छेलौं, जइ दिनसँ बहुत आगू धरि बढ़ि गेलौं। से तँ रोकि कऽ मोड़ि सकै छेलौं। मुदा आइ तँ जानल-बिनु जानल दुनू संगे वौआए चाहै छी!"

पतिक बात सुनि रश्मि मने-मन विचार करए लगली जे दुनियाँमे एहनो लोकक कमी नै अछि जेकरा जरूरत भरि लूरि-बुधि नै छै, मुदा ईहो तँ झूठ नहि, जे जेकरा छेबो करै ओइमे बेसी ओहने अछि जे या तँ उनटा वाण चलबैए वा नहियेँ चलबैए। तखन सुनटा वाण केना आगू बढ़त आ जँ बढ़बे करत तँ केते आगू बढ़त जेकरा आगू दुश्मन जकाँ चौबगली उनटा वाण घेरने अछि? मुदा कोन उपाय अछि, जखन शुद्ध तेल-मोबिल देल मजगूत इंजनो चढ़ाइपर दम तोड़ए लगैए आ टुटलो चक्का रहैत बिनु तेलो-मोबिलक गाड़ी भट्ठा गरे दौड़ैत रहैए जइमे बिनु ब्रेकक गाड़ी जकाँ केतेकेँ जानो जाइए आ केतेकेँ मुहोँ-कान फुटै छइ? रश्मिक मन कहलकैन- डेग आगू उठाएब जरूर कठिन अछि। मुदा लगले मनमे फेर उठलैन- जइ बाटकेँ पकैड़ आइ धरि चललौं जँ ओइ बाटकेँ छोड़ि दोसर बाट पकैड़ नव बटोही जकाँ विदा होइ, ई तँ सम्भव अछि। जहिना चिन्हार जगहक चोर पड़ा दूर देश जा अपन क्रिया-कलाप बदैल लइए आ नव-मनुक्खक जिनगी बना जीबए लगैए...।

वाण लगल पंछी जकाँ पतिकेँ देखि रश्मि अपन अनुभव सान्त्वना भरल शब्दमे बजली- "जहिना अहाँक जिनगी तहिना ने हमरो बनि गेल अछि। जएह बुढ़ापा अहाँक सएह ने हमरो अछि। मुदा एकठाम तँ दुनू गोरे एक छी। एक्के दबाइक जरूरत दुनू गोरेकेँ अछि, तँए विचार दइ छी जे आब ने ओ रूतबा रहल आ ने ओकाइत, तखन जानि कऽ जहरो-माहूर खा लेब सेहो नीक नहि। मनकेँ थीर करू।"

रश्मिकेँ आगूक बात पेटेमे घुरियाइत रहैन तइ बिच्चेमे रविकान्त बजला- "बेसी दुख तँ नै बुझि पड़ैए मुदा साठि बर्खक प्रोढा अवस्था धरि हमरा सबहक नजैर नइ गेल! जखन कि सरकारक पैघ काजक जिम्मामे सभ दिन रहलौं। समयानुसार काज करितो अपन जिनगी तँ सुरक्षित रखितौं। साठि बर्खक पछाइतो तँ चालीस बर्ख जीबैक छल। जखन कि ईहो तँ जनिते रही जे पछाइत दरमाहा टुटि जाएत आ जिनगीक आवश्यकता बढ़ैत जाएत।"

पतिक विचारकेँ गहराइत समुद्र दिस जाइत देखि मुँहक दसो वाण साधि रश्मि छोड़लैन- "अनेरे मनमे जुड़शीतलक पोखरिक पानि जकाँ घोर-मट्ठा करै छी। ओना, घोरे मट्ठा ने घीओ निकालैए आ अन्है सेहो निकालैए। संयासी सभ केना फटलाहा कम्मल सबहक मोटरी बान्हि कन्हामे लटका लइए आ सौंसे दुनियाँ घुमैए। अहाँकेँ तँ सहजे चरि-चकिया गाड़ी चलबैक लूरियो अछि।"

पत्नीक विचार सुनि रविकान्त ओझरा गेला जे एक दिस संयासीक बात बाजि कहि रहल छैथ जे जहिना कानूनी अधिकारसँ जीवन-रक्षा होइए तहिना ने संन्यास अवस्था–माने वानप्रस्थ अवस्था– पवित्र मनुक्खक नैतिक अधिकार सेहो छी। आ दोसर दिस चरिचकिया गाड़ीक चर्च सेहो करै छैथ जे भरिसक अपनो लगा कऽ कहै छैथ..!

संगी देखि रविकान्त दहलाए लगला। जहिना कोसी-कमलाक बाढ़िमे भँसैत घरपर बैस घरवारी बंशियो खेलाइत आ कमला-कोसीक गीतो गबैत तहिना विह्वल भऽ रविकान्त बजला-

"हँसी-चौल छोड़ू। आब कोनो बाल-बोध नै छी। आबो जँ सामाजिक जीवन नै बनाएब तँ देखिते छिऐ जे मनुक्ख एकदिस चान छुबैए आ दोसर दिस सीकीक वाणक जगह बम-बारूद लऽ मनुक्खक बीच केहेन खेल दुनियाँमे खेला रहल अछि। खाएर, ओते सोचैक समय आब नइ रहल। जेकर तिल खेलिऐ ओकरा बहि देलिऐ। अपन चालीस बर्खक जिनगी अछि, ने हमर कियो मालिक आ ने हम केकरो मालिक छिऐ। भगवान रामकेँ जहिना अपन वानप्रस्थ जीवनमे अनेको ऋृषि-मुनि, योगी-संयासी सभसँ भेँट भेलैन आ अपनो जा-जा भेँट केलखिन, तहिना ने

अपनो दोसराक ऐठाम जाइ आ ओहो अपना ऐठाम आबए। मुदा विचारणीय प्रश्न ई अछि जे रामकेँ के सभ भेँट करए एलैन आ किनका-किनका ओतए भेँट करए ओ स्वयं गेला। ई प्रश्न मनमे अबिते गाछसँ खसल पघिलल कटहर जकाँ रविकान्तक मन छँहोछित्त भऽ गेलैन। छँहोछित्त होइते जहिना खोंइचा-कमरी एक दिस होइत कोह उड़ि कऽ कौआ आगू पहुँच जाइत, आँठी छड़ैप-छड़ैप बोन-झाड़मे बच्चा दइ दुआरे जान बँचबैत आ नेरहा उत्तरे-दच्छिने सिरहाना दऽ पड़ल-पड़ल सोचए लगैत जे जेते पकबह तेते सक्कत हेबह तँए समय रहैत भक्ष्य बना लएह नहि तँ दुइर भऽ जेबह, तहिना रविकान्त सोचैत-सौचैत जेना अलिसाए लगला तहिना हाफी-पर-हाफी हुअ लगलैन।

पतिकेँ हाफी होइत देखि रश्मिक मनमे उठलैन जे हाफी तँ निनियाँ देवीक पहिल सिंह-दुआरिक घन्टी छी। भने नीक हेतैन जे सुति रहता, नहि तँ ऐ उमेरमे जँ नीन उड़लैन तँ अनेरे सालो-महिनेमे बदैल जेतैन। फटकैत रश्मि बजली- “जेते माथ धुनैक हुअए वा देह धुनैक हुअए अपन धुनू। हमर जे काज अछि तइमे हम बिथूत नै हुअ देब। हमरा लिये तँ अहीं ने सभ किछु छी।”

तीन साए घरक बस्ती बसन्तपुर। छोट-नमहर चालीसटा किसान परिवार गाममे शेष सभ खेत-बोनिहारसँ लऽ कऽ आनो-आनो रोजगार कऽ जीवन-बसर करैबला। अनेको जाति गाममे, जइमे मझोलका किसान बेसी। ओकरो सबहक दशा-दिशा भिन्न-भिन्न। तेकर अनेको कारणमे दूटा प्रमुख। जइसँ विधि-बेवहारमे सेहो अन्तर। किछु जातिक लोक अपने हाथे हरो जोइत लैत आ खेतक काजो करैत, जइसँ आमदनीक बँचतो होइत आ किछु एहनो जे अपने हाथसँ काज-उदम नै करैत तँए बँचत कम। कम बँचत भेने परिवार दिनानुदिन सिकुड़ैत गेल। ओना गामक बुनाबट सेहो भिन्न अछि। एक तँ ओहुना दू गामक बुनाबट एक रंग नहि, तेकर अनेको कारणमे प्रमुख अछि, खेतक बुनाबट, जनसंख्या आ जाति इत्यादि। बसन्तपुर गामक बुनाबट आरो भिन्न। ऊँचगर जमीन बेसी आ निचरस कम जइसँ गाछी-बिरछी सेहो बेसी अछि आ घर-घराड़ी, रस्ता-पेरा सेहो ऐल-फइल अछि।

बसन्तपुरमे दूटा नमहर किसान अछि। नमहर किसान परिवार रहने गामोक आ अगल-बगलक आनो गामक लोक जेठरैयती परिवारो बुझैत आ जेठरैयत कहबो करैए। राजक जमीन्दार तँ नहि, मुदा गमैया जमीन्दार सेहो किछु गोरे बुझैत। तेकर कारण जे दुनूक महाजनियोँ चलैत आ गामक झड़-झंझटक पनचैतियो करैत। कनी-मनी अनचितो काजकेँ गामक लोक अनठा दइत। तइमे राधाकान्त आ कुसुमलालक जमीनक बुनाबट सेहो भिन्न। चौबगली टोल सभ बसल अछि आ बीचक जे तीस-पैंतीस बीघाक प्लॉट छै ओ मध्यम गहींर अछि। जइसँ अधिक बर्खा भेने नाला होइत पानिक निकासी कऽ लैत आ कम भेने चौबगलीक ओहासीसँ रौदियाहो समयमे जमीन उपजिये जाइत। ओना दुनू गोरे बोरिंग सेहो गड़ौने छैथ तँए रौदियाहो समय भेने खेतक लाभ उठाइए लइ छैथ। पच्चीस-तीस बीघाक बीचक दुनू किसान छैथ। दुआरपर बखारियो आ पोखरिक महारपर दू-सलिया-तीन-सलिया नारोक टाल रहिते छैन।

राघाकान्तो आ कुसुमलालोक परिवारक बीच तीन पुश्तसँ ऊपरेक दोस्ती रहल छैन। ओना दुनू दू जातिक छैथ, मुदा अपेक्षा-भाव एहेन छैन जे चालि-ढालिसँ अनठिया कियो नहि ई बुझि पबैत जे दुनू दू जातिक छैथ। किएक तँ कोनो काज-उदेममे एक-दोसराक बाले-बच्चे एक-दोसरठाम अबैत-जाइत रहल छैथ। तेतबे नहि, कुटुम-परिवार जकाँ दुनू परिवारक बीच कपड़ा-लत्ताक वर-विदाइक चलैन सेहो अछि। मुदा तैयो सराध-बिआह आदि पारिवारिक काजमे दुनूक दू जातिक परिचय भइये जाइ छैन।

नमहर भुमकम होइसँ पहिने जहिना नहियोँ होइबला बच्चा सबहक जन्म भऽ जाइ छै जइसँ दोस्तियारेक सम्भावना अनेरो बढ़ि जाइ छै मुदा से नहि, राधाकान्त आ कुसुमलाल–दुनू गोरे–केँ एक्के दिन बेटा भेलैन। ओना, कियो-केकरो ऐठाम जिगेसा करए नै गेला तेकर कारण भेल जे अपने-अपन घर ओझरा गेलैन। ओना, पमरिया-हिजरनी महिना दिन तक दुनू परिवारमे दौग-बड़हा करैत रहल। रवि दिन जन्म भेने दाइयो-माइ छठिहारे दिन एकक नाओं 'रविकान्त' आ दोसराक नाओं 'रविशंकर' रखि देलखिन। अनेरे किए फूलक बोनमे आकि साँप-कीड़ाक बोनमे टहैलतैथ।

बोन तँ बोने छी, दुनूक छी। तँए हरहर-खटखटसँ नीक दिनेकेँ पकैड़ लेलैन। ओना एकटा आरो केलैन जे दुनूमे सँ कियो जातिक पदवी नै लगौलैन।

सुभ्यस्त परिवार रहने तीन बर्खक पछाइते स्कूल जाइ-जोकर दुनू भऽ गेल मुदा चारिम बर्खमे दुनूक नाओं गामेक स्कूलमे लिखौल गेल। ओना जेहने सोझमतिया राधाकान्त तेहने कुसुमलालो, मुदा नाओं लिखबै दिन रविकान्तक पिता गेलखिन आ राधाकान्त अपने नै जा भायकेँ पठौलखिन। पित्ती एक बर्ख घटा कऽ रविशंकरक नाओं लिखा देलखिन। ओना राधाकान्तकेँ स्कूलपर जेबाक मनो नहियेँ रहैन। किएक तँ स्कूल सबहक जे किरदानी भऽ गेल ओ देखै-जोग नै अछि। शिक्षक सभ विद्यार्थीकेँ नहियेँ पढ़ैले प्रेरित करै छैथ आ नहियेँ पढ़ैक जिज्ञासा जगा पबै छथिन, छड़ी हाथे पढ़बए चाहै छथिन।

एक तँ एकरंगाह परिवार तहूमे दोस्ती। दुनू गोरे तेहेन चन्सगर जे गामेक स्कूलसँ पटका-पटकी करैत निकलल। पटका-पटकी ई जे एक साल रविकान्त फस्ट करैत तँ दोसर साल रविशंकर, ओना हाइ स्कूलमे थोड़े गजपट भेलै, स्कूलक शिक्षक आँकि लेलैन जे केतबो ऊपरा-ऊपरी छै तैयो सोचन-शक्तिमे दुनूक बीच अन्तर किछु जरूर छइ। कौलेज तँ बिना माए-बापक होइए, केकरा के देखत। मुदा ऑनर्सक संग दुनू गोरे प्रथम श्रेणीमे निकलल।

आइ.पी.एस. कऽ दुनू गोरेक ट्रेनिंग आ ज्वानिंग सेहो भेल। दोस्तीमे बढ़ोतरी होइते गेल।



शब्द संख्या: 2370

इमानदार घूसखोर

चुनमुन बाबूकेँ सभ जनैत–चाहे ओ आम आदमी होथि वा कचहरीक वकील, मुंशी, किरानी, चाहे इनटेलिजेन्स विभागक अफसर होथि वा प्रशासनिक पदाधिकारी–जे ओहन घूसखोर जिला भरिमे कियो नै छैथ मुदा ईहो सभ जनिते छैथ जे चुनमुन बाबू जिनगीमे कहियो अपन इमान नै डिगौलैन।

जिला सत्र न्यायालयक प्रथम श्रेणीक जज चुनमुन बाबू छैथ। ओना असल नाओं 'सुरेन्द्र प्रसाद' छिऐन मुदा दादीक पहिल पोता रहने उपहार देल नाओं 'चुनमुन' छिऐन जे पछाइत बाबू जोड़ा गेलैन। उर्फ कए कऽ अपनो चुनमुन बाबू लिखते छैथ जे नेमप्लेटमे सेहो छैन। ओना बहुतो लोक प्रेमचन्द आ दिनकरजी सन भेला जिनकर असली नाओंसँ बेसी लोक उपनामेकेँ जनै छैन।

बच्चेसँ चुनमुन बाबू इमानदारीक निर्वहन करैत आएल छैथ जेकर फलाफल सेहो जीवितेमे भेट रहल छैन। पढ़ै-लिखैमे एते इमानदार रहला जे कहियो मौलिक रचना छोड़ि नोट-फोंटक सहारा नइ लेलैन जइसँ सभ दिन नीक रिजल्ट होइत रहलैन। ओना सुभ्यस्त परिवार रहने कहियो अर्थक अभाव सेहो नहियेँ भेलैन। मुदा अपनो पढ़ैमे एते इमानदारी रखबे केलाह जे शिक्षकगणसँ परिवारजनक नजैरमे रहला। एम.ए; एल.एल.बी. कए प्रथम श्रेणीक जिला सत्र न्यायाधीश बनला।

चारि भाँइक बीच साए बीघासँ ऊपरे जमीन छैन जइमे तीन भाँइ नोकरी करै छैथ आ एक भाँइ देबेन्द्र प्रसाद गिरहस्ती करै छैथ। गिरहस्तीक अर्थ खाली खेतीए करब नहि, बल्कि परिवारकेँ संचालित करब सेहो होइत जे सुरेन्द्र प्रसादमे रहैन। नोकरिहरो भाँइ सभकेँ नै बुझि पड़ैन जे खनदानी परिवारमे कनियोँ केतौ घून-घान आकि दिवार-गराड़ लगल अछि। ओना, परिवारक एहेन बनाबटमे चुनमुने बाबूक विचार काज केलकैन। वएह

कहलखिन जे जखन तीन भाँइ नोकरी करै छी तखन खेत आ परिवार देबेन्द्रेक भेलैन, जइ दिन हमसभ रिटायर भेलापर गाम आएब तइ दिन ऐगला विचार करब। मनमे ईहो रहैन जे जखने हम सभ खेत बाँटि लेब तखने ढेर तरहक बिहंगरा परिवारमे उठत। एक तँ ओहिना जमीन जाल छी तैपर भैयारीक तँ आरो महाजाल। जे सम्पैत आइ धरि मान-प्रतिष्ठा बनल रहल अछि वएह गाड़ा-घेघ बनि सभटाकेँ धोइ-पोछि एकबट्ट कऽ देत। जखन जिनगीमे माने-प्रतिष्ठा नहि तखन जिनगियो तँ एक्सपाइर डेटक दबाइसँ बेसी किछु नहियेँ होइत।

एक तँ ओहुना समय निर्धारित अछि जे केते उमेरमे बेटाक बिआह आ केते उमेरमे बेटीक बिआह करक चाही, तहूमे देहक लक्षण आगूमे ढाढ़ भइये जाइत अछि। से सुरेन्द्रक पिता गौड़ीनाथ सेहो केलैन। जखन सुरेन्द्र प्रसाद बी.ए.मे पढ़ै छला तखने बिआह कऽ देलखिन। कहैले तँ ईहो अछि जे जखन पढ़ि-लिखि अपना पैरपर ठाढ़ भऽ जाइ तखन बिआह करक चाही, मुदा जैठाम पैरपर ठाढ़ होइक बेवस्थे नइ रहत तैठाम की सभ अविवाहित बनि बबाजीए भऽ जेता। कौलेजक अवस्थामे सुरेन्द्र प्रसाद रहैथ मुदा मिसियो भरि मनमे ई नहि उठलैन जे अखन बिआह अनुचित हएत। साहित्यसँ दिलचस्पी रहबे करैन तहूमे मध्ययुगीन साहित्यसँ बेसी, तँए मनमे चप-चपिये रहैन। पितोक मनमे कहियो दहेजक लोभ नइ उठलैन जे नीक शिक्षा पाबि नीक नोकरी भेटलापर नीक दहेजो भेटै छइ। समान्य गिरहस्त परिवार जकाँ गौड़ीनाथ अपन दायित्व बुझि समैपर काज समेट लेलैन। किएक मनमे उठितैन जे बेटाकेँ पढ़ैमे बाधा उपस्थित हएत, तँए मन खुशीसँ खुशियाइते रहलैन।

एम.ए.क पहिल सत्रमे जखन सुरेन्द्र पढ़ै छला तखन जौंआँ बेटी भेलैन। नैहरेमे पत्नी रहथिन। ओना साले भरिपर दुरागमन भऽ गेल रहैन। जौंआँ बेटी देखि माइक मनमे तँ कनी सोगो पैसलैन मुदा नानीक मनमे तेतेक खुशी रहैन जे सोल्होअना नातिने पाछू बेहाल रहए लगली। खुशीक कारण रहैन जे तेहेन जुग-जमाना भऽ गेल अछि जे अनेरे लोक बेटाक आशा करैए, तइसँ नीक बेटीए। जँ बेटीकेँ नाति नहियेँ देखत तैयो जँ दुनू बेटीक जिनगी-जान रहलै तँ कहियो माएकेँ थोड़े दवाइ-दारू आकि

कपड़ा-लत्ताक दुख हुअ देत। अपनो पहिरन जँ दैत रहतै तैयो सभ दिन हराएले रहत। तहूमे तेहेन कपड़ा सभ बनि रहल अछि जे तीन साल तक नबे रहैए, आ चलत केते दिन तेकर कोनो ठीक छइ। सुइटर बीनैक लूरि सिखा देबै, भरि बाँहिसँ लऽ कऽ अदहा बाँहिंक तेते दैत रहतै जे दस-दसटा साटि कऽ पहिरत। की करतै माघक जाड़।

ओना, सुरेन्द्रक माइक मनमे सेहो खुशीए रहैन जे भगवान अपना कोखिमे बेटी नै देलैन तँ की हेतै पोतीक कन्याँदानक बाट तँ खुजिए गेल। जे नारी एकोटा कन्याँदान नै केलक ओ चाहे जे हुअए मुदा माइक एक सूत्रमे कम जरूर रहत।

जिला सत्र न्यायालयक न्यायाधीश बनि ज्वाइन करए सुरेन्द्र प्रसाद आइ जेता। असीरवाद दैत माइयो आ पितो कहलखिन-

“बौआ, नमहर काजक भार उठबए जा रहल छह, तँए नमहर बनि काज करिहह।”

माता पिताक असीरवाद सुनि सुरेन्द्र किछु नै बजला मुदा मनमे एकटा प्रश्न घुरियाए लगलैन, जे माए बुझि गेलखिन। तोसैत कहलखिन-

“बौआ, सभ दिन एकार बनि पढ़लह-लिखलह मुदा अपन परिवार अपने आगू नीक होइ छै तँए पत्नियोँ आ चारू कनटिरबियोकेँ संगे नेने जाह।”

सोझहेमे पिता सेहो रहथिन तँए सुरेन्द्र किछु बाजए नै चाहैथ मुदा मन गुनगुनाइत रहैन जे माए बुझि गेलखिन। बजली-

“बौआ, अपन बच्चाकेँ अपने देख-रेखमे पढ़ाएब बेसी नीक होइ छै, सेहो हेतह आ आइ-काल्हि देखै छिऐ दूधे लगसँ बच्चाकेँ अपन लगसँ माए-बाप हटा दइ छइ। दोसर हमरा सबहक आशा केते दिन करै छह, तँए जँ अपना सीखल नै रहतह तँ ऐगलाकेँ कथी सिखेबहक। मनमे होइत हेतह जे पिता की कहता मुदा नोकरीक अर्थ तँ ई नइ होइ छै जे गामे छोड़ि देब, परिवारे छोड़ि देब। मौका-मुनासिब अबैत-जाइत रहिहह। बेटा धन छह, तोरा माल-जाल जकाँ थोड़े डोरी बान्हि रखल जाएत। मनमे ई होइत हेतह जे परिवार टुटि जाएत मुदा से भ्रम हेतह।

भदवारि मासमे हिमालयक पानिक मिलान समुद्रसँ भऽ जाइत अछि जे अनदिना माने आन मौसममे कमजोर होइत-होइत सुखि कऽ छुटि जाइत अछि मुदा फेर भदवारिमे की देखै छहक। परिवार एक धार छी जेकर प्रवाह स्वच्छ पवित्र बनि अनवरत सामाजिक दिशामे बहैत रहए यएह ने भेल। छाती सक्कत कए कऽ घरसँ जाह।”

अखन धरि सुरेन्द्र प्रसाद ‘छाती सक्कत’ करबक अर्थ खाली कहाबते धरि बुझै छला मुदा माइक असीरवादक शब्द मनमे औंढ़ मारलकैन। औंढ़ मारिते मनमे उठलैन- छाती सक्कत करब बाता-बातीमे आकि काजमे? विचार सक्कत करब आकि पवित्र विचार सक्कत करब?

पवित्र विचारक संग पवित्र जिनगी सक्कत बना चलब आकि सक्कत मनुक्ख बनब?

समुद्रक पानि जकाँ सुरेन्द्र प्रसाद जेते डुबकुनियाँ मारैथ तेते अथाह दिस डुमल जाइथ। अनासुरती मनमे उठलैन- आएल शुभक लगनमा शुभे हे शुभे...।

माइक शुभ बात सुनि शुभेक्क्षु नजैरसँ दलदलाइत सुरेन्द्र बजला-

“माए, तोहर असीरवाद शिरोधार्य अछि मुदा समस्यो तँ जिनगीक बाधक बनि दानव जकाँ अबैत रहै छै किने।”

ओना सुरेन्द्र खुशीमे दहैल गेल छला जइसँ ऐ विचारपर नजैर गेबे ने केलैन जे जहिना बड़का जंगलक कातमे पहिने झाड़े-झूड़ रहै छै जइमे छोट-छोट जानवर बास करैए तहिना ने मनुक्खोक बोन छै जइमे पहिने छोटका जीव-जन्तु रहै छइ।

चुपचाप भेल पिताक मनमे नचैत रहैन जे जुड़शीतलक अछींजल जकाँ घरसँ निकैल दोसराक सेवामे सुरेन्द्र जा रहल अछि की ओकरा बसौत आकि उजाड़त। मुदा बिनु गहन लगने अनुमाने ने होएत।

जहिना कौलेजक पहिल दिन, सासुरक पहिल भेँट, दोस्तीक पहिल मिलन भेने स्वत: हृदय डगमगाए लगैत तहिना सुरेन्द्रो प्रसादकेँ कार्यालय पहुँचते डगमगाए लगलैन। तैबीच नव-नव संगी सभ भेँट करए आबए लगलैन। संगियो बेसी ओहन नहि जे समतूल हुअए। मुदा सुरेन्द्र अवाक।

सोझहे नमस्कारक उत्तर नमस्कारमे दैत रहला। आइ मात्र हाजरी बनाएब छेलैन तँए काजक भारो बेसी नहियेँ रहैन। संगी सभ कमिते असकरे रहि गेला। मनमे परिवार आ दरमाहा, सोझहा-सोझही संगे उठलैन- दरमाहा तँ सीमित परिवारक स्तरक हिसाबसँ बनै छै, तहूमे जे देश जेहेन रहल ओकर ओइ तरहक बनै छइ। पाँच गोरेक परिवारमे छह गोरे अखने छी। तहूमे चारिटा बेटीए अछि। समाजो तेहेन अछि जे दहेजक सवारी कसबे करत। घरक भाड़ा, बिजली-पानि, इन्कम टेक्स इत्यादि कटिये जाएत तखन हाथमे केते औत? महगी अपना चालिये चलबे करत। तहूमे तेहेन लफड़ल डेग पकैड़ नेने अछि जे मध्यवर्गीय जीवन धारक मोनि जकाँ चकभौंर लऽ रहल अछि..!

सुरेन्द्र प्रसादक मन विषसँ बिसाइन हुअ लगलैन। ओना, काज नै रहने कार्यालय समयसँ पहिने छोड़ब पहिल दिन उचित नै हएत। कुरसीक मुरेड़ापर मुड़ी अँटकौने अकास दिस देखैक कोशिश करैथ मुदा कार्यालयक छत बाधित करैत रहैन।

चारि बजिते कार्यालयसँ निकैल सुरेन्द्र प्रसाद सोझहे डेरा दिस विदा भेला। रंग-बिरंगक टीका-टिप्पणी रस्तामे होइत जे किछु नीको किछु अधलो छल। परदेशमे पति कमाए एला, से खुशी सुनयनाकेँ रहबे करैन। चारू बेटीक बीच सुनयना यक्षिणी जकाँ पतिक आगमनक प्रतिक्षा बेर-बेर नजैर उठा-उठा करैत रहैथ। ओसारपर पतिकेँ पहुँचते सुनयना मुस्की भरल नजैरक तीर छोड़ली।

वौड़ाएल मन सुरेन्द्र प्रसादक, जिनगीक समस्यासँ वौड़ाएल। ओना, कियो खुशियोसँ वौड़ाइत अछि तँ कियो दुखोसँ मुदा सुरेन्द्र वौड़ाएल छला- अपन आगूक जिनगीक समस्यासँ। अपनाकेँ संयमित करैत बेटीक हाथ पकड़ने कोठरी पहुँचला। पत्नी चाह अनलकैन। दुनू गोरे चाह पीबैत गप-सप्प शुरू केलैन। अपन आमदनी देखबैत सुरेन्द्र बजला- "अपन परिवार भेल, आमदनी सत्तैर हजार महिना भेल, तइमे घर भाड़ा आ इन्कम टैक्सक संग अनेको खर्चक सूत्र लगले अछि। घर केना चलत से तँ अपने दुनू गोरे ने विचारब?"

जहिना सुरेन्द्र प्रसाद अपन मोटा पत्नीपर पटकए चाहलैन तहिना

पत्नी भोलीबौलक गेन जकाँ उनटबैत बजली-

“देखू हमर कुल-खनदान एहेन नै रहल जे केकरो अधिकार छीनत। जे काज अहाँक छी ओ अहाँक भेल आ जे हमर छी ओ हमर भेल। छह मासक पछाइत पेटक बच्चाक दुख माइए बुझैत अछि, बाप थोड़े बुझत? आकि कहियो किछु कहबो केलौं?”

दू-हत्थी बौल फेकैत सुरेन्द्र प्रसाद बजला-

“कहलौं तँ बेस बात मुदा पढ़लौं-लिखलौं दुनू गोरे फुट-फुट स्कूलमे, सभ दिन रहलौं फुट-फुट मुदा धिया-पुता तँ सझिया भेल किने, तखन देह छिपौने काज चलत?”

सुनयना अपनाकेँ कमजोर महसूस करैत बजली-

“अहाँक जे विचार अछि से बाजू, जे अनुकूल हएत मानि लेब आ जे नै हएत ओकरा तत्काल रखि लेब।”

गम्भीर चिन्तक जकाँ सुरेन्द्र बजला-

“जेते हमरा दरमाहा भेटत ओ अहाँक हाथमे दऽ देब आ अहाँ अपना विचारे परिवार चलाएब।”

नोकरीकेँ जिनगीक धार आ परिवारकेँ सवारी बुझि सुरेन्द्र प्रसाद नावपर सवार होइत भविस दिस बढ़ला। मनमे उठलैन जे एकबेर पत्नीकेँ पुछि लिऐन जे केना घर चलाएब।

..मुदा एक मनकेँ दोसर मन रोकैत कहलकैन- जखन कुल-खनदानक रक्षक छैथ तखन किछु बाजब उचित नहि, तँए अपना-ले सोचब नीक हएत। चलैत धारमे नावकेँ हवा-बिहाड़ि, पानि-पाथरसँ सामना करैये पड़ै छइ। जखने वेतनक भीतर परिवार चलत तखने एक बान्हल परिवार जकाँ आगू बढ़ब। जखन समाजे अपन रोग अपने अराधि-अराधि कऽ रोगाएल अछि तखन अपन रोग के देखत? मुदा एहनो रोग तँ होइते अछि जेकरा जाधैर दोसर नै बुझैत ताधैर दोसरकेँ कहलो नहियेँ जाइत। कमा कऽ जे परिवारमे आनब ओ पत्नी देखबे करती, आमदपर आमद देखि चसकबे करती, जेते चसकती तेते लोको देखबे करत। देखबो किए ने करत कोनो कि केकरो आँखि सीयल छै जे नै देखत। मुदा बेटा-बेटीक

बिआह-दान–माने पढ़ा-लिखा सक्षम बना जिनगीमे उतरैक अवस्था धरिक काज–जँ नै कऽ लेब तँ कोन मुहेँ समाजमे जीब? नीक हएत जे जहिना होशियार रोगी दबाइए दोकानपर दबाइ खा लइए आ घरपर अनबे ने करैए, तेहने जँ उपाय होइ तँ नीक हएत...।

सुरेन्द्र प्रसादक नजैर काज दिस बढ़लैन। कोन एहेन कोर्ट अछि–माने न्यायालय–जइमे काजक बोझ नै पड़ल अछि? से तँ बोझक-बोझ काज अछिए। आ आनसँ भिन्न अपन पहचानो बनबैक अछिए...।

जेना किछु भेँट गेने उत्साह जगैत तहिना सुरेन्द्र प्रसादक मनक उत्साह जगलैन। कार्यालयक संग डेरोमे काज करब। काज बढ़ौने जँ किछु हथियाइयो लेब तँ ओते अनुचित नहियेँ हएत। जँ से नहि करब तँ परिवार साधारण नहि असाधारण रूपमे ठाढ़ अछि। खेनाइ-पीनाइसँ लऽ कऽ पढ़ौनाइ-लिखौनाइ धरि तँ बेटे जकाँ बेटियोक हएत मुदा पढ़ाइ समाप्त होइते वा होइपर रहिते बिआहक भूत कपारपर चढ़ि जाएत। तँए जाधैर प्रतिकूलकेँ अनुकूल बना नै चलल जाएत ताधैर सड़क परहक गाड़ी जकाँ दुर्घटनाकेँ के रोकत। जहिना ओकाइतसँ भारी ढेंगकेँ बाँसक जोगार लगा उनटा-पुनटा घुसकौल जाइत अछि तहिना उनटबै-पुनटबैक जोगार करैये पड़त, मुदा अनुचित रूपमे कदापि नहि..! हँ, तखन एकटा उपाय अछि जे अपन काज तँ यएह ने जे लोकक झगड़ाकेँ–माने मुकदमाकेँ–निर्णय करब। जेकर नोकरी करै छिऐ ओकर काज अनकासँ बेसी करबै। यएह जिनगीक पहचानो हएत। अनेरे किए एते मुकदमा कोर्टमे पड़ल अछि। महिनामे बीसटा मुकदमाक फैसला करब। जहिना सभकेँ सभ ओझरबै पाछू लगल रहैत अछि तहिना ने कोटो-कचहरी भऽ गेल अछि। ओना काज करैक दिशा सबहक निर्धारित अछि तखन किए ने अपनो अपन बाट पकैड़ तेज गतिये चलब..?

संकल्पित होइत सुरेन्द्र प्रसादक मन ठमकलैन। केकर फैसला करैक अछि, ओकरे ने जे अपन बात अपने नइ बुझि अनेरे ओझराइत आबि गेल अछि आ एकक ओझरीसँ दोसर ओझराएल अछि? जहिना रग्गड़ करैत आबि गेल अछि तहिना हमहूँ दू-चारि रन्दा चला आरो चिक्कन कऽ देबइ! बीसटा केसक फैसला मासक काजक संग डेढ़

लाखक ऊपरी आमदनी सेहो करब अछि। दुनू पार्टीसँ पाइ लेब आ जेकरा पक्षमे फैसला हेतै ओ अपन हएत आ जेकरा विपक्षमे हेतै ओकर पाइ घुमा देबइ। केकरो संग अनुचित नै करब। मुदा लोको तँ शेतानक चरखीए अछि, जे विचारलौं से चलए देत? किए ने चलए देत? चरखीकेँ चरखा बना घुमाएब तखन अनेरे ने सभ सुधैर जाएत। मुदा चरखी चरखा बनत केना?

सुरेन्द्र प्रसादक मन फेर ठमैक गेलैन। थोड़ेकालक पछाइत फुरलैन- जखने काजमे तेजी आनब तखने ने काज मुहथैर लग पहुँचत। मास-दू-मास फोंक जाएत मुदा तेसर मास अबैत-अबैत तँ गर पकैड़िये लेत। जखने केसक बहस हएत आ फैसला करैक स्थितिमे औत, तखने ने ससारैक गर भेटत। तीन-तीन दिनपर तारीख देबै, अनेरे ने मासे दिनमे ठहिया कऽ लिखाइ-फीस जमा करत।

चुनमुन बाबूक दस बर्ख नोकरी पूरि गेलैन। अनढड़न फुलवारीक फूल जकाँ चारू बेटी खिलए लगलैन। तैपर अनढड़न भगवान तीनटा बेटी आ दूटा बेटा आरो देलकैन। मुदा पति-पत्नीक बीच सिनेहमे कमीक पेंपी पोनगए लगलैन।

सुनयनाक मन कनैत रहैन जे भगवान तेते धिया-पुता दऽ देलैन जे के केतए वौआएत तेकर ठीक नहि। तेहेन जुग-जमाना भऽ गेल जे निहत्था बाप-माए बेटीक पार-घाट केना लगौत। अपने कहियो एक पाइ अनुचित नै कमाइ छैथ, की समाज हमरा छोड़ि देत? बिनु दहेजक बिआह बेटी सबहक हएत? केतए-सँ औत?

ओना पत्नीक मलिन चेहरा देखि चुनमुन बाबू परखैक परियास करै छला मुदा लाख समस्याक बीच सुनयना पति लग पत्नीए जकाँ रहै छेली। काजक भार पतिपर छेलैन्हे। बेसी समैयो ने भेटै छेलैन जे बेसी बातो करितैथ।

दोसर साँझ, चाह नेने सुनयना पतिक हाथमे दैत आगूमे ठाढ़ भऽ गेली। जहिना देवालयमे भक्त किछु याचना करए ठाढ़ होइत तहिना। मुदा सुरेन्द्रक मनमे मिसियो भरि प्रतिकुलता नहि एलैन। एक घोंट चाह पीब

सुरेन्द्र बजला- “मन मन्हुआएल देखै छी?”

ढलान पाबि जहिना पानि ढलैक जाइत तहिना ढलकैत सुनयना बजली-

“एक तँ भगवान बेइमान भेला जे केकरो रोटियोपर ने नून आ केकरो बोरे-बोरे नून दऽ दइ छथिन। नअ-नअ टा बाल-बच्चाक परिमार्जन करब नान्हिटा खेल छी।”

सुनयनाक विचार मुहसँ निकलबो नै कएल छेलैन तइ बिच्चेमे सुरेन्द्र बजला-

“खेल-खेल खेलौं।”

‘खेल-खेल खेलौं।’ कहि सुरेन्द्र प्रसाद चुप भऽ अपन आँखि पत्नीक आँखिपर अँटकबए चाहै छला मुदा रोगाएल-सोगाएल-पीड़ाएल सुनयनाक आँखिमे सुखाइत जिनगीक बालुक टीला छोड़ि किछु नहि देखि पड़लैन।



शब्द संख्या: 2267

पटियाबला

जेठ मास, दिनक तीन बजैत। देखैमे रातिसँ बहुत नमहर दिन बनैत मुदा जहिना कायाक संग माया आ रौदक संग छाया चलिते रहैए तहिना नमहर दिनक संग धूपो एते बढ़ि-चढ़ि जाइत अछि जे श्रमशक्तिक दौड़मे मझोलको दिनसँ छोट बनि जाइए। सुरूजक शक्तिवाण एते उग्र रूप पकैड़ लैत अछि जे धरतियो ताबा जकाँ तबैध आगि उगलैपर उताहुल भऽ जाइए। धरती-अकासक बीच लुलुआएल लू एक-ताले बाधमे नाचए लगैए। जेना राम-रावणक बीच वा महाभारतक सतरहम दिन भेल तहिना आ तेहने तीरसँ बेधित सुलेमान बेहोश भेल ओइ चिड़ै जकाँ श्यामसुनरक दरबज्जापर आबि दाबामे साइकिल ओंगठा ओसारक भुइयेँपर चारूनाल चीत खसि पड़ल। खसिते आँखि मूना गेलइ। जहिना बन्न आखि साँस चलैत अधमरूक होइत तहिना सुलेमान बेहोश छल।

श्यामसुनरकेँ बेरूका तीन बजेक चाह पीबैक अभ्यास छैन। बगलक घरक ओसारपर चाह बनबैत रहैथ तँए साइकिलक खड़खड़ाएबसँ नै परेख सकला जे वाण लगल बाझ जकाँ कियो छैथ। साइकिलक बात समान्य तँए समुद्र उपछबसँ नीक जे जइ काजमे हाथ लागल अछि, ओकरा पूरा ली। सएह केलैन। चाह पीबैत श्यामसुनर दरबज्जापर अबिते देखलैन जे ई अधमरू भेल के छिआ? मुँह निहारलैन तँ चिन्हल चेहरा सुलेमानक!

आँखि बन्न, कुहरैत मनबलाक तँ बोलियो अ-स्पष्टे जकाँ भऽ जाइ छै, तँए बाल-बोध वा पशु जकाँ दुख बुझब कठिन भऽ जाइत, तथापि छाती थीर करैत श्यामसुनर टोकलखिन-

"सुलेमान भाय, सुलेमान भाय?"

पानिक तहक आवाज जहिना ऊपर नइ अबैत, मुदा पानिक ऊपरक आवाज कम्पित होइत, लहैरिक अनुकूल तेतए धरि जाइत जेतए ओ पूर्ण थिर नै भऽ जाइत। मुदा कोनो उत्तर अबैसँ पहिनहि श्यामसुनरकेँ

मोन पड़ि गेलैन भिनसुरका आवाज- ‘पटिया लेब पटिया, पटिया लेब पटिया।’

लगले मनकेँ नअ घन्टा उचैट कहलकैन- ‘भरिसक रौदक चोट आ मेहनतक मारिसँ सुलेमान एते बेथा गेल अछि जे आँखि खोलैक साहस नहि भऽ रहल छइ!

तैबीच चिन्हल दरबज्जा आ चिन्हार बोली अकाइन करोट फेरैत अधखिल्लू आँखि उठा सुलेमान बाजल-

“श्याम भाय, केकर मुँह देखि घरसँ निकललौं जे एको पाइक बोहैन नै भेल। उधार-पुधार ऐ उमेरमे खाएब नीक नै बुझै छी, कखन छी कखन नहि, केकरो खा कऽ मरब तँ कोसत। जलखै खा कऽ जे निकललौं, सएह छी। खाली पेटमे पानियोँ भोंकबे करै छै किने। पेटमे बगहा लगैए!”

सुलेमानक बात सुनि श्यामसुनरकेँ भेलैन जे भरिसक एकरे बिलाइ कुदब कहै छइ। भुखाएल बिलाइ जहिना छटपटाइत अपनो बच्चाकेँ कण्ठ चभैले तैयार हुअ लगैत तहिना भरिसक होइत हेतइ! मुदा रोगो तँ असान नहि, एक संग केते तीर लागल छैन। कोनो घुट्ठीमे तँ कोनो बाँहिमे, कोनो छातीमे तँ कोनो माथमे। भूख-पियास, थकान इत्यादिसँ बेधल छैथ! तोसैत श्यामसुनर कहलखिन-

“सुलेमान भाय, आँखि नीक नहाँति खोलू। एक्के कप चाह बनौने छेलौं जे आँइठ भऽ गेल अछि। बाजू पहिने चाह पीब आकि खेनाइ खाएब?”

पाश भरल बातमे आस लगबैत सुलेमान बाजल-

“भाय, ऐ घरकेँ कहियो दोसराक बुझलौं जे कोनो बात बजैमे संकोच हएत। देहमे तेते दर्द भऽ रहल अछि जे कनी पीठपर चढ़ि खुनि दिअ पहिने, तखन बुझल जेतइ।”

साए घरक जुलाहा परिवार गोधनपुरमे। झंझारपुरसँ पूब सुखेत पंचायतक गाम गोधनपुर। जैठाम मरदे-मौगीए मिलि बिछानक कारोबार करैए। गाम-गामसँ मोथी कीनि, अपनेसँ सोनक डोरी बाँटि बिछान बीनि, उत्तरमे अंधरा ठाढ़ी, दच्छिन घनश्यामपुर, पूब घोघरडीहा आ पच्छिममे

मेंहथ-कोठिया-रैमा धरिक बाजार बना कारोबार करैए। ओना जुलाहा खाली गोधनपुरेटा मे नहि आनो-आनो गाममे अछि मुदा बिछानक कारोबार गोधनपुरेटा मे होइत। शहर-बाजरमे जहिना रंग-बिरंगक वस्तु-जात बिकाइत तहिना गामो-समाजक बाजारमे चलैए। जइमे रंग-बिरंगक वस्तु-जातक बिकरी-बट्टा होइए। किछु वस्तुगत अछि आ किछु भावगत।

साइयो परिवार अपन-अपन क्षेत्र बनौने अछि। सभ दिन सभकियो भिनसरे जेर बना-बना निकैल जाइए। ओना कहियोकाल सुलेमानो जेरेमे निकलैत रहए मुदा आइ असगरे निकलल छल। अपनामे सीमाक अतिक्रमण करबो करैत आ नहियोँ करैत। खुल्ला बाजार तँ वएह ने टिकाउ होइत जे बिसवासू वस्तुक बिकरी करए। नइ तँ घटिया माल आ बेसी दाममे वस्तुक बिकरी हएत। मुदा गोधनपुरक पटियाबलामे से नहि, एकरंगाह वस्तु एकरंगाहे दाममे बेचैत।

पीठसँ घुट्ठी धरि जखन श्यामसुनर दस बेर बुलला तखन सुलेमान पड़ले-पड़ल बाजल-

“भाय, आब उतैर जाउ। एह, अरे बाप रे! ओइ जिनगीसँ घुरलौं। मन हल्लुक भेल।”

कहि फुरफुरा कऽ उठि बैसैत बाजल-

“भाय, अचेत जकाँ भऽ गेल छेलौं। आँखि चोन्हिया गेल छेलए। सौंसे अन्हारे बुझि पड़ए लगल छेलए। ई तँ रच्छ रहल जे दरबज्जाक पैछला देबालक ठेकान रहल, नहि तँ केतए वौआ कऽ मरितौं तेकर ठीक नहि।”

श्यामसुनर सुलेमानक बातो सुनैत आ मने-मन विचारबो करैत जे हो-न-हो दरबज्जापर मरि जाइत तँ मुँहदुस्सी चिड़ै जकाँ लोक केना मुँह दुसैत तेकर कोनो ठीक नहि। जैठाम घरपर चिड़ै बैसने घरक सभ किछु चलि जाइत अछि तैठाम आइ हमरा संगे की होइत! मुदा जइ दुर्गतिक दुर्गपर सुलेमान पहुँच गेल छल ओइठाम मनुक्खक मनुक्खपना केहेन होइ, ईहो तँ एक प्रश्न अछि।

सत्तैर-पचहत्तैर बर्खक सुलेमान सभ दिन पचास किलो मीटर

बिछानक बोझ लऽ कऽ टहैल बेचि जीविकोपार्जन करैत अछि, ओहनकेँ की कहल जाए। जे खून-पसीना एकबट्ट कऽ जीब रहल अछि ओकर अन्तिम बोलो कियो परिवारक सुनि पबितै..?

श्यामसुनरक मन ठमैक गेलैन। ठमैकते बजला- "सुलेमान भाय, आब केहेन मन लगैए, किछु खाइ-पीबैक इच्छा होइए?"

मुस्की दैत सुलेमान बाजल- "भाय, आब जीब गेलौं। आब खेबे करब किने। किछु दिन औरो दुनियाँक खेल-बेल देखि लेब।"

जहिना गुड़ घाक टनक जेते बहैसँ पहिने रहैत अछि आ मुँह बनि निकैलते किछु बेसिया जाइत मुदा खिल–मूल–निकलला पछाइत जहिना सुआस पड़ए लगै छै, जइसँ रूप बदैल जाइ छै, पाशा आस लगबए लगै छै, तहिना सुलेमान बाजल- "भाय, सरेलहा भात-रोटी खाइक मन नै होइए।"

"तखन?"

"टटका जँ गहुमक चारिटा रोटी भऽ जाइत तँ मन तिरपित भऽ जइत। ताबे नहा सेहो लेब।"

सुलेमानक बात सुनि श्यामसुनर बजला-

"कल देखल अछि? बाल्टीन-लोटा आनि दइ छी, नीक नहाँति नहा लेब।"

श्यामसुनरक बात सुनि हँसैत सुलेमान बाजल-

"भाय, एना किए बजै छी। पचासो दिन पानि पीने हएब आ केतेको दिन नहेने हएब, तखन कल देखल नै रहत। लोटा-बाल्टीन कथीले आनब, आँगनमे काज हएत। हम सभ तरहक लूरि रखने छी ठाढ़े-ठाढ़ वा बैस कऽ सेहो नहा लइ छी आ जँ सासुर-समधियौर गेलौं तँ लोटो-बाल्टीन लऽ कऽ नहा लेलौं। ओना, भाय की कहूँ लोको सभ अजीब-अजीब अछि। ने माल-जाल जकाँ नाँगैर छै आ ने मनुक्खपना छइ। एक दिन अहिना रौदमे मन तबैध गेल रहए। एक गोरेक दरबज्जापर कल देखलिऐ, साइकिल अड़का नहाइले गेलौं। मन भेल पहिने चारि घोँट पानि पीब ली। तही बीच एकटा झोंटहा आबि झटहा फेकलक जे कल छुबा जाएत!"

सुलेमानक बात सुनि श्यामसुनरक मनमे वाल्मीकि आबि गेलैन। तमसा नदीक तटपर वाण लगल क्रोंच पक्षीपर नजैर गेलैन। मुदा अपनाकेँ सम्हारैत बजला-

“अहूँ सुलेमान भाय कोन खिस्सा भुखाएलमे पसारै छी। झब-दे नहाउ, आँगनमे ताबे रोटी बनबबै छी।”

सुलेमान कल दिस आ श्यामसुनर आँगन दिस बढ़ला। जहिना भोजनक पूर्व स्नानसँ खुशी होइत तहिना खुशी होइत सुलेमान कल दिस बढ़ला। मुदा श्यामसुनरक मनमे प्रश्न-पर-प्रश्न उठए लगलैन। पहिल प्रश्न उठलैन जे मृत्यु-सज्जापर पड़ल यात्रीकेँ वा फाँसीपर चढ़ैत यात्रीकेँ पुछि भोजन देल जाइत अछि। अपना मुहेँ सुलेमान कहलक जे गहुमक रोटी खाएब। बिनु मेजनक गहुमक रोटी ओहने होइत जेहेन डम्हाएल मालदह आम। जँ सोझहे रोटी कहैत तँ मरूआ रोटीक मेजन अचार, पिआजु, नून-मिरचाय, तेल सेहो होइत, मुदा टटका गहुमक रोटी केहेन हएत? सभकेँ अपन-अपन प्रेमी होइ छइ। जँ से नइ होइ छै तँ जुड़शीतलमे अरबा चाउरक बसिया भात-ले पहिने लोक तरूआ-भुजुआ किए बना लइए? मुदा तँए कि मोटका चाउरक बसिया भातक प्रेमी नून-पिआजु-अँचार नै हेतइ। मुदा जेते जल्दिबाजीक जरूरत अछि–जल्दिवाजी ई जे भुखाएल पेट, स्नानक पछाइत दोसर रूप पकड़ैत–तइमे रसदार तरकारी बनाएब सम्भव नहि, तँए दूटा घेरा पका चटनी आ रोटीसँ काज चलि सकैए। सएह केलैन।

स्नान कएल नोतहारी जकाँ दरबज्जापर अबिते सुलेमानक भुखाएल मन प्रेमी भोजनक बाट ताकए लगल। आगूमे थारी देखिते सुलेमानक मन सौनक सुहावन जकाँ हरैष उठल। रोटीक पहिल टुक चटनीक संग मुँहमे अबिते दँतिया कऽ दाँत पकैड़ जीह रस चूसए लगल। रस पबिते बिहुसैत सुलेमान बाजल- “भाय, दुनियाँमे केतौ किछु ने छइ। छै सबटा अपना मनमे। जाबे आँखि तकै छी ताबे बड़ बढ़ियाँ, आँखि मुनिते दुनियाँ धिया-पुताक खेल जकाँ उसैर जाइ छइ। अपने मुइने सृष्टिक लोप भऽ जाइ छइ।”

सुलेमानक गम्भीर विचार सुनि श्यामसुनरक मनमे उठलैन जे

भोजैत जँ भोजहैरिक रसगर बात सुनै छै तँ ओ आरो बेसी आनन्दित होइ छइ। मुदा अपन बात तँ बिनु प्रश्न पुछने नै हएत। द्वैतमे दुनियाँ हेराएल छइ। बाढ़ि आएल धार जकाँ केतए-सँ-केतए भँसिया जाएत तेकर ठेकान रहत...। श्यामसुनर बजला- “सुलेमान भाय, ऐ उमेरमे एते भारी काज किए करै छी?”

श्यामसुनरक प्रश्न सुनि सुलेमान विह्वल भऽ गेल। जिनगीक हारल सिपाही जकाँ तरसैत बाजल- “भाय, जखन अहाँ घरक बात पुछिये देलौं तखन किए ने सभ बात कहिये दी।”

सुलेमानक बात सुनि श्यामसुनर बुझि गेला जे बरियातीक भोज हुअ चाहैत अछि, से नहि तँ चरिया दिऐन- “सुलेमान भाय, कहने छेलौं जे गरम-गरम रोटी खाएब सराएल नै खाएब आ अपने गपक पाछू सरबै छी?”

श्यामसुनरक बात सुनि हाँइ-हाँइ दूटा रोटी आ अदहा चटनी खा एक घोंट पानि पीब सुलेमान बाजल-

“भाय, माए-बापक बड़ दुलारू बेटा छेलिऐ। खाइ-पीबैक कोनो दुख-तकलीफ परिवारमे नै रहए। कपड़ाक कारोबार छल। चरखा चलबैसँ लऽ कऽ खादी भंडारसँ हाट धरिक कारोबार छल।”

श्यामसुनरक मनमे उठलैन- मोबाइल, टी.बी, कम्प्यूटर, कपड़ा, जूतासँ घर भरल रहै छै मुदा सबुरक केतौ ठेकान नहि। भरि पेट अन्न नहि, फटलो वस्त्र नहि, मुदा छुच्छहो घरमे सबुर केना फड़ि जाइ छै! सुलेमानक पारिवारिक जिनगीक ललिचगर गप सुनि श्यामसुनर जिज्ञासा केलैन-

“ओ कारोबार किए छोड़ि देलिऐ। मेहनतो आ आमदोक खियालसँ तँ नीके छेलए?”

अपन बामा हाथसँ चानि ठोकैत सुलेमान बाजल- “गाम-गामक बाबू-भैया सभ गरीबक कारखाना उजाड़ि देलक। खादी भंडारकेँ लूटि लेलक। छुच्छे हाथे की करितौं।”

फेर जिज्ञासा करैत श्यामसुनर पुछलखिन- “कोन-कोन तरहक कपड़ा बनबै छेलिऐ?”

सुलेमान- “पहिरन वस्त्रसँ लऽ कऽ ओढ़ैक सलगा धरि बनबै छेलिऐ।”

डुमैत नाव देखि जहिना नैया निराश भऽ जाइत जे जँ जिनगी बँचियो जाएत तँ जीब केना, तहिना सुलेमानक तरसैत मन काँपए लगल।

बातकेँ समटैत श्यामसुनर बजला- “ई तँ धिया-पुताक खेल भेल, जाए दियौ।”

श्यामसुनर सुलेमानकेँ तँ कहि देलखिन ‘जाए दियौ’ मुदा अपन मन ठमकलैन। काजक रूपमे समाज बँटल अछि। ओइ काजक लूरि तँ ओकरा-ले सुरक्षित छइ। जँ कागजी ज्ञानक अभावो रहतै आ विकसित बेवहारिक ज्ञान देल जाइत तँ की घर-घर पाठशाला नै बनैत? जरूरत छल समयानुकूल ओकरा बनबैक। से नै भेल।

तेसर रोटी खाइत सुलेमान बाजल- “भेल तँ सएह, मुदा परिवार बिलैट गेल।”

परिवारक बिलटब सुनि श्यामसुनर आगू बढ़ि पुछलखिन-

“अपन परिवारक कारोबार मरि गेला पछाइत की केलिऐ?”

श्यामसुनरक प्रश्न सुनि उत्साहित होइत सुलेमान बाजल-

“की केलिऐ! हमरो जुआनीक उठाइन रहए। मनमे अरोपि लेलौं जे दुनियाँमे केतौसँ कमा कऽ परिवार जीवित रखबे करब।”

सुलेमानक संकल्पित बात सुनि वाह-वाही दैत श्यामसुनर पुछलखिन- “दोसर कोन काज केलिऐ?”

“गाम-गामक कपड़ा बुननिहार बम्बइ चलि गेलिऐ।”

“बम्बइमे केतए?”

“भिवंडी। भिवंडीमे लूम चलै छइ। ओइमे कपड़ा बुनाइ होइ छइ। गमैया लूरि तँ रहबे करए, लगले नोकरी भऽ गेल। ओना मजदूरी रेट कम रहइ मुदा काजक माप सेहो रहइ। जेते करब तेते हएत। जुआन-जहान रहबे करी दिनकेँ ने दिन आ ने रातिकेँ राति बुझिऐ। खूब कमेलौं।”

श्यामसुनर- “तखन ओकरा किए छोड़ि देलिऐ?”

श्यामसुनरक बात सुनि सुलेमानकेँ ओहिना भेलैन जहिना चोटेपर दोहरा-तेहरा कऽ चोट लगलासँ होइत। कुम्हलाएल फूल जकाँ मुँह मलिन आ ठोरमे फुरफुरी आबए लगलैन नमहर साँस छोड़ैत बाजल-

"भाय, चारि साल खूब कमेलौं, पाँचम साल बिहारी-मराठीक हल्ला उठल। हल्ले नै उठल केतेकेँ जानो गेल, केतेकेँ बहु-बेटी छिनाएल, केतेकेँ कमाइ लूटाएल। सभ किछु छोड़ि जान बँचा गाम आबि गेलौं।"

तैपर श्यामसुनर फेर पुछलखिन- "गाममे आबि फेर की केलिऐ?"

सुलेमान- "तेही दिनसँ पटियाक ई कारोबार शुरू केलौं। सभ परानी लागल रहै छी, घीचि-तीड़ि कऽ कहुना दिन बीतबै छी।"

श्यामसुनर- "सुलेमान भाय, हम ई नै कहब जे अहाँ नै काज करू, मुदा काजक ओकाति तँ देखए पड़त किने। कहुना-कहुना तँ चालीस-पचास किलोमीटर साइकिल चलैबते हेबइ?"

"हँ से ने किए चलबैत हएब। आब की ओ कोस रहल जे घन्टामे कोस चलैमे लगै छल।"

मुड़ी डोलबैत श्यामसुनर बजला- "एक तँ ओहिना शरीर ढील भऽ रहल अछि तैपर साइकिल चलबै छी। तेतबे नहि, हो-न-हो केतौ रस्ता-पेरामे खसिये-तसिये पड़ब आ हाथ-पएर टुटि जाएत तँ के देखत?"

एक तँ सुलेमानक जरल मन ठंढाएल तैपर सँ परिवार-ले हाथ-पएर टुटब सुनि बाजल- "भाय, केतबो अन्हारमे अनचिन्हार लोक ढेरिया किए ने गेल, मुदा हमहूँ तँ कोनो समाजक लोक छी तँए सभ समाज अपन-अपन धर्मक पालन करैए। तहूमे हम तँ चिन्हार छी, गोटे-गोटे अनठा कऽ आगू बढ़ि जाएत मुदा सभ तेहने तँ नहियेँ अछि। तहूमे जागल लोककेँ थोड़े विनाश होइ छइ।"

सुलेमानक जागल बात सुनि श्यामसुनर ठमकला। मन कहलकैन-बात तँ बड़ सुन्दर अछि मुदा जागलक की अर्थ सुलेमान बुझैए, से बिनु जनने बात नै बुझि सकब। एक्के चीजक नाओं-शब्द ढेर अछि, नाओंक संग काज जुड़ल अछि। तैठाम बिनु पुछने काज नै चलत। पुछलखिन-"भाय, जागल केकरा कहै छिऐ?"

जेना सुलेमानकेँ रटले रहै तहिना धाँइ-दे बाजल- “भाय, जखन आँखि मूनल देखै छिऐ तँ बुझि जाइ छिऐ जे सुतल अछि आ आँखि तकैत रहैए तँ बुझि जाइ छिऐ जे जागल अछि।”

फेर ‘ताकब’ आ ‘मुनब’क ओझरी श्यामसुनरकेँ लगलैन। मुदा ओझरीमे नै पड़ि आगू बढ़ैत पुछलखिन-

“केते गोरेक परिवार अछि?”

सुलेमान कहलकैन- “अछि तँ बहुत मुदा चारू बेटीकेँ सासुर बसने अखन तीनियेँ गोरेक अछि।”

श्यामसुनर पुछलखिन- “बेटासँ ने किए ई काज करबै छी, ओ तँ जुआन हएत?”

बेटाक नाओं सुनि सुलेमान विह्वल भऽ गेल। जेना केतौ सुख-दुख दुनू बहिन गाड़ा-जोड़ी कऽ सामाक गीत गबैत होइ तहिना सुलेमान बाजल- “भाय, उमेरक ढलानेमे बेटा भेल। सभसँ छोट अछि। ओकरो दू अक्षर नै पढ़ा देबै, तँ लोक की कहत?”

‘लोक लाज’ सुनि श्यामसुनर हेरा गेला। एहनो जिनगीमे लोक-लाज जीवित अछि! बिहुसैत पुछलखिन- “मन लगा कऽ पढ़ैए किने?”

केकरा मनक बात ऐ युगमे के कहत। सभ अपने बेथे बेथाएल अछि। सुलेमान बाजल- “भाय, से तँ ओकरे मन कहतै जे मन लगा कऽ पढ़ै छी आकि मन उड़ा कऽ पढ़ै छी।”

“अहाँ की देखै छिऐ?”

“हम तँ अपना धंधामे लगल रहै छी। तखन केना देखबै?”

“संगी-साथी सभ कहैत हएत किने?”

“हँ, से तँ कहैए जे जाइए पढ़ैले आ चलि जाइए सिनेमा देखए, मैच देखए।”

“परीछामे पास करैए किने?”

“हँ से तँ ढौऔ-कौड़ी लगने पास कइए जाइए।”

“तब तँ आशा अछि?”

“हँ, से तँ ओकरेपर टक लगौने छी। जँ कहीं नोकरी भेलै तँ दिने बदैल जाएत।”

बेटाक बात छोड़ि श्यामसुनर पत्नी-दे पुछलखिन- “घरवाली की सभ करै छैथ?”

पत्नीक नाओं सुनि सुलेमान पसिज गेल। मनमे उठलै- आब कि पत्नी ओ पत्नी रहल। संगे-संग चलबैवाली, काँट-कुशक परवाह केने बिना कखनो गुरुक काज करैवाली, तँ कखनो संगीक, कखनो प्रेमीक! जिनगीक अन्तिम क्षण धरि रहैक प्रतिज्ञा..! बाजल- “भाय, कहुना कऽ बुढ़िया भानस भात कऽ लइए। बेचारी दम्मासँ पीड़ित अछि!”

“इलाज किए ने करा दइ छिऐन?”

“गरीब घरक लोकक इलाज की हेतइ। जेते पथ होइ छै तइसँ बेसी कुपथे भऽ जाइ छइ। तखन तँ चाहै छी जे बेचारी पहिने मरए।”

‘पहिने मरए’ सुनि श्यामसुनर पुछलखिन- “से किए?”

“एतेटा जिनगीक सभ कमाइ लूटा जाएत, जखन हम मरि जेबै आ ओइ बेचारीक भीखक कलंक लागत।”

सुलेमानक बात सुनि श्यामसुनर गुम भऽ गेला। किछु फुरबे ने करैन। सुलेमानक चेहरा दिस तकैत रहला। जेना आश्चर्यमे श्यामसुनर पड़ि गेला तहिना। किछुकालक पछाइत कहलखिन- “आइ रहि जाउ। काल्हि एम्हरेसँ बेचैत-बिकनैत चलि जाएब।”

तैपर हँसैत सुलेमान बाजल- “भाय, जेना आइ एको पाइ बोहैन नै भेल तेना नीके हएत। मुदा, बिमरयाह घरवालीकेँ एक नजैर नै देखि लेब से केहेन हएत।”



शब्द संख्या: 2395

सनेस

लक्ष्मण रेखाक बीच सीता नहाँति बैसल सनक काका प्रेम रस पीब प्रेमीक संग अधरुपिया चालि पकैड़ अधखिलू फूलक गमकमे गमियेला, गमियाइते सौंझुका सिंगहार जकाँ मुँहक मुस्की महमहेलैन- अजीब ईहो दुनियाँ अछि। ने सतीए अछि आ ने वेशिये अछि। बनौनिहारकैँ धन्यवाद दी जे एक दिस विवेकक विन्यास बाँटि पाँतिए-पाँति, पाते-पात परैस देलैन तँ दोसर दिस दिन-राति बना आगूमे ठाढ़ कऽ देलैन। धर्मक संग पाप, सुकर्मक संग कुकर्म, विद्वानक संग मुरुख आ पुरुखक संग मौगीक जोड़ा लगा-लगा पतियानी बीच पात्रेक पत्ते-पत्ते सेहो परैस देलैन..!

जेते आगू दिस सनक काका देखै छला ओते छगुन्ता लगै छेलैन। एक दिस पानिक ठोप चन्द्रोदक कहबैत, तँ दोसर दिस असीम अथाह क्षीर सागर, मुदा चन्द्रोदको तँ केतौ दूधक तँ केतौ पानिक तँ केतौ दूधपनिया सेहो होइते अछि। कहू जे ई केहेन दुनियाँक खेल छी जे कियो असकरेमे सोल्होताल धऽ नचबो करैए, गेबो करैए, देखबो करैए आ कियो भीड़-भाड़ तकैत रहैए जे जेतेक देखिनहार रहत तेते नीक नाच हएत।

दुनियाँक चक्कर-भक्कर देखि सनक कक्काक मन तरे-तर उदास भेल जाइत रहैन। जहिना घुमती बरियाती रंग-रंगक बात करैत तहिना मनमे उठैत रहैन। अनेरे मनुक्ख बनि जन्म लेलौं। मनुक्खपना जखन एबे ने कएल तखन मनुक्ख किए भेलौं? मुदा 'पना' औत केना? बाँसक पना ओधि होइत अबै छै, केरा-मोथी-अड़िकोच इत्यादिमे सेहो ओहिना अबै छै, मुदा मनुक्खमे से कहाँ भेल? की बिनु 'पने'क मनुक्ख ठाढ़ हएत? ठाढ़ तँ हएत मुदा शुद्ध ठाढ़ हएत आकि अशुद्ध? जखन जानवरोमे फेंट-फाँट होइते छै, तखन अपन हिस्सा मनुक्खे किए छोड़ि देत..?

थोड़ेकालक पछाइत सनक कक्काक मन कहलकैन- ओह! अनेरे दुनियाँक महजालमे फँसि मरैले छड़पटाइ छी। दुनियाँमे के एहेन अछि जे

सुख-सागरमे बैस आनन्द नहि चाहैए, मुदा दुनियोँ तँ दुनियेँ छी जइमे रंग-बिरंगक सागरो सभ बसल अछि। क्षीर सागर, सुख सागर, लाल सागर, कारी सागर इत्यादि अनेक सागर...।

सनक कक्काक मन ठमकलैन। ठमैकते मनमे उठलैन- जीबैतमे जेतए वौआइ मुदा समाधि तँ ठौरपर लेब। जँ से नहि तँ हिटलर जकाँ थूकक धारमे भँसियाइत रहब!

उदास मन, बिरहाइत बगए सनक कक्काक रहैन। तखने भातीज पोलीथिनक झोरामे अदहा किलो अंगूर आ किलो भरि सेब आगूमे रखि देलकैन।

झोरा आगूमे देखिते ठहाका मारि सनक काका हँसला। कक्काक ठहाकाक चोट मनमोहनकेँ नइ लगलैन, जेना आमक गाछपर गोला फेकते कोनो आमकेँ खसने गोलवाहकेँ जेहेन खुशी होइत सएह खुशी मनमोहनकेँ भेल। मुदा निशान साधल आमक महत किछु आरो होइते अछि। मनमोहन बाजल- “काका, ई अहींक सनेस छी।”

‘सनेस’ सुनि सनक काका चौंकला जे सनेस कहि की कहैए! पुछलखिन- “केतक सनेस छी?”

“कश्मीरी सेब छी आ पूनाक चमन अंगूर।”

मनमोहनक बातसँ सनक कक्काक मन तरे-तर सनकए लगलैन। छौड़ा की बुझि मजाक करए आएल। जहिना बाप एकोटा कुकर्म नै छोड़लकै तही उतारक अपनो भेल जा रहल अछि आ सेब-अंगूर देखबए आएल अछि!

मुदा तामसकेँ तरेमे दाबि काका बजला- “हौ मनमोहन, एक दिनक भोजे की आ एक दिनक राजे की। बच्चा सभकेँ दऽ दिहक। अपने अनरनेबा आ लताम दुइर होइए। जेते तोहर लेब तेते अपन दुइरे हएत। अच्छा, एकर भाउ की छइ?”

लगले सुरे मनमोहन पुछि देलकैन- “एकर भाउ बुझैक कोन जरूरत पड़ि गेल?”

मने-मन सनक काका सोचलैन जे छौड़ा नमहर छिनार-लूटार जकाँ

बुझि पड़ैए। बजला- “बौआ, आब तँ सहजे चल-चलौए छी मुदा अपनो देश-कोसक हाल बुझब कोनो अधला थोड़े हएत?”

एक तँ सनक कक्काक बदनामी शुरूहेसँ रहलैन जे घरोक लोक सनकाहे कहै छैन। केना नै कहतैन, सभ अपन-अपन परिवारक बाल-बच्चा-ले करैए आ सनक काका से बुझबे ने करै छैथ, माने अपन परिवार आ दोसर परिवारमे कोनो भेद नहि। जहिना अपन परिवार तहिना दोसराक।

अखन धरि मनमोहन यएह बुझैत जे परिवारोसँ काका बाड़ले-बेरौल छैथ तँए सभ चीजक दुख-तकलीफ होइते हेतैन। मुदा गप-सप्पसँ मनमोहनक नजैर करुआए लगल।

मनमोहनक रूखि देखि सनक काका बुझैक कोशिश करए लगला, कारण की छइ। मुदा मनमे मिसियो भरि सन्देह अपनापर नै भेलैन। मन गवाही दैते रहलैन जे निनानबे प्रतिशत राक्षसक देश लंकामे विभीषण केना भक्ति-भजन करैत जिनगी गुदस करै छला। केहनो सघन बोन सुकाठ-कुकाठक किए ने हौउ मुदा आमक गाछ आम आ लतामक गाछ लताम फड़ब बिसैर जाएत? दोहरा कऽ मनमोहनकेँ पुछलखिन-

“हौ बौआ, जहिना एक्के गोरे डॉक्टरो आ इंजीनियरो नै भऽ सकैए किएक तँ दुनूक दिशा अलग-अलग छइ। मुदा सेबक जगह जँ अपनासँ नीक लताम आ अंगूरक जगह अनरनेबा नेने अबितह तँ फले नहि बीओ रोपि देतिऐ।”

कक्काक प्रश्न सुनि मनमोहन उछलैत बाजल-

“काका, दुनियाँ आब घर-आँगन बनल जा रहल अछि आ अहाँ अपन पुश्तैनी विचार रखनहि रहब।”

मनमोहनक साँसक गरमीकेँ अंकैत सनक कक्काक सनकी तेज नै भेलैन। मिरमिराइत बजला-

“बौआ, जँ दुनियाँ घर-आँगन बनि गेल तँ ओ नीक बात, मुदा ई तँ नीक नहि जे कियो नौड़ी-छौड़ी बना भाषा-साहित्य-संस्कृतिकेँ ओझरा मटिया मेट कऽ दिअए। से कनी बुझा दाए जे की भऽ रहल छइ?”

गुम्हरैत मनमोहन कहलकैन- “काका, दुनियाँ आब नव पीढ़ीक अछि तँए केतबो दुसबै ओ चढ़बे करत।”

मनमोहनक प्रश्नसँ सनक कक्काक सनकी पाछू मुहेँ ससरलैन। पछुआ पकैड़ बजला-

“बौआ, जर्मनी-जापानी आ अंग्रेजी शब्द ऐ लेल चढ़-चढ़ौ भऽ गेल जे ओकर विकास अगुआ कऽ मशीनमे पहुँच गेल आ मशीनक नाओं रखि-रखि अहाँक घर-अँगनामे छिड़िया देलक! आ अहाँ ॠृषि-मुनिक राज मिथिला कहि-कहि ओतए पहुँच गेलौं जे ओ सभ (ॠृषि-मुनि) की कहलैन तेकर डिक्शनरीए चोरा लेत। तखन अहाँ बुझबै जे केहेन नव युगक नव लोक बनि गेलौं?”

सनक कक्काक बात सुनि मनमोहन ठमकल तँ मुदा पाछू हटैले तैयार नहि भेल। बाजल-

“काका, बजारमे अखन एक-सँ-एक खाइयो-पीबैक समान आ फलो-फलहरी तेहेन आबि गेल अछि जे अपना ऐठामक फल-फलहरीकेँ के पुछत?”

मनमोहनक प्रश्न सुनि सनक कक्काक सनकी आगू मुहेँ ससरलैन, बजला-

“बौआ, कोनो देश-कोसक विकासमे ओइठामक माटि, ओइठामक पानि, हवा इत्यादि जेकरा पंचभूत कहै छहक, मुख्य तत्व भेल। जइक अनुकूल गतिए सृष्टि चलैए। अपना ऐठामक लताम आकि कोनो आने फल जे अछि, ओकरा ऐठामक काल-क्रियाक गतिए जे जरूरी छल ओ प्रकृति पैदा केलक। अपना ऐठाम एकरे अभाव भेल जे पहाड़ी फलकेँ मैदानी क्षेत्रमे नीक मानल जाइए।”

अपनाकेँ निरुत्तर होइत देखि मनमोहन मैदानसँ हटैक विचार करए लगल। मुदा सेब-अंगुरक पोलिथीन बीचक सीमा बनल रहलै। रूमाल चोर जकाँ सीमा पहिने के टपत..!

पाछू हटैत मनमोहन बाजल-

“बड़ आशा लगा अनने छेलौं जे काकाकेँ नीक फल खुएबैन।”

मनमोहनक बात सुनि सनक काका तारतममे पड़ि गेला जे अखन धरि जे हम बुझै छेलिऐ तइसँ भिन्न ने तँ मनमोहन अछि। आशाक दोहाइ लगा बजैए जे 'आशा लगा अनने छेलौं' आशा तँ सभकेँ अपन-अपन होइ छइ। सबहक देहेटा अलग-अलग नहि, मनक उड़ान सेहो होइ छइ। पिजरामे बन्न सुग्गोकेँ पोसनिहार सिखबैए जे आत्मा राम पढ़ू- 'चित्रकूट के घाटपर भए सन्तन के भीड़। तुलसी दास चानन रगड़े, तिलक करे रघुवीर...।' मुदा सेहो तँ नहि बुझि पड़ैए। तखन? ओ तँ पुछनहि पता चलत। पुछलखिन-

"हौ बौआ, जहिना घरक लोक हमरा बताह कहैए तहिना ने ओकरो सभकेँ सनकपनीए फल खुएबै।"

कहि मने-मन सनक काका सोचए लगला। भाँग पीब कियो बाजि चुकल छैथ आकि असथिर मने सोचि कहने छैथ जे 'जेहेन खाइ अन्न तेहेन बने मन!' मुदा अहू छौड़ाकेँ तँ छिछा-बीछा नीक नहियेँ छइ। भरि दिन देखै छिऐ जे ऐठामसँ ओइठाम, ओइठामसँ ऐठाम ढहनाइते रहैए। तैपर सँ दिन-दिन आगूए मुहेँ ससैर रहल अछि, से केना? बहुरुपिया ने तँ छी? सलाइ रिंच जकाँ सभ नट पकड़ैबला..!

तही बीच मनमोहन बाजल-

"काका, अहाँ अपने हाथे बाँटि दियौ।"

मनमोहनक बात सुनि सनक काका ठमैक गेला। जहिना कोनो टपारि कुदैले दू डेग पाछू हटि दौग कऽ टपल जाइत तहिना काका पाछूसँ आगू बढ़ि बजला-

"हौ बौआ, बतरसिया हाथ भऽ गेल, ओहुना हरिदम थरथराइते रहैए, तैपर कोनो काज करैकाल तँ आरो बेसी थरथराए लगैए। अपन चीज जे थोड़-थाड़ छिड़ियाइयो गेल तँ नहि कोनो, मुदा तोहर जे एकोटा अंगुर खसि पड़त तँ तोरे मन की कहतह। यएह ने जे सनकाहक ठेकान कोन। तँए हमरा चलैत तोरा मनकेँ ठेँस लागह से नीक नहि बुझै छी।"

कक्काक बात सुनि मनमोहन बाजल-

"तँ की काका घुमा कऽ लऽ जाइ?"

अनेरे ओझरीमे ओझराएल अपनाकेँ देखि सनक काका, ठाँहि-पठाँहि बजला-

“ई तोहर खुशी छिअ जे घुमा कऽ घरपर लऽ जा वा दोकानदारेकेँ घुमा दहक वा रस्ता-पेरामे कोनो धिए-पुतेकेँ दऽ दहक। हम किछु ने कहबह। एते दिनक पछाइत दरबज्जापर एलह, सएह खुशी अछि।”

सनक कक्काक बात सुनि जहिना जाड़सँ कठुआ कियो देह-हाथ तानि अचेत भऽ जाइए तहिना मनमोहनकेँ हुअ लगल।



शब्द संख्या: 1284

उलबा चाउर

अगहनक पूर्णिमाक दिन। काल्हि पूस चढ़त। अदहा-अदहीपर जाड़ औत। महिना दिनक पछाइत पूर्णिमा औत। सकराँइतकेँ पूर्णिमासँ कोनो सरोकार नै छइ। सरोकारो केना रहतै, एकटा दिनक हिसाबे चलै छै दोसर मासक हिसाबे। ओना दुनू दिन-राति संगे चलैए, संगे रहैए मुदा कखन के अगुआ जाइए आकि पछुआ जाइए से ओ जानए। मुदा आब अगहनुआँ जाड़ थोड़े रहल, तहूमे ऐबेरक अगहनमे तेहेन शीतलहरी भेल जे माघोक कान कटलक। जहिना कोनो खेल आकि काजमे हानि-लाभ संगे चलै छै मुदा के कखन अगुआइ छै आ के कखन पछुआ जाइ छै से जानब सबहक बसक काज नहि। जँ से रहैत तँ एक्के भैयारीमे कियो वर-बिमारीक तर पड़ि तरोटा बनि जाइए आ कियो बेटाक दहेज लऽ कऽ उपरोटा बनि जाइ छइ। एक कील रहनहि की हेतइ। तरोटा ने साधल रहत उपरौटा तँ छुट्टे रहत। तहिना जाड़ोक भेल। अगहनक शीतलहरी, समयसँ पहिनहियेँ माघकेँ बजा अनलक। पूस तँ बिच्चेमे रहि गेल। अगहन-माघकेँ भेँट भेने पूस हेरा गेल। किएक तँ जहिना गोटे-गोटे गाइयो-महींसकेँ आ मनुक्खोकेँ समयसँ पूर्ब जुआनीक सभ वयकरन अपने आबि जाइत तहिना जाड़ोक भेल। पल-पल ओस पला पाला बनबै कएल। लतैर-लतैर गोड़ा रोपि लतरबे कएल। अनुकूल अवसरो भेटलै। कश्मीरी बरफवारी संगबे भऽ गेलइ। समयसँ पूर्व भेनौं आम जकाँ ने कोलिफट्टू भेल, ने रसफट्टू भेल आ चोकरेबो नहियेँ कएल। मुदा एते तँ भेबे कएल जे पछिया अगते पकड़ने ओसो मोटा-मोटा पाला बनि पलरबे कएल। जे हवा संग चलै छल ओ ओसक बून बनि टप-टप नाकपर होइत खसबे कएल। मेघौन नै रहितो सुरूज तेना झँपाएल जे दिनो रातिए जकाँ भऽ गेल। भरिसक दशतारक ने तँ छी..!

जाड़क बैसारी भेने घूरोक चलती आएल, गपो-सप्प बढ़ल आ पोथियो-पुराण उनटल। पुरुखे जकाँ स्त्रीगणोक बीच शास्त्रार्थ चलए

लगल। कियो ‘ग्रह’ कहैत तँ कियो ‘ग्रहक करतूत’। मुदा गपक गरमी ओतए मद्धिम पड़ि जाइत जेतए निर्णय होइत, जँ अपना बरदकेँ कुड़हैरेसँ कियो नाथत तँ अनका की! तइले हम सभ अनेरे मुहाँ-ठुठी कऽ फूला-फुली किए करब। जाड़ेक मसिम छिऐ ओकरो तिहाइ हिस्सा तँ छइहे। ओकरो जे मन फुरतै आ जेना मन हेतै तेना अपन करत। अपने केने ने कियो जीबैए। ओहिना तँ नै कहल गेल अछि जे अपने मुइने जग मरए।

बुढ़-बुढ़ानुसक बीच तेसरे झमेल ठाढ़ भेल। कियो कहैत जे पूस-माघमे शीतलहरी तँ देखैत एलौं मुदा अगहनमे तँ नै देखने छेलौं! मुदा हुनको सबहक गप ओइठाम जा अँटैक जानि जेतए जुग-जमानाक उठैत। बापे-बेटाक सम्बन्ध जे बनि गेल ओ केते उचित अछि, जखन जुगे बदैल गेल तखन की बदलत आ केते बदलत तेकर कोन ठेकान.! समुद्रक भँसियाएल नाव, लहैरिक धक्का सहत तखन ने किनछैर धरत। नहि तँ केकर मजाल छी जे नावकेँ बँचा लेत..?

मुदा गाम-घरक बात उठिते सभ गप तर पड़ि जाइत। समस्या ठाढ़ भऽ कहैत जे केना बाधक लक्ष्मी एहेन समयमे घर औती। नै औती तँ उसनियाँ केना हएत आ के करती! उसनियाँ नै हएत तँ उसना चाउर केना बनत! नइ बनत तँ सुपच्च खेनाइ केना हएत? अरबा-अरबाइन तँ राजा-महाराजाक छिऐ, किसान परिवारक तँ उसने छिऐ ने। भलेँ नोकरिया-चकरिया अपनाए नेने हुअए। परिवारक ओ औरत जे जेते परिवार-ले करैत ओ ओते ओइ घरक गिरथानि होइए किने। जहिना खेतक धान, पानिक संग चुल्हिपर चढ़ि अपन व्याकरण बदैल उसनल धानसँ उसना चाउर बनि ‘उसना भात’ बनैत जे सुस्वादुक संग सुपाच्यो होइत अछि तहिना ने घरक लक्ष्मी सेहो होइ छैथ।

पनरह-बीस दिनक शीतलहरी भरिसक छँटत। पोह फटिते रविया एकचारिक घूर लग बैस पीढ़ियेपर खुरपी लऽ कऽ तमाकुल मिलौल गाँजा कटैत रहए। पनरह-बीस दिनक परता भेने खुरपियो अधबिज्झू भऽ गेल रहइ। जहिना चालि कमने पैरक होइ छै तहिना धार मोटा गेल रहइ। लेटौल गाँजापर खुरपीक बेँटकेँ जोरसँ दबिते रवियाक मनमे उठलै-

“केते दिनसँ निआरै छी जे गुलाबतख्ती आ प्रेमकटारी लेब से तेहेन

ने समय भऽ जाइ छै जे की लेब! बुझै छिऐ जे अपन प्रेमकटारी आ गुलाबतख्ती खुरपीए-पीढ़िया छी!”

घूरसँ खड़ौआ जौड़क गूल निकालि चीलमपर चढ़ा भोग लगबैत मंत्र पढ़लक-

“जीवैत-मरैत जे जेतए छह आबि जाह!”

मंत्र पढ़ैत रविया दमसा कऽ चीलममे दम मारलक। जहिना चारक वा भीतक दाबसँ घरक मुँहक चौकैठ-केबाड़ कसकसा कऽ बन्न रहैत मुदा जोरसँ धक्का पाबि खुजि जाइत तहिना रवियाक कपाट खुजल। बाजल-

“दिलरामक माए, कनी एमहर आउ?”

जड़ाएल पतिक आवाज सुनि रूपनी सिरसिराइत आबि आगूमे ठाढ़ भेली। ने दोहरा कऽ रविया किछु बजैत आ ने रूपनी। एक रंगक रोगी दोसराक की हाल-चाल पुछत। मुदा नहियोँ पुछने तँ नहियेँ हएत। मुँहक काजे की छिऐ। खाइयेकालमे ने कनी बाँकी तँ बैसारीए रहैए। तहूमे बैसारियो की एक्के रंगक होइ छै, केतौ खेलहा तँ केतौ बिनु खेलहा सेहो होइते अछि। तैबीच तँ बीचमानि तखने चलत किने जखन दुनूकेँ नीके कहत। जँ से नइ कहत तँ मुँहक मानियेँ की भेल? मुदा बिहंगरो कम रहै तखन ने जे दुनूकेँ अगल-बगल जोड़ियो कऽ चलत, मुदा जैठाम अकासे फाटल छै तैठाम दरजीए बेचारा की करत आ केते करत! कियो खाइक रोगसँ पीड़ित भऽ सुखा रहल अछि तँ कियो भूखक रोगसँ। मुदा तहूसँ नमहर बिहंगरा तँ ओतए उठैत जेतए भुखेलहासँ बेसी भुखाएल-खेलहाक खेल चलैए!

दुनू परानी–रविया-रूपनी–एक दोसरपर आँखि अँटकौने जेना आगू-पाछू दुनू दिस दुनू दुनूकेँ देखैत। मुदा गाँजाक चढ़ल मन रविया अपन मौन तौड़ैत बाजल-

“बुझलौं की से किने आइ खिचड़ी खाइक मन होइए। तिला सकराँइतक भरोसे की रहब।”

पतिक बात सुनि रूपनी किछु बाजल नहि। मुदा रूपनीकेँ अनसोहाँत जकाँ रीब-रीब लगल। रीबरीबाइत बाजल- “एना किए अहाँ

तिलासकराँइतक खिदहाँस करै छी। सोझ मुहेँ कहू जे खिचड़ी खाएब।"

पत्नीक बात रवियाकेँ कण्ठक निच्चाँ नै उतरल। गल-गलबैत बाजल- "एकटा खिस्सा कहै छी। एगो रहै अन्हरा एगो रहै डिठरा। दुनू मिलि कातिकमे एकटा खत्ता उपछलक। तइमे फँसलै एकटा अन्है। डिठरा कि केलक जे नाँगैर दिससँ अन्हराकेँ पकड़बैत जहाँ अधडरेड़पर आएल कि जोरसँ कहलकै- 'छोड़-छोड़ ने तँ धाए लेतौ साँप छिऐ!' ओ छोड़ि देलकै। से हम थोड़े छी। अहीं कहू जे आब लोक दुरागमन करैए आकि माल-जाल फरिछबैए। हे मानि लेलौं जे बर-कनियाँक दुरागमन भेल मुदा बेटा-बेटीक की हएत। घरेक काजमे एना दू रंग किए भेल जाइ छइ?"

रवियाक बात सुनि रूपनी जेना पघिल गेल तहिना विस्मित होइत बजली-

"उसना चाउर ऐछे कनी नून दऽ कऽ टभका लेब। कचका मिरचाइ चीर कऽ दऽ देबै, तइले अहाँ किए लल-वेकल छी।"

जहिना ठीकेदारकेँ बिल-भुगतानक दिन होइत जे रोहू लेब कि मुंगरी तहिना रवियाकेँ भेल। गरीबक गोनैर जहिना दुनू कात चिकने होइ छै तहिना दुनू परानीकेँ भेल। रविया बाजल-

"अरबा चाउरक प्रेमी छिऐ दूध-चीनी आकि नून। मुदा अपन सबहक तँ नूने छी किने? जखन खिचड़ीए भेल तखन चाउर, पानि आ नून-मिरचाइ पड़बे करत, एते जइमे पड़त से खिचड़ी केना नइ भेल।"

खाइक ओरियान देखि रवियाक मन घुमल, घुमिते गम्भीरता देखबैत असथिरसँ बाजल-

"बाध गेना बीस दिनसँ ऊपरे भऽ गेल। बाधमे की भेल हएत की नहि। तहूमे तेहेन ने सिल्लीक उजैहिया आएल अछि जे सभटा धान चाभि देने हएत।"

पतिक बात सुनि रूपनी अगुअबैत बाजल- "पैछला बेर देखलिऐ जे बीघा भरि सोनाइ कक्काक सूर्यमुखी फूलकेँ सुग्गे खा गेलइ! बेचारे केते आशा लगा खेती केने छेलखिन!"

पत्नीकेँ भँसियाइत देखि रविया लोहछैत बाजल- "हमरा एते–सौंसे

गामक हिसाब-बारी–जोड़ैक काज नइए। हम माल-जालक ओगरवाहि करै छिऐ आकि चिड़ैयो-चुनमुनीक। खेलकै तँ गिरहतक खेलकै, हमर बड़ खेलक तँ रखवारिक राखी।”

साक्षात् वैरागी भेल निर्विकार पतिक रूपकेँ देखिते रूपनीकेँ जेना सुरूजक धाही नजैरपर पड़लै, चरियबैत बाजल- “हम चुल्हिक ओरियानमे जाइ छी। अहाँ झब-दे बाध चलि जाउ, नहि तँ गिरहत अबलट जोड़त। जँ पहिने चलि जाएब आ गिरहतकेँ देखब तँ अगुआइए कऽ कहबै जे तेते ने सिल्ली आबि गेल जे एको कनमा धान नै होइबला अछि।”

पत्नीक विचार रवियाकेँ जँचल, मुदा भरल पेट जहिना ओछाइन दिस तकैत तहिना एक तँ घूरक अगियासीक ताउ तैपर गाँजाक रंग रवियाकेँ चढ़ले रहै, तँए उठैक मन नै भेलइ। मुदा आगियोक तँ अपन गुण होइ छै किने, चाहे तँ उपयोग करू नहि तँ घर जरौत। मुदा से रवियाकेँ नै भेल। मन छड़पलै। छड़ैपते फुसफुसाएल- “कोनो गामक नाइँर-गाइँर नीक नै छइ। कहू जे जखन एक्के नाओं सबहक अछि गाम, तखन किए कोनो गामक बाधक रखवारि बीघामे दस धूर छै, तँ कोनो गामक पाँच धूर। कोनो गामक चारि धूर छै, तँ कोनो गामक दू धूर!”

बजैत-बजैत रवियाक मन ठमकए लगलै, मुदा फेर बाजल- “अनेरे कोन चक्करमे चकराइ छी। ई तँ रखवारिक भेल। जेकरा ने माए छै आ ने बाप। मुदा माइयो-बापबला केँ तँ देखिते छिऐ जे कोनो गामक लग्गी साढ़े छह हाथक छै तँ कोनो गामक पौने सात हाथक। तहिना कोनो गामक साढ़े सात हाथक छै तँ कोनो गामक नअ हाथक। धुर! अनेरे अनकर रोग अपना सिर सिरजै छी। साबे बोझ जकाँ सदिकाल गरमुराहे होइत रहैए तखन तँ कहुना कऽ सम्हारि खरिहाँन पहुँचू जे पसाइर कऽ सुखा लेब। बड़-बड़ लीला सभ छइ। केते देखब। जखन एक्के गामक एक्के आड़िक खेतक मलगुजारी ‘बढ़मोत्तर’ कहि रेन्ट मुक्त अछि, आ बगले बलाक ओते रेन्ट अछि जे मलगुजारी भुगतानपर बटाइ खेत रहै छइ।”

ऐगला बात मनमे अबैसँ पहिने रविया फुरफुरा कऽ उठल। शीतलहरीक चलैत जे कुतरूमोमे अगते फूलक कोढ़ी आबि गेल छल, से रविया देखने रहए। बाजल- “अहाँ बाड़ीसँ कुतरूम आनि लेब। ताबे हम

बाध दिससँ भेल अबै छी।"

रविया बाधक रस्ता धेलक। करीब अस्सी बीघाक दच्छिनबरिया बाध, जेकर रखवारि रविया करैत। संयोग नीक रहै जे तीन साल पहिने पैछला रखबार–जे पंजाब गेल–रवियाकेँ बाधक भार देने गेल। पचास बीघासँ ऊपर जमीन निचला आ पच्चीस-तीस बीघा ऊपरका जमीनक बाध छिऐ। तइमे पाँच बीघा जमीन उस्सर छै, जइमे भरि-भरि जाँघक कुश अछि आ परदेशिया सबहक किरदानीसँ पान-सात बीघामे छाहेँ भऽ गेल छइ। तैपर रौदी भेने उपरारि खेत अबादे ने भेल...।

खोपड़ी लग पहुँचते रवियाक मनमे उठल- अनेरे एहेन ठंढामे पैरक बेमाए किए फटाएब। नीक हएत जे खोपड़ी अपन छीहे, आगि सुनगा घूरे तापी। उपरारि चौरक बीच परतीपर रवियाक रखवारिक खोपड़ी छइ। घूर पजाइर बैस गेल, हाथ-पैरक कन-कनी कमए लगलै। रवियाक मनमे उठलै- अनका जे हौउ, मुदा भगवान पक्षक काज केलैन।

उपरारि नै उपजल तँ नै उपजल मुदा निचला तँ उपजल अछि। नै साल भरि तँ छबो मासक बुतात तँ हेबे करत। मुदा गामेमे देखै छी जे अही चौरीटा मे नहर नै भेनौं नहरक पानि एलइ। बाँकी गाम तँ रौदियाहे भऽ गेल अछि!

सिताएल नढ़िया जकाँ सुरूज तँ उगल मुदा सिरसिराइत। नव विहान देखि गिरहस्तक बीच चलमली आएल। पानिक धानमे कनी ठंढे ने लागत मुदा सुरूजोक तँ धाही छइहे। हो-न-हो कहीं पूस-माघ अगुआएल अछि जँ कहीं पैछला डेग नपलक तँ फेर ओहिना भऽ जाएत। एक तँ रौदियाह समैयक अन्न, तेकरो जँ जानि कऽ छिजानैत करब तखन तँ आरो केतौ भऽ कऽ नइ रहब।

किसानक चलमली देखि रूपनी हाँइ-हाँइ भानस कऽ दुनू मायपुत खेनाइ खेलक आ पति-ले खाएक लऽ कऽ आठ बजैत-बजैत हँसुआ नेने विदा भेल। सात बर्खक बेटा–दिलराम–केँ अँगनासँ निकैलते रूपनी कहलक- "बौआ, आइ उलबा चाउर खुएबो।"

आगू-आगू दिलराम आ पाछू-पाछू रूपनी बाध दिस विदा भेल।

किछु दूर गेलापर रूपनीक मनमे उठल। भगवान कूह फेड़लैन। नै तँ कोनो दशा बाँकी नै रहितए। जहिना अन्नक गति होइत तहिना जारैनक। ओहो तँ माघ-ले रखने छेलौं जे कोनो धरानी पार लागल, नहि तँ कठुआ कऽ मरैमे कोनो भाँगठ छेलए।

गाँजा पीबैत रविया आगू-आगू बेटा आ पाछू-पाछू पत्नीकेँ अबैत देख, बुदबुदाएल- "जे जीबए से खेलए फॉगु। हमरा सबहक जिनगीए की अछि जे ऐगला आशापर जीब। जहिया हेतै तिलासकराँइत तहिया हौउ। अपन तँ आइए छी।"

मुदा लगले मन ठमैक गेलइ। आन पाबैन खीरक होइ छै आ तिलासकराँइत किए खिचड़ीक होइ छइ? तहूमे उजरा अरबा चाउरक संग करिया तिल-गुड़ आ पानिक संग परसाद किए बनै छै..?

आँखि मूनि रविया विचारिते छल, जन-गिरहस्तसँ बाध भरि गेल छल। तैबीच दुनू मायपुत रूपनी लगमे पहुँचल आ पहुँचते बाजल-

"जहिना गामपर तहिना बाधोमे भकुआएले रहै छी!"

रवियाक बनल मन रहबे करइ, बाजल- "गामपर तँ अहाँ देखि भकुआ जाइ छी मुदा बाधमे तँ अपने देखै छी किने।"

तैबीच बीघा दुइए हटि धानक खेतमे जन सबहक बीच हल्ला भेल। हल्लाक कारण रहै एक भाग सिल्ली धान चाभि देने रहइ। धान नै देखि जन-सबहक बीच पाहि धड़ैक हल्ला रहइ। हल्ला देखि रूपनी पतिकेँ कहलक- "कनी जा कऽ देखियौ जे किए झगड़ा होइ छइ।"

गाँजाक असकताएल मन रवियाक, बाजल- "हम बाधक रखबार छिऐ आकि गामक पंच! अपन गिरहत फरिछाबह...।"

रवियाक बात रूपनीकेँ जँचलै। आगूमे थारी बढ़बैत बाजल- "बेटाकेँ आइ उलबा चाउर खुआइयो देबै आ मोटरियो बान्हि देबइ।"

'उलबा चाउर' सुनि रविया विस्मित भऽ गेल। मोन पड़लै अपन माए। माए मोन पड़िते मनमे उठलै- ओ दिन जइ दिन दियारी पाबैन रहइ। धान अधपक्कू भऽ गेल रहै, मुदा सुभर नै पाकल रहइ। लक्ष्मी पूजा दिन रहने वएह अधपक्कू धान काटि, पैरसँ मीड़ि खापैड़मे भुजि, चाउर कूटि

भात खेने रही...।

हाथ-मुँह धोय रविया दिलरामकेँ कहलक-

“बौआ, अहूँ कनी खा लिअ।”

भरल पेट दिलरामक रहबे करइ, नकारैत बाजल-

“नहि! खिचड़ी नै खाएब, उलबा चाउर खाएब।”

‘उलबा चाउर’ सुनि रवियाक मनमे खीझ उठल। बाजल-

“उलबा चाउर लगले केतए-सँ औतै। बड़ अगुताएल छेँ। के तोरा मोन पाड़ि देलकौ!”

निष्कपट दिलराम बाजल-

“माए कहलक।”

माइक नाओं सुनि रविया ठमैक गेल। जहिना मन्दिर जाइसँ पहिनहि भगवान आबि राशि लगा लऽ जाइ छथिन तहिना ने गाछोक पीपही रोपिते-काल पाकल आम आगूमे आबि जाइ छइ।

फेर दोसर खेतमे हल्ला उठल। पानिक तरमे आड़ि डुमल रहइ। खाली आड़िक खरही टिक-टिक करैत रहइ। मुदा सभठामक ओगरवाहि की बन्दूके हाथे होइ छै, खरहोरिक कड़ची केना ओगरवाहि करैए। झगड़ाक कारण रहै एकटा खेतक धान चतैर-लतैर दोसर खेतमे चलि गेल छेलइ। पहिने तँ रवियाकेँ सोझ-साझ बात बुझि पड़लै, मुदा लगले मन ठमैक गेलइ। पानिक संग माटिक प्रश्न मनमे उठि गेलइ। ई केहेन होइ छै जे लोक कलम-गाछी लगबै-काल आड़िक कातमे झमटगरहा गाछ लगा दइ छै जे नमैड़ कऽ दोसरा खेतक उपजा खा जाइए! बुढ़-बुढ़ानुसक सेहो कहब छैन जे घर लग बाँस नै लगाबी, एक तँ लत्ती-गाछक सीमापर बसल अछि दोसर तेहेन सिराह होइए जे जेते दूर ओकर छाँह जाइ छै तेते दूर ओकर सीरो जाइ छइ। जँ जेबेटा करितै तखन तँ नै कोनो, मुदा तरे-तर तेहेन खच्चरपनी करैए जे जेते दूर जाइए ओतेमे दोसराक बास नै हुअ दिअ चाहैए। खिचड़ीसँ मन भरिते रविया पत्नीकेँ कहलक-

“हमरा अघँस-मघँस करैक मन होइए, अहाँ बाध घुमने आउ।”

पतिक समरपन देखि रूपनी बाजल- “थाल-पानिमे बौआकेँ केना लऽ जेबइ। एतै छोड़ि दइ छी।”

खेते-खेत रूपनी टहैल घुमि कऽ आबि पतिकेँ कहलक- “बलौकिया धान छोड़ि सभ ऊपरा-ऊपरी अछि।”

बजैत-बजैत मनमे उठलै- घरमे कोठी-भरली तँ नहियेँ अछि, एते धान रखब केतए? मुदा फेर मन कहलकै- आब कि धान-चाउरक चोर रहल जे कियो चोरा लेत। आब तँ हिस्सा-बखराक चोरि देखाइयो आ छिपाइयो कऽ होइ छइ।

रविया पुआरक ओछाइन सेरियबैत निनियाँ देवीक स्तुति करिते छल कि पत्नीक बुदबुदाएल बात सुनलक। सुनिते मन मुरैछ कऽ तुरैछ गेलै, बाजल- “बड़ लाल बुज्झकैर बनै छैथ! अच्छा एकटा कहू जे जइ गाममे सभ चोरे रहत ओइ गाममे चोर के भेल?”

पतिक बिगड़ैक कारण बुझि रूपनी नहाएल आ बिनु नहाएल अवस्थामे पड़ि गेल। बाजल-

“पड़ू-पड़ू। लाउ घुट्ठी दाबि दइ छी।”

पियाससँ पहिने पानि आ भूखसँ पहिने अन्न जहिना आगू एलासँ क्षुधाक धार रोकाइ छै तहिना दू-अढ़ाइ बजिते धान कटनिहार सबहक शक्ति सिहरए लगलै। एक तँ मरियाएल रौद तैपर जट्ठर पानिक संग पछबाक लहकी लहकैत रहबे करइ, एक्के-दुइए धानक बोझ लऽ लऽ खेतसँ निकलए लगल। बोझ लऽ लऽ निकलैत देखि रूपनी पतिकेँ पुछलक-

“हम राखी कटने अबै छी।”

पेमेन्ट, वेतन, महिना, पगार, तलब, तनखा आकि दरमाहा उठैकाल जहिना नोकरियाक मनमे तरंग उठै छै तहिना रूपनियोँक मनमे उठए लगलै। तेते खेत कटाएल जे एते राखी काटब पार लगत। तहूमे बेरो खसल आब जाड़ो बेसियेबे करत।

लगले रूपनीक मन मानि गेलै जे कोनो कि जमा-जिगिर अछि जे एते पुरबै पड़त। जेतबे सम्हरत तेतबे काटब। बाँकी आन दिन काटब। एते

दिन कियो चोरेबे ने केलकै आ एक-दू दिनमे उनटन भऽ जाएत! सोचिते-विचारिते पहिल खेत रूपनी पहुँच गेल। आँखि उठा हिया कऽ देखलक जे कोन कोणमे राखी अछि। दुइए धूर हएत तइसँ की, हएत तँ कोनो कोणेपर। मुदा नमहर खेत रहने अदहोसँ कम खेतक धान कटाएल, तखन राखी केना बनत। दोसर-तेसर-चारिमो खेत तहिना। पाँचम खेतटा मे राखी बेराएल अछि।

धान देखि रूपनीक मनमे सबुरक सबुरदाना छिड़िया गेलइ।

पाँजो भरि धानक आँटी बान्हि माथपर उठौने धानक गदियाएल पानि देहपर टघरैत रहइ। समुच्चा देह भीजल रूपनी खोपड़ी लग पहुँचल। अराम करैत पति आ पुत्रकेँ देखि विभोरसँ विसरभोर भऽ गेल। मोने ने रहलै जे माथपर धानक भारी आँटी अछि।

धानक आँटी पत्नीक माथपर देखि रविया मुस्की दैत बाजल-

“एहेन जे अहाँ छी जे दिलरामकेँ बाधे अबैकाल उलबा चाउर गछि लेलिऐ आ अखनसँ जे छाल-छोड़ौत से केहेन लागत?”

बिहुसैत रूपनी बाजल-

“जइ बेटाकेँ गछलिऐ तेकरा पूरा कऽ छोड़बै। ऐठामसँ जाएब, एक पाट हएत पहिने मलि लेब। चुल्हि पजाइर धान उला लेब। साँझे परतै तँ कि हेतै, कोनो कि अनका आँगना जाएब जे भरली साँझ नै कुटए देत। अपने ढेकी अछि जखन पलखैत हएत तखने कुटि लेब, तँए कि बेटाकेँ उलबा चाउर नइ देब।”



शब्द संख्या: 2630

बलजोर

राज-दरबारसँ घुमि कऽ अबिते बड़का भैया हाँइ-हाँइ बैग रखि जुत्ता निकालि बेसुधि जकाँ पलंगपर चारूनाल चीत भऽ ओंघरा गेला। एतबो सुधि नै रहलैन जे तरबा पसीनासँ पसीज पैताबाक संग देहक घामक भीजल गोलगला निकालितैथ।

आँगनमे बड़की भौजी चुल्हि लग बैसल भानस करैत पुतोहुकेँ कहैत रहथिन-

“कनियाँ, भगवान जँ ससुर देलैन तँ अहाँकेँ, अपनो ऐ बुढ़ाड़ी तक पहुँचैमे कहियो खाइ-पीबै आकि कोनो मन-मनोरथक दुख बेकल नहियेँ भेल।”

सासुक बात सुनि पुतोहु जे तिलकोरक पात छाँटि-छाँटि तहिया-तहिया सासु-ससुर-ले रखि अपना-ले लोहियामे देल उनटबैले छोलनी दिस आँखि उठबैत बजली-

“कहै तँ छथिन बड़ सुन्दर बात माए, मुदा गाममे हिया कऽ देखथुन जे हिनका एते उमेरक केते गोरे घरक गारजनी अपना हाथे चुहैट कऽ पकड़ने अछि। खाएल-पीअल-पोसल देह छैन नोकरनी जकाँ रखने छैथ। ई कहाँ कहियो मनमे होइ छैन जे पोता-पोती बिआह-दुरागमन करै-जोकर भऽ गेल। पुतोहुओक उमेर पचास-पचपनक तँ भइये गेल हएत मुदा हाथ-मुट्ठी केना चलै छै से सोचै-विचारैक मौका अखन तक नइ देलिऐ। जहिना दुरागमन कऽ ऐ घर प्रवेश केलौं तहिना अखनो छी। पाकल आम जकाँ दुनू बेकती भेली, कखन ढन-दे आँखि मुनि लेती तेकर कोनो ठीक छैन। किछु दिनक पछाइत बेटा-पुतोहु घर सम्हारत। तखन यएह कहौथ जे हिनका जकाँ कहिया हएब?”

अपन मलिकियतपर पुतोहुक व्यंगवाणक आक्रमण देखि बड़की भौजी तिलकोर उनटबैत पुतोहुक बोल सुनि तिलमिलाए लगली। ढोढ़ साँप

जकाँ मन सनकए लगलैन मुदा विचार रोकि मनमे उठलैन- 'घरवाली घर लेती दाइ जेती छुच्छे!' तइले लक्कड़-झक्कड़ करब नीक नहि। चारि पैरक हाथी तँ हूसि जाइए मनुक्ख तँ सहजे दुइए पैरक होइत अछि। आगिक ताउ लग मन तबैध गेल हेतैन भरिसक तँए एहेन बात बजली...।

मुदा लगले बड़की भौजीक विचार घुमलैन। एहेन बात पुतोहुकेँ बाजक चाहिऐन? एतबो नै होश रहलैन जे मुँहपर एहेन बात बजली? घर-दुआर केतौ पड़ाएल जाइ छइ। एहेन उचित भेल जे पाकल आम जकाँ बुझै छैथ? जिनगीक कोनो ठेकान छै, जँ कहीं हमरासँ पहिने अपने चलि जाथि तँ पोत-पुतोहुक गारजनी केहेन हएत? छौड़ा-मारड़िक गारजनी आ पटुआ सागक झोरमे की भेद छइ..! मुदा बड़की भौजी किछु बजली नहि। नजैर दुनूक तिलकोरक तरूआपर रहैन, एहेन ने हुअए जे कोनो लहैक जाए आ कोनो असिझू भऽ नरमे रहि जाए। एक हुकुमदारनी दोसर केनिहारि।

बड़का भैयाक असल नाओं सुलोचन आ बड़की भौजीक शान्ती छिऐन। परिवारक बाबा समाजक भैयारीमे सुलोचन बड़के भैया आ शान्ती बड़कीए भौजीक रूपमे रहि गेली। ओना दुनू बेकतीक उमेर अस्सीसँ ऊपरेक छैन। मुदा ऊपरका खाड़ीक लाटमे रहने धियो-पुतो 'बड़के भैया' आ 'बड़कीए भौजी' कहै छैन।

सुलोचनक पलंगक मचमचीक आवाज आँगन धरि दुनू बेकतीक कानमे ओहिना पहुँचल छल जहिना मलकार किसान परिवारमे बाधसँ अबैत माल-जालक आवाज पहुँचैत। बड़की भौजी अकानि-अकानि अनुमान लगौली जे भरिसक बुड़हा पहुँच गेला। अनुमानो ठीके रहलैन।

बड़की भौजी रेखासँ–माने पुतोहुसँ–बेसी पनिगर। देहो हल्लुक। तँए जाबे रेखा छोलनी रखि पल्था सम्हारि दुनू हाथ रोपि उठैत-उठैत ताबे बुढ़ी तीनियेँ डेगमे पति लग पहुँच गेली। पहुँचते आँखि मूनि चारूनाल चीत, दुनू हाथ सिरमा दिस बढ़ौने देखि अर्द्धचेत जकाँ हुअ लगली। मुदा होश सम्हारि दहिना हाथक आँगुर नाक लग भिरा देखलखिन तँ साँस नीके चलैत बुझि पड़लैन। मुदा रस्ताक झमारसँ किछु गरम तँ रहबे करैन। पंखा हौंकलासँ भक्क टुटि जेतैन। पाछू उनैट तकली तँ डाँड़पर हाथ नेने

पुतोहुकेँ मौकनी हाथी नहाँति लुदुर-लुदुर अबैत देखलैन। लग अबैसँ पहिनहि जोरसँ हुकुम देलखिन- “कनी पंखा नेने आउ।”

एक तँ राकश दोसर नतल, दस डेग आगू बढ़बसँ रेखा हुकुमेकेँ नीक बुझलैन। घुमि तँ गेली मुदा मन बिसाइन जकाँ हुअ लगलैन। जेते विस-विस्सी बढ़ल जानि तेते मनक हौंर सेहो तेज भेल जाइ छेलैन। ई केहेन भेल जे नैनसँ देखैक बदला पंखा अनैले घुमा देलैन? भलेँ डॉक्टर नहि छी, मुदा डॉक्टरक परिवारक बेटी तँ छीहे। पढ़ल-लिखल छीहे, तखन किए बुढ़ी अपचंग भेल छैथ। एक तँ बुड़हा खेलाड़ छैथ जे एते दूरसँ पएरे एला से भेलैन मुदा बजितैथ से नहि भेलैन। लोककेँ कोनो बिमारी होइ छै तँ बजैए आ हिनकर पहने बकारे बन्न भऽ गेलैन! आ तेहने खेलाड़ि बुढ़ी छथिन। जेना लूटि लैतिऐन तहिना दुरेसँ हुकुम चला देलैन। हमरासँ बेसी पनिगर तँ अपने छैथे, किए ने दौग कऽ पंखा लऽ गेली!

रेखाक मन ठमकलैन। ठमैकते मनमे ठहकलैन- ‘परबस जीव..!’ रेखाक सभ विचार, पानि पड़ल झोलीक आगि जकाँ सिमैस गेलैन। जँ बात कटितिऐन तँ पीड़ित-सँ-विपरीत भऽ जइतैथ, जँ नै कटलयैन तँ बुड़हाक जान-परान निकैल रहल छैन। अजीब लीला बुढ़ीक छैन। हड़पटाहि गाए जकाँ दुहैकाल छड़ैप उठती आ डोरी तोड़ि आड़ि-धूर कुदि कऽ टपै बेर खलीफा भऽ जेती। यएह छी परिवार? बाबा-दादी, बाबी-दादी, दीदी-पीसा, मौसी-मौसा, काका-काकी, भाय-भौजाइक सम्बन्धक कोनो महत नहि, मुदा...। केतए बिला गेल बाबा-दादीक सम्पैतक गुण जे पेट-काटि उपार्जित केने रहैथ। उचित-अनुचित जिनगीक दिशा बोध करबैत अछि तैठाम मंत्र बनि ढोलक-झालिक संग हवामे रमैत रहै छइ।

पंखाक आदेश पुतोहुकेँ दैत बड़की भौजी कान लग मुँह सटा बड़का भैयाकेँ पुछलखिन-

“किछु खेबो-पीबोक मन होइए?”

पत्नीक आवाज कानमे पैसिते ढोढ़ साँप जकाँ बड़का भैया फुफकार छोड़लैन-

“की खाएब की पीब, अह्लादि कऽ पुछै छैथ, बड़ हएत तँ यएह ने

हएत जे एते दिन छानि-छानि खाइ छेलौं आब झाड़ि-झाड़ि खाएब।”

तरे-तर जे बड़का भैया बजैत रहैथ से बड़की भौजी नीक जकाँ नै सुनि पौलैन। अह्लाद-सँ-अह्लादित होइत ह्राथीक सूढ़ जकाँ मजीराक ध्वनिमे बड़की भौजीक गछाड़ देखि बड़का भैयाक मन सुगबुगेलैन। बजला-

“कनी थम्हू। आँखिक पल उठबे ने करैए।”

भक्ति भावसँ बड़की भौजी धड़-फड़ाइत बजली-

“अच्छा, पानि आनि आँखि पोछि दइ छी।”

कहि बड़की भौजी जुआनीक जोशमे पलंगसँ कुदि पानि आनए दौगली। चौकैठक अढ़मे पुतोहु पंखा नेने अबैत रहथिन, अकासमे उड़ैत बड़की भौजीक नजैर रेखापर नै पड़लैन। एक गोरे असथिरसँ अबैत दोसर कुदैत-फुदैत निकलैत, मोखे लग भिड़ंत भऽ गेलैन। कोनो एक-दोसर परिवारक भिड़ंत नहि, तँए ने बड़की भौजी किछु बजली आ ने पुतोहु। मन दुनूक टाँगल बुड़हाक कोसलपर रहैन। चलचलौ जकाँ छैथ, अखने जे पाबि लेब से पाबि लेब...।

बड़की भौजीक औगताइ देखि रेखाक मनमे उठलै- शान्त-चित्त रहैबला बुड़हा एना विस्मित जकाँ किए कऽ रहल छैथ। जिनकामे एते दूरसँ अबैक शक्ति छेलैन मुदा घरक लोककेँ कहितथिन से होश नै रहलैन? जरूर कोनो राजरोग छिऐन।

‘राजरोग’ मनमे अबिते विचार फुद-फुदाए लगलैन। जहिना छठिहार रातिक दूध जिनगीक अन्तिम क्षण धरि स्मरण रहैत, जेकर सफर जिनगीमे सभसँ नमहर होइत। आ किछु रोग एहनो होइ छै जे चटपट जिनगीकेँ तोड़ि दइत आ किछु एहनो होइत जे मुसकारीक मूस जकाँ कुहि-कुहि जिनगी लइत। भरिसक बुड़होकेँ सएह ने तँ पकैड़ लेलकैन? रेखाक चून जकाँ मन चुनिया गेलैन।

ओना जखन दुनू गोरेक कानमे–माने साउसो आ पुतोहुओक कानमे–बुड़हाक पहिल ध्वनि एलैन तखन दुनूक अपन-अपन उत्साह रहैन। बड़की भौजीक उत्साह रहैन जे राज-दरबारसँ घुमला हेन। नीक

जकाँ परिवारक विदाइ भेले हेतैन, देखा चाही चाइन केहेन चमकैए। आ रेखा कोठरी पहुँच बुड़हा लग बैस किछु पुछैक ओरियान करिते छेली कि बड़की भौजी लोटामे पानि नेने पहुँच गेली। सासुकेँ देखिते रेखाकेँ मनमे शंका जगलैन। शंका ई जे बुड़हासँ किछु कहा ने नेने होथि। मुदा बिनु सुनल बात बाजबो उचित नहि। तहूमे एक दिस मालिक छैथ दोसर दिस पुतोहु। जँ कहीं दुनू एकदिशाह भऽ जाथि तखन अपन गति की हएत? गाड़ी उनार भेने चढ़निहारक जान थोड़े बँचै छइ। जँ बँचबो करै छै तैयो अबाह तँ बनाइए दइ छइ..! बड़की भौजीक मनक ताप-सन्ताप तँ बनले रहलैन तैयो पुतोहुकेँ कहलखिन-

"कनियाँ, अहाँ उन्टा घुट्ठी ऐँठ दियौन।"

घुट्ठीक भार देला पछाइत बड़की भौजीक मन रमकलैन- ओह, लगले दोहरा कऽ अढ़ाएब नीक नहि तहूमे तीन गोरेक बीचमे। नहि तँ करूतेलसँ तरबा रगड़ब नीक होइतैन। पानिसँ चानि धुआ जइतैन आ तेलसँ तरबा रगड़ा जइतैन तँ अनेरे होशमे आबि जइतैथ। खाएर जे हूसल से हूसल। चानिपर पानिक फुहार पड़िते बड़का भैया आँखि खोललैन।

आँखि-पर-आँखि पड़िते बड़की भौजीक आँखिमे ललकारीक रेगहा जगलैन। जगिते सहैम गेली। अनेरे बुढ़ाड़ीमे घी-ढारीक बात मोन पाड़ै छी। लोककेँ अपनो उमेरक ठेकान करैक चाही। दुनियोँ तँ अजीबे छै, दुनियाँक एको प्रतिशत लोक एहेन नइ अछि जे अपने माए-बहिन जकाँ दुनियोँक माए-बहिनक चर्च नै करैत अछि मुदा एते अपराध किए होइ छइ? नैतिकताक महत जँ नै होइतै तँ माए-बहिनक अपराध कहाँ केतौ होइ छइ?

पतिक थरथराइत मन छाती डोला देलकैन। पँजरा गरे उनैट बड़की भौजी तकली तँ पुतोहुकेँ उन्टा घुट्ठी जोर-जोरसँ ससारैत देखली। मुदा शंका भेलैन, शंका ई भेलैन जे जरूर कोनो बात हेतइ। बुधियार आदमी काजे देखि आदमी चिन्हैए। जँ कहीं घुट्ठीए पकैड़ घोलटिया लेलकैन तखन अपने तँ बिच्चेमे रहि जाएब! पुरुखक ठेकाने कोन। साँढ़-पारा जकाँ कखन की करत तेकर कोन ठेकान। कखनो भगत सिंह बनि जान फूकत तँ कखनो वेश्यालयमे दिने-देखार लूटत-लूटाएत..!

मोन पड़लैन घी-ढारिक मंत्र। मुदा आब ओ मंत्रक समय कहाँ रहल। गाछपर सँ खसैत लोक जकाँ भौजीक मन झूललैन मुदा थाकल ठेहियाएल पतिक सेवाकेँ प्रथम प्रश्रय दैत अपन बेथा बिसैर भौजी बड़का भैयाकेँ कहलखिन-

“लोककेँ सौंसे देह गुड़-घा रहै छै से बरदाश कऽ समैपर नहेबे-खेबे करैए आ अहाँ मुरदा जकाँ आरो धड़ खसौने जा रहल छी।”

भौजीक बात भैयाकेँ कठाइन नै लगलैन, पुरुखपना जगलैन। मरितो धरि पत्नी लग झूकि जाएब तँ केहेन पुरुख हएब। फुरफुरा कऽ चिड़ै जकाँ उठि कऽ बैसैत भौजीकेँ कहलखिन-

“कनी कुर्ताक बटम खोलि दिअ।”

“अहिना उनटा-पुनटा बुझै छिऐ!”

पतिकेँ झपटैत भौजी कहि रेखाकेँ आदेश देलखिन-

“पहिने पैरक पैताबा निकालि दियौन, कनियाँ।”

ओना बड़का भैया मुहसँ रंगा रुपैआ-सन मुस्की निकलैत रहैन मुदा मनमे उठि गेलैन पत्नीक बात- ‘अहिना उनटा-पुनटा बुझै छिऐ।’ बजला किछु ने। सभ बात स्त्रीगण लग बाजब उचित नहि। जँ ओकरा नाक नै रहितै तँ की-की ने करैत। मुदा छाती राँइ-बाँइ भेल जाइत रहैन...।

कुर्ताक बटम खोलिते बड़की भौजी राँइ-बाँइ भेल बड़का भैयाक हृदय देखली, देखिते अचम्भित भेली मुदा बजली किछु ने।

देह खलियाइते बड़का भैया बजला-

“कनी लेटरीनो जैतौं आ नहाइयो लैतौं।”

‘एक राकश दोसर नोतल’, भौजी आदेश फेकली-

“कनियाँ, अहाँ चौका सम्हारू हम बाथरूम सम्हारने अबै छी।”

दुनू गोरे–माने साउसो आ पुतोहुओ–अपना-अपना मने खुशी जे खेबेकालक गप ने रस पाबि मिठौंस होइ छइ।

दुनूकेँ खुशी देखि बड़को भैया खुश। परिवार खुश तँ अपनो खुश। जँ खुशी नहि तँ बाजार घुमैकाल ओहिना बाप बेटाकेँ आ माए बेटीकेँ

कोरामे लऽ घुमैत रहैए?

कोठरी छोड़ैक विचार तीनू गोरे करिते रहैथ कि शिव शंकर पहुँचलैन। किनको लजेबाक प्रश्ने नहि। बड़का भैया बड़के भैया भेला, भौजी भौजीए भेलखिन आ रेखा अंगीतेक बेटियो आ कौलेजक विद्यार्थियो...।

कोठरी प्रवेश करिते शिव शंकर बजला- "भाय, केहेन यात्रा रहल?"

जहिना मुर्दाक ऊपर अस्सी मन जारैनक लाद पड़ैत तहिना बड़का भैयाक मनमे अस्सी मन पानि पड़ि गेल रहैन, मिरमिराइत बजला-

"अशुभे रहल!"

भैयाक बात सुनिते शिव शंकर कहलकैन-

"अच्छा, पहिने फ्रेस भऽ जाउ, नहा-खा लिअ तखन निचेनसँ आगूक गप हेतइ। ताबे हम बैसै छी।"

शिव शंकरक मनमे रहैन जे नव-नव रचना अनने हेता, सेहो देखि लेब आ दरबारक कागतो-पत्तर देखब। एक्के वस्तुकेँ एक स्तरसँ गिरौलापर अनेक तरहक दबाब पड़ै छइ। माने, असथिरसँ गिरौलापर नरमो वस्तुकेँ बँचैक सम्भावना रहै छै, जखन कि जोरसँ गिरौलापर कड़ो वस्तुकेँ टुटै-फुटैक सम्भावना भऽ जाइ छइ। बड़का भैयाक स्थिति सएह रहैन...। तँए दबाब देब उचित नै बुझि शिव शंकर चुपे रहला, मुदा रेखाकेँ कहलखिन-

"पान साए नम्बर जर्दा देल पान खुआ दिअ। एक झपकी ताबे मारि लेब।"

जेते काज बड़का भैया अदहा घन्टामे करै छला तेतबे करैमे घन्टोसँ ऊपर लागि गेलैन। जहिना पैरमे जात बान्हि देने वा जहलक डन्टा-बेड़ी भेने जे स्थिति होइत से स्थित रहैन। मुदा से शिव शंकर नै बुझि सकला। कारण, रेखाक स्थिति देखि मनमे आबि गेल रहैन जे रेखा कौलेजमे खेल-कुदमे नम्बर एक छल आइ उठबो-बैसबोमे असोकर्ज भऽ रहल छैन..! अखड़ाहाक खलीफा पहिने डण्ड-बैसक कऽ लपटैए तखन कुश्ती लड़ैए।

तेकर पछाइत छोट-छोट खलीफाकेँ लपटाबैए। पछाइत सवारी कसि परीक्षा लइए। जिनगियोक अवस्था अहिना होइ छइ। बड़का भैया ऐमे चुकला। भोगी-विलासीक परिवार बना लेलैन आ आशामे जीबै छैथ जे चाननक गाछी लगौने छी..!

सोचिते-सोचैत शिव शंकरक आँखि बन्न भऽ गेलैन। भकुआइत ओंघा गेला। बड़का भैयाकेँ पहुँचते बड़की भौजी पनबटी नेने पहुँच गेलखिन। दुनू गोरे पान खेलैन। शिव शंकर पुछलखिन- “अशुभ की कहलिऐ?”

शिव शंकरक प्रश्न सुनिते बड़का भैया जेना हजारो हाथ ऊपरसँ झमान भऽ खसला, खसिते मुहसँ निकललैन- “मिसियो भरि जेकर आशा नै छल से भऽ गेल! मुदा..?”

खेतक अकटा-मिसियाकेँ कियो अन्न मानितो ने अछि आ कियो सागो आ रोटियो बना खाइए। ओना, खेती भलेँ ओकर नै हौउ मुदा ओहो मैदानमे डटल तँ अछिए। आ डटले नहि अछि, जँ कनियोँ नजैर नै रखब तँ जजातेक छातीपर चढ़ि धरतीकेँ अन्नमण्डल बना देत! बाट-घाट रोकने तीर्थ यात्रीकेँ किछु नै बिगड़ै छै, देखै-सुनैक नव-नव स्थान भेटै छइ। मानियौ वा नै मानियौ समैयक शक्ति सबल होइते छइ।

बड़का भैयाक चेहराक क्रिया देखि मने-मन शिव शंकरकेँ होनि जे चेहरा कहि रहल छैन जे जेना धमसुरक चोट लगल होइन!

जटा-जटीन बेंगकेँ जहिना कुटनी कुटि पेटसँ पानि निकालि पानिक संग मुइल बेंगकेँ मटकुरमे नेने गीत गबैत केकरो ऐठाम फेक भरि दिन फौतली सुनैक रस्ता बना लैत तहिना गसिया कऽ शिव शंकर पकड़लैन। मुदा मनमे ईहो होनि जे धमसुरक चोट कनियोँ खड़खड़ाएल नहि! एकाएक एना किए भेल? जाबे अकासमे पानि पानिसँ नै टकराएत ताबे बिजली केना बनतै आ बिजली नै बनत तँ ठनका केना बनत। भलेँ अहाँ ओकरा सोनोसँ अमूल्य बुझैत होइऐ मुदा ने राधाकेँ नअ मन घी हेतैन आ ने राधा नचती। केकरा बुते हएत जे ओकरा पकैड़ हाथमे आनत। ओकरा पकड़ैले गोवरधन जकाँ गोबरक ढेरी बनबए पड़त, तैपर फुलही थारी राखए पड़त तखन जब समय औतै तखन समुद्रसँ करिया हवा उठि अदैल-

बदैल वादल बनि दोसर वादलसँ टकराएत आ ओही टक्करसँ बिजली बनि ठनका बनत। तखन जा कऽ ओइ थारीपर ठनका खसत। केतबो ठनका जोर करतै मुदा गोबर की ओकर शक्तिकेँ शक्ति मानतै? रस्ता रोकतै? भलेँ अश्वमेघ युद्ध किए ने हौउ..!

जहिना छातीपर बैस कण्ठ पकैड़ बलजोर मुहसँ बजबा लैत, तहिना बड़का भैया बजला-

"आशाक विपरीत अपना हाथे केलौं।"

बड़का भैयाक बात सुनि शिव शंकर विर्ड़ोक मोड़मे पड़ि गेला। पुछलखिन-

"एना किए?"

"तीन गोरे कारबारी छेलौं। जइमे दू गोरे शिकारी छेलौं आ एक गोरे अनाड़ी छला। हुनका लिए दिन-राति बारहे-बारहे घन्टाक होइ छै, सएह बुझैत रहथिन। ओना जहिना आदि ऋृषिका सबहक परिवारकेँ जँ कोनो परिवार कहि देबै तँ ई जल्दिवाजी होइत। इंजिन निर्माताक परिवार जँ इंजिन निर्मितक शक्ति नै राखत तँ वंशक रक्षा केना हेतइ?"

"हँ, तखन?"

"प्रस्ताव देलिऐ। दोसरो प्रस्ताव एलइ। मुदा जेकर कल्पनो ने छल से भेल!"

"से की?"

"प्रस्ताव दइते जे दोसर छला, जिनकासँ मिसियो आशा नै छल जे ठनका जकाँ बनि जेता। जहिना अकासमे उड़ैत गीध अपन सहयोगी चीलकेँ देखा दैत आ हर्ड़ी-बिदेशरक मकड़क मेलामे अरबा चाउरक चिक्कसमे इनहोर देल पानिसँ बनल रोटी आ तैपर पँचफोरना देल अल्लूक दमक संग हाथमे रोटी लऽ मेलो देखैत आ खेबो करैत रहैए आ तखने जहिना हाथक रोटी झपैट चील पोखरिक महारक पीपरक गाछपर बैस कुचड़ए लगैए, तहिना भेल। तेना झपटलक जे छाती छँहों-छित्त भऽ गेल। केतबो अपनाकेँ असथिर करी मुदा नै भऽ सकल। अन्त जे भेल से संदेश तँ समाजमे जेबे करत। मुदा संदेशो तँ सनेसे छी किने, केमहर केहेन

बिलहाएत से के कहलक।”

“आब?”

“देखार होइ दुआरे बहुमत नै हुअ देलिऐ। सर्वसम्मैत कऽ जान बँचा लेलौं।”

सुनि दुनू गोरे मर्माहत भऽ गेला। मुदा दुनूक मनमे दू तरहक विचार नाचए लगलैन। बड़का भैयाक मनमे नचैत रहैन जे ई उमेर सन्यासक छी, हमरा कोन ऐ दुनियाँ-दारीसँ मतलब अछि जे अनेरे...। आ शिव शंकरक मनमे उठैत रहैन जे जाधैर समय नै पकैड़ चलब ताधैर समैयक संग नै चलि सकब। विकासोक प्रक्रिया छै, जइमेमे गति-मति संगे चलै छइ। मुदा से नै भेल।



शब्द संख्या: 2410

(‘बलजोर’ कथा डॉक्टर प्रेम शंकर सिंहकेँ समर्पित..)

बेटी हम अपराधी छी

सही समयसँ साल भरि पहिनहि मनोहरकेँ सेवा मुक्तिक चिट्ठी ऑफिसमे थम्हा देलकैन। थम्हबैक कारण रहैन काजक गजपटी। काजक गजपटीक कारण छेलैन मनक सन्ताप। ऑफिसक सभ मानि गेल जे मनोहरक मन चढ़ि गेलैन तँए समुचित काज करइ जोग नै रहला।

ऑफिसेक कुरसीपर मनोहर बैसल रहैथ कि चपरासी आबि हाथमे चिट्ठी थम्हेलकैन। पहिने तँ नै बुझि सकला जे सेवामुक्त भऽ रहल छी मुदा पढ़ला पछाइत केकरोसँ पुछौक जरूरत नै रहलैन। पत्रमे कोनो लेन-देनक कारण नहि, बतहपनीक कारण स्पष्ट लिखल रहैन। पत्र पढ़िते जहिना बर्खा होइकाल अनासुरती मेघ ढनढ़नाए उठैए तहिना एकाएक मनोहरक मनमे उठलैन। जेकरो कहबै सेहो बताहे बुझि सुनबो ने करत! तखन, कहबे किए करबै? अनेरे मुहोँ दुरि करब..!

मनोहरक मन जेना बेर-बेर चनकए लगलैन। टुकड़ी-टुकड़ी भेल मनमे उठलैन जे सभटा कागत-पत्तरकेँ छीट-छाटि दिऐ, टेबुल-कुरसीकेँ उनटा-पुनटा दिऐ आ निकैल जाइ। मुदा मनोहरक मनक लगामकेँ बुधि पाछू खिंचलकैन। बदलैत सोच विचार केलकैन जे एक तँ लिखतन बताह बनाइए देलक तैपर एहेन काज जँ करब तँ थियोरी प्रेक्टीकल भऽ जाएत, तखन बतहपनीक सजाक हकदार बनैमे केते देरी लगत?

कुरसीसँ उठि मनोहर सोझहे घरमुहाँ भऽ गेला। डेराक सुधिए ने रहलैन जे भड़ो-किराया फरिछा लितैथ। मनोहरक बेसुधि मनमे बेठेकान सोच लगले उठैन आ पानिक बुलबुला जकाँ फुटि जाइन।

गामक सीमा परहक बड़क गाछ देखिते मनोहरक आँखिक सोझमे भकइजोत जकाँ भेलैन। भकइजोतेमे देखलैन जे यएह अपन गाम छी। मनमे अप्पन अबिते पएर जवाब देलकैन-

“आगू नै बढ़ब। गाममे मुँह देखबैबला नै छी।”

मुदा तपाएल मुँह लगले पएरकेँ कहलकै- “ईह बुड़ि रे, मुँह देखबैबला नै छी! ई समाज मुँह देखबैबला नइए। हरिदम विवेक-विवेकक भाँग घोरि-घोरि इनारेक पानिकेँ निशाँए देने अछि आ निरलज जकाँ बजैमे लाजे ने होइ छै, सुझबे ने करै छै जे जखन पाइक हाथे शिक्षा बिकाइए तखन ओ शिक्षा पाइबलाकेँ हएत आकि बिनु पाइबलाक! जइ समाजमे रोग-वियाधि पाइक हाथे छोड़ौल जाइ छै तइ समाजमे बिनु पाइबलाक गति-मति की हेतइ! रौद-बसात, जाड़, पानि-पाथरक रक्षा केना करत। अदौसँ अबैत नर-नारीक सम्बन्धक बीच जखन दान-दहेज एहेन बड़का मोनि घारक पेटमे फोड़ि देने अछि, जइमे केते हाथियो-घोड़ा फँसि जान गमा रहल अछि, तइ मोनिमे अदना-अदनीक अह्लादे केतै कएल जा सकैए। महींसक आगू वीणक कोन मोल छइ।”

मने-मन मनोहर घर दिस बढ़ैक हूबा करैथ मुदा पएर उठैले तैयार नै होइन। जँ पएर थोड़े तैयारो होनि तँ आँखि साफे नहि। धरतीपर ओंघराएल मनोहरक सभ सुधि-बुधि हेरा कऽ छिड़िया गेलैन।

मोबाइलक जुग रहने समाचार पसरैमे देरीए किए लगत। गाम-समाजक बच्चा-बच्चा बुझि गेल जे मनोहर बताह भऽ गेला, नोकरीसँ निकालि देलकैन। पेंशनो आने-आन लूटतैन।

सुनयनाकेँ पहिने बिसवास नै भेलैन। आइ धरिक जे पति-प्रेम मनोहरसँ भेटल छेलैन ओ अनकासँ बहुत बेसी छेलैन। मुदा जानकी बेटीक काँच बुधि मानि गेल रहै जे पिता पागल भऽ गेला, नोकरीसँ भगा देलकैन।

गामेक लोकक जेरक संग दुनू माय-धी विदा भेली। लोकक बीच रंग-रंगक घौचाल चलैत रहइ। कोनो नीको मुदा बेसी अधले। घौचाल सुनि दुनू माय-धीक मन विचलित हुअ लगलैन। बेटीक मुँह सुनयना निहारए लगली आ माइक मुँह जानकी। पोखरिक घाटपर भुरही-माछ जहिना रंग-रंगक चाल चालि दैत तहिना दुनू माय-धीक कानमे रंग-रंगक चालिक बात पड़ए लगल...।

कचकूह मन जानकीक तँए बेसी विचलिते होइत गेल। बताह भऽ बाबू छोड़ि पड़ाए जेता, समाज सहजे हमरा सन-सनकेँ भगाइए रहल अछि। तखन माइक की गति हएत..!

अधबटियाक पछाइत सुनयनोक मन मानि गेलैन जे पति पगला गेला। जानकीपर नजैर अँटका मने-मन सोचए लगली जे बाइस बर्खक कुमारि बेटीक मुँह सिंह दुआरिपर केना देखब? की दुनियेँ उजैर रहल छै आकि उजाड़ि चढ़ा देलक अछि? एको बीत धरती नै बँचल अछि जेतए नोरक धार सुखौल जाएत..!

जहिना दंगलक खलीफा पटका चारू नाल चीत अखड़ाहापर खसैए तहिना मनोहर बड़का गाछक निच्चाँ जिनगीक अखड़ाहापर चारूनाल चीत भेल पड़ल मने-मन सोचैत रहैथ- अपन जिनगीक हारिक कारण अपने छी तँए पत्नियो आ बेटियो-ले अपराधी छी! मुदा फेर मन कहैन जे अपराध कथी केलौं जे अपराधी भेलौं?

भवसागरमे डुमल मनोहरक शरीर चेतनशून्य छेलैन। तखने पत्नियोँ आ बेटियो लगमे पहुँच मुँह निहारए लगलैन। मँह देखिते दुनूक मन कहलकैन- मुँहक रूखि कहाँ कहै छैन जे कोनो रोग अछि। रणभूमिक हारिक रोग आ बिमारीक रोग तँ अपन बात अपने चिकैर-चिकैर कहै छै किने जे की छी...।

बन्न मुँह देखि मनोहरक छातीपर दुनू गोरे अपन-अपन सती हाथ रखलैन। छातीक धुकधुकी समतूले बुझि पड़लैन। आखिर किछु छैथ तँ एकक पिता, दोसराक पति छैथ किने। मुदा दुनूकेँ अपन-अपन बिसवासमे शंका भेल। शंका होइते एक-दोसराक मुँह सुनयनो आ जानकियो देखए लगली। देखिते आँखि-आँखिक बीच जेना पुल बनि गेल। सुनयनाकेँ सान्त्वना दैत जानकी कहलक-

“माए, बाबूजीक हृदय तँ ओहिना पवित्र देखै छिऐन!”

कदमक गाछक झूला जकाँ आस मारि सुनयना बजली-

“बेटी, पुरुखक छातीपर बहुत भार होइ छइ। जेकरा माथपर जारैनक बोझ आकि अन-पानिक बोझ पड़बे ने कएल ओ ओइ बोझ उठबैबला छातीक धुकधुकी गनि केना सकैए। से नहि तँ छातीए डोला कऽ देखहुन जे मुहसँ केहेन बकार निकलै छैन।”

माइक विचार सुनि जानकी आरो जाँच-पड़ताल करब नीक

बुझलक। जहिना कलियाएल अड़हुल फुलाएल रहैए तहिना जानकीक मन पिताक छातीसँ ससैर हाथ दिस बढ़लैन। केना नै बढ़ैत कहुना अछि तँ छातीक ऊपरेसँ ने लटकल अछि। जानकी बाजल-

“माए, से नहि तँ छातीक धुकधुकीसँ अपनो मन धुकधुकाइते अछि। हाथक नारी पहिने देखि लहुन।”

नारी तँ नारी छी, एक पुरखियाह। छाती जकाँ दुनू गोरे एक्केबेर थोड़े पकैड़ सकै छेली, नारीकेँ तँ बेरा-बेरी देखए पड़त, मुदा पहिने के देखत? दुनूक बीच ओझरी लगि गेलैन। एक पुरुख हजार रूप! की मनोहर जानकियो-ले वएह छैथ जे सुनयना-ले छथिन? मुदा की मनोहर सुनयनाक छिऐन आ जानकीक नहि? तखन? तैबीच जानकी सुनयनाकेँ कहलक-

“माए, छातीक धुकधुकी तँ जोरसँ चलै छै तँए गनल भऽ जाइए मुदा हाथक नारी आइ धरि कहाँ गनलौं?”

बेटीक बात सुनयनाकेँ सोहनगर लगलैन। ऐठाम कियो आन अछि, जे ऐछो ओ तमसगीरे अछि, उकटा-चाल करत। बामा हाथसँ तरहत्थी पकैड़ सुनयना अपन दहिना हाथ मनोहरक वाजूपर देलखिन। मनोहरक वाजूपर हाथ पड़िते सुनयनाक कानमे झड़झड़ाए लगलैन-

“सुनयना! बहुत आशा जिनगीसँ केने छेलौं, मुदा टुटि कऽ सभटा छिड़िया गेल। समाजक डर हमरा नै होइए मुदा अहाँ पत्नी छी तँए कहै छी। बताह बना बतहपनीक फरमान हाथमे धरा देलक। कमेलहो खेलक आ ऐगलो कमाइ मारलक। जखने घरसँ निकलब धिया-पुता जानि-जानि देहपर कियो गोला फेकत, कियो काँट फेकत, कियो गोबर माटि फेकत! केकरा की कहबै, हमरा बातकेँ कियो कान धड़त? आइ दस बर्खसँ जानकीक बिआहक पाछू पड़ल छेलौं, मास दिन पूर्व जवाब भेटल जे वैवाहिक सम्बन्ध भंग भऽ गेल!”

सुनयना अपन कानकेँ आरो ठाढ़ करैत पतिक वाजूमे सटौलैन। मनोहरक वाजूमे कान सटिते धड़धड़ाइत आवाज आबए लगल-

“हम ओइ चुगलासँ पुछै छिऐ जे कोन बुधिए जमाए बनि एते सेवा करौलक! बाइस बर्खक बेटीक मुँह देखल जाएत। जखन घरक भार

उठबैमे अक्षम भऽ गेलौं तँ अनेरे जीविए कऽ की करब। मुदा परिवार? सेहो कहाँ रखि पौलौं! दस बर्खक अवस्थामे बेटी कन्यासँ कनियाँक रूप धारण करए लगैए तैठाम जानकीक बिआहक चर्च पत्नी दस बर्ख पूर्व बारह बर्खक अवस्थामे केलैन। अपनो ओइ पाछू पड़लौं। काजोक अगुताहत नहियेँ बुझि पड़ल किएक तँ समयानुसार परिवर्त्तन हेबेक चाही। बीस-बाइस बर्खक बच्चिया समाजक कुमारि बच्चिया छी तँए समाजमे केकरो चौह अलगबैक अधिकार नइ छै जे ओकरा अलग बुझए। जँ जमीनो बेचि जानकीक बिआह कऽ लइ छी तँ की समाज भार उठौत जे एहेन काज आगू नै हएत?”

विस्मित भेल सुनयनाकेँ देखि जानकी बाजल- “माए, कनी हमरो बाबूक नारी देखए दे।”

बेटीक बोल सुनि सुग्गाक लोल सुनयना निहारए लगली। निहारिते मनमे उठलैन- यएह अवस्था छी जखन लोक सती बनैए, यएह अवस्था छी जखन लोक वेश्या बनैए आ यएह अवस्था छी जइमे लोक मातृ-पितृ भक्त बनि भगवत भजन करैए। मुदा जानकी..?

पतिक हाथ सुनयना जानकीक हाथमे दैत कान ठाढ़ कऽ मुँह निच्चाँ गोड़ि लेली। पिताक नब्ज पकैड़ते जानकीक कानमे घनघनाइत आवाज आएल- “बेटी जानकी! हम अपराधी छी। हमरासँ अपराध भेल।”

“नइ बाबूजी नहि! सौंसे दुनियाँ भलेँ कहए मुदा अपन जुआन नै निकैल सकैए। चौथारि सीमा धरि आबि अहाँ परिवारक सेवा करैत रहलिऐ। दुनियाँ बौक कहए कि बताह, कहह दियौ। मुदा अपन इमान कखनो धरमसँ विचलित नै हएत। हम मिथिवाला छी, हमरा वाजूमे शक्ति अछि। जहिना अपन कालखण्ड अपने इमानदारीसँ टपलौं तहिना ऐगला खण्ड हमरो छी। अपना दरबज्जापर बैस भगवत भजन करैत रहब, देहक चिन्ता नै करब। हमहूँ तँ सन्ताने छी किने। बेटा रहैत तँ बहिन बनि भार दैतिऐन। मुदा जखन भाए नै अछि तखन तँ हमहीं ने बेटा-बेटी भेलौं। ई प्रश्न हमरो भेल किने। बिआह हएत सासुर बसब, मुदा अहाँकेँ ऐ अवस्थामे छोड़ब केते उचित हएत। नीक-बेजाइक भार के उठौत। अपना जीबैत अपन माए-बापक एहेन गति भऽ जाए जे अनसोहाँतो-सँ-अनसोहाँत भऽ

जाए, ई दोख केकरा सिर सवार हएत। मुदा समाजो तँ तेहेन अछि जे छातीक कोन बात कोढ़-करेज धरि खोखैर-खोखैर खाइते आएल आ खाइते रहत। हे शिव! एहेन धनुष उठबैक भार जँ अपने नै लेब तँ की ई समाज उठा सकैए? की मिथिलांगना अखनो धरि ई नै बुझि सकली जे माए-बाप जनमदाते टा नहि छैथ, जिनगीक हारि-जीतक सूत्रधार सेहो छैथ, जँ से नहि तँ सासु पुतोहुकेँ भिखमंगनी बेटी कहि किए मुड़ी गोंतबै छथिन। जरूरत अछि समयानुसार शक्ति उपका संचय करैक। जाबे तक से नहि हएत ताबे तक पुरुखक नजैर निच्चाँ केना कऽ पाबि सकै छी। देखए पड़त अपन भूत आ भविस। जाधैर अपन भूत-भविस देखि नै लेब, अपन-अपन बीर्तमानक लक्ष्मण रेखा खींच रक्षाक भार स्वयं नै उठा लेब ताधैर ऋृषिका, सती, साध्वी, पतिव्रता आदि-इत्यादिक शब्दक साकार जिनगी केना बनि सकत?"

जहिना नट-नटीनक नाचमे दर्शक चारू दिस घेरि बैसैत आ बीचमे दुनू अपन जिनगीक राग अलापैत रहैए तहिना समाजक लोकक बीच मनोहर, सुनयना आ जानकी अपन-अपन जिनगीक राग अलापि उठि कऽ घर दिस डेग बढ़ौलैन। मनोहरक दुनू हाथ पकड़ने आगू-आगू सुनयना-जानकी आ पाछू-पाछू धिया-पुतासँ चेतन धरिक डेग बढ़ए लगल।

घरक मुड़ेरा देखिते मनोहर दुनूक हाथ झमाड़ि कऽ छोड़ौलैन आ बजला-

"बिसवासघात..! बिसवास घाती छी..! समाजमे जेहने मनुक्ख रहत तेहने ने बनत। जे बिसवास देने छल सएह गर्त्तमे खसा पागल बना देलक! नहि सुनत दुनियाँ तँ नहि सुनह मुदा जाबे घटमे प्राण-घटवार रहत ताबे यात्रीकेँ कहबे करबै, कहिते रहबै।"

सातम दसकमे मनोहर जिला-कार्यालयमे किरानीक नोकरी शुरू केने छला। समाजक पहिल विद्यार्थी मनोहर जे प्रथम श्रेणीसँ मैट्रिक पास केलैन। कौलेज लगमे नै रहने आगू पढ़ैक आशा तोड़ि जिनगीक मैदानमे उतरला। मुदा रिजल्टक कागत आँखिक सोझ अबिते मनमे उपैक गेलैन जे जहिना प्रथम श्रेणीक फल भेटल तेहने फलक गाछ रोपि ओकर सेवा टहल जिनगी भरि करैत अपनो आ समाजोकेँ नीक फल खुएबैन।

एक तँ सरकारी कार्यालयमे काज नै जे पढ़ल-लिखल सबहक अँटाबेस होइत, दोसर स्कूलो-कौलेज कम रहने सभ पढ़ियो ने पबै छल। मुदा मनोहरक संग संयोग नीक बैसलै। जिलाक कृषि विभागमे किरानीक नोकरी भऽ गेलइ। जहिना दशमीमे दुर्गास्थानमे साँझ दिअ जाइसँ पहिने अपन-अपन घरक भगवती-आगू साँझ दइए तखन दसनामा देवालयमे जाइए तहिना मनोहर नोकरीपर जाइसँ पहिने माता-पिताक असीरवाद लऽ लेब जरूरी बुझलक। खुशी तीनू गोरेक मनमे रहैन, मुदा तीनूक तीन रंगक। किए ने तीन रंगक रहितैन। हजारो रंगक फूलमे हजारो रंगक सुगन्ध होइ छै आ सभकेँ अपन-अपन सुगन्ध सिरजन करैक जहिना हक छै तहिना पसारैयोक छइहे।

दलानक ओसारपर बैस सत्यदेव कोदारिमे पच्चर लगबैत रहैथ। मनोहरकेँ खुआ आँगनमे माए असीरवाद देलक। आँगन-दलानक बीच मनोहरक मनमे उठल- ओह! माएकेँ तँ कहि देलिऐन जे नोकरीपर जाइ छी, असीरवादो देलैन जे आब तोंही सभ ने ऐ घरक खुट्टा भेलह। हम सभ तँ पाकल आम भेलौं। मुदा से नहि, जहिना माइक एक रूप छैन, पिताक एक रूप छैन तहिना एकटा संयुक्तो रूप तँ छैन्हे। तँए दुनू गोरेक ओइ रूपकेँ प्रणाम कऽ असीरवाद लेब मनोहरकेँ मनमे आएल। डेढ़िए-पर सँ बाजल- "माए, कनी एमहर आ।"

शुभ काजमे विलमैक दोख अपनापर माए केना लेती, तँए अँइठे हाथे दरबज्जापर पहुँच मनोहरकेँ पुछलखिन- "की कहलह?"

तैबीच पिताकेँ गोड़ लागि मनोहर बाजल- "बाबू, नोकरी करए जाइ छी।"

'नोकरी' कानमे पड़िते सत्यदेवक मन खुशिया उठलैन। मुदा सुगन्ध युक्त फुलवारी आ बिनु सुगन्धक फुलवारीक हवा जहिना दोरस रहैत तेना सत्यदेवकेँ नहि बुझि पड़लैन। असीरवाद दैत मनोहरकेँ कहलखिन-

"बौआ, डिक्शनरी जकाँ जँ तीनियोँ-टा शब्दक कोष बना लेबह तँ मुइला पछाइतो बेर-बेर दर्शन होइते रहत, आ भरल-पूरल देखि आत्मा जुड़ाइते रहत।"

सिनेह सिक्त पिताक शब्द सुनिते मनोहर सहमल, सहैमते सुहकारैत बाजल- “ओ तीन शब्द की छिऐ?”

“बौआ, पहिल- झूठ नै बजिहह, दोसर- केकरोसँ एक्को पाइ कहियो डाँरिहक नहि आ तेसर- दरबज्जापर जे मनुक्ख-शक्लक आबैथ, हुनका एक लोटा पानिक आग्रह जरूर करिहौनु।”

पिताक मुँहक तीनू शब्दकेँ गुरु-पित वचन बुझि तत्काल मनोहर गीरह बान्हि रखि लेलक, रखबो जरूरी छेलइ। एगारह बजे ऑफिस पहुँचक छेलइ। मुदा पिताक वचनकेँ हास्य-कोषमे नहि हहासक डरसँ चाइलेंज-कोषमे लऽ अंगीकार केलक।

दुरगमनियाँ कनियाँ जकाँ मनोहर अपन उपस्थिति कार्यालयमे दर्ज करा, सभकेँ प्रणाम-पाती करैत कोहवर जकाँ असकरे कुरसीपर बैस गेल। कोनो काज नहि देखि चुनौल तमाकुलक गीरह जकाँ गामक गीरह खोलए लगल तँ भक्क-दे पिताक असीरवाद मोन पड़लै। होइतो अहिना छै जे जखन रॉकैट तैयार भऽ उड़ैक रूप जखन धारण करैए तखन धरती छोड़ैसँ पहिने जहिना उनटा जाँच-पड़ताल होइ छै तहिना मनोहरो अपन जिनगीकेँ उनटा जाँच करए लगल मुदा पैछला कोनो बात मन नै पड़लै, पहिने पिताक वएह तीनू शब्द मोन पड़लै जे तीनू प्रश्न बनि जिनगीक आगूमे ठाढ़ रहइ। मनमे उठलै- जँ अपन प्रश्नक जवाब दइ-जोकर नै छी तँ कोनो लजेबाक बात नहि, जे अपन कमजोरी केना सुहकारी। जाबे तक कोनो खेतमे नव सिरासँ जोति नव बीज नै देल जाइ छै ताबे नव फलक आशा केना हएत?

कुरसीपर बैसल मनोहरक मनमे पिताक असीरवादक तीनू शब्द तीन प्रश्नक गाछ रूपमे ठाढ़ भेल। कुशल माली जहिना सभ फूलक अपन-अपन पतियानी हियबैत तहिना मनोहरो अपन तीनू शब्दक पाँति हियाबए लगल। मुदा सतरंगा मकान बनौनिहार इंजीनियर जकाँ गुनियाँ-परकालसँ नइ गुनि, संकल्प बुझि विचारए लगल। ओना, विचारक खण्डन-मण्डन जेते बेसी होइ छै ओकर बीज-स्वरूप दूधक मक्खन जकाँ ओते बेसी भेटबो करै छइ। मुदा मनोहरकेँ मनमे उठि गेलै- मात्र दू घन्टा ऑफिसमे रहैक अछि। डेरो-डन्टा ठीक नहियेँ भेल अछि, तीन घन्टाक रस्ता काटि

गामो जेनाइ अछि। तँए जेते खण्डन-मण्डन हेबा चाही तेते तँ नहि कऽ सकल, मुदा तात्विक विचार जरूर केलक। ओना हनुमानजी जकाँ कखनो अकास मार्गपर नजैर पड़ै तँ विहाड़ि जकाँ भऽ जाइ, मुदा लगले महावीर जकाँ बदैल लिअए। 'झूठ नै बाजब।' कोनो बड़का प्रश्न थोड़े भेल। नान्हिटा प्रश्न अछि। ने हमरा एक सेलक जीवाणुक इतिहास देखैक अछि आ ने सोनाक लंका। चौबीस घन्टाक दिन-रातिमे जे समैयक संग अबैत जाएत आ विवेक कहैत जाएत तेतबे करबाक अछि...। मनोहरकेँ मनमे खुशी भेलइ। जहिना तीन प्रश्नक उत्तरमे एक प्रश्न हल भेने पास नम्बर चलि अबैत तहिना मनोहरक मनमे पासक आशा जगलै। आशा जगिते पास बदैल पासापर दोसर आस मारलकै जे 'दोसरकेँ नै डाँरब।' मुदा ईहो बड़ भारी प्रश्न नै बुझि पड़लै, मन कहलकै- अपन खर्चमे कमी-बेसी भेनहि ने लोक करजदार होइए आकि कर्जदाता मुदा जँ सरपट चालि पकैड़ चलब तँ किए दुनूमे सँ कियो भेँट हएत। मुदा समाजक बीच परिवारकेँ रखैक जखन खगता मनमे एलै तँ सोल्हन्नी सरपट नै देखि मनोहरक मन अँटकल मुदा लगले घोड़ा जकाँ मन हिहिएलै- 'खगताकेँ जेते तक पचा सकब ओते पचाएब, आ बढ़ता-ले समाज अछि।'

दू-तिहाइ अंकक आशा नहियोँ देखि मनोहरक मन मानि गेलै जे कोनो बेसी ओझरी नहियेँ अछि। मुदा तेसर प्रश्न- 'दरबज्जापर एक लोटा पानि' पर जखन नजैर पड़लै तँ मन ठमैक गेलइ। अपने घरसँ तीन घन्टाक रस्ता दूर रहब, दरबज्जापर बारह बजे दिन आकि बारह बजे राति जँ कियो आबि जाथि तखन अपना बुते की हएत? अखन माता-पिता जीबै छैथ तँ अपन दुआर-दरबज्जाक मुड़ेरा अकास ठेकेता मुदा परोछ भेला पछाइत की करबै? जँ अखन नै विचारि बाट पकैड़ लेब तँ बेर-बिपैत पड़लापर तँ सहजे लोकक बुधि हेरा जाइ छै, तखन केना विचारि पाएब..?

वस्त्रक एक-एक सूत बिलगा-बिलगा जखन मनोहर देखए लगल तँ बुझि पड़लै जे प्रश्न भारी कहाँ अछि। पीसक हले-हल बनबैक जन्मभूमि मातृभूमि भेल आ सेवाभूमि कर्मभूमि भेल। मातृभूमि कर्मभूमि होइत चलए तेतबे विचारैक अछि।

नोकरी भेलाक पनरह बर्खक पछाइत। मनोहरक माता-पिता मरि

गेल छेलैन। अखन धरि मनोहर अठवारे गाम-अबै जाइ छल। गामक तसवीर तँ तेना भऽ नै सुधरल मुदा अपना घरसँ खा-पी कऽ बच्चा बी.ए. तक पढ़ि सकैए। घन्टा बीतैत-बीतैत डॉक्टर ओइठाम पहुँच सकैए। तखन गाम छोड़ब-तोड़ब नीक नहि। जहिना माता-पिताक समय अबै जाइ छेलैं तहिना ऐगलो परिवार सेने रहब...। यएह सोचि मनोहर अपन परिवारकेँ गाममे रखलैन।

जोड़ा बरदक जोतबला परिवार सत्यदेवक छेलैन। ओना, जोड़ा बरदक जोतक अर्थ विकृत भऽ गेल अछि। विकृत ई भऽ गेल अछि जे साए-साए बीघा जमीनबला खुट्टा उसरन कऽ लेलैन। तर्क देता ट्रेक्टर-थ्रेसरक मुदा अपने परदेशसँ अगहने-अगहन गाम पहुँचता! से नहि, सत्यदेव मेहनती गिरहस्त छला। गिरहस्तीक सभ रूप सजौने छला। कलमी-सरही आमक गाछी पाँच कट्ठा अखनो छैन्हे। दू कट्ठा बँसबाड़ि, एक कट्ठा करजान, पाँच कट्ठा घराड़ियो छैन्हे। तीमन-तरकारीसँ लऽ कऽ बाड़ी-झाड़ी सेहो छैन्हे। पानिक अपन बेवस्था केनहि छैथ। तेतबे नहि, जेहने सासुक चालि-चलैन छेलै तेहने सुनयनोक भऽ गेलैन। गिरहस्तियोक काज सत्यदेवकेँ बँटाएले जकाँ रहैन। अढ़ाइ बीघा बाधक खेती अपन रहैन। तीमन-तरकारी, बाड़ी-झाड़ी आ फुलवारी-फलवारीक भार पत्नीपर रहैन। जे सुनयनाक हृदयक रूप बनि गेलैन। माने, सासु-ससुरकेँ परोछ भेने घरक सोल्हनी भार सुनयने उठा नेने छेली। सुनयनाक अभ्यन्तर कहैन जे ऐ घरक सोल्हन्नी कर्ता-धर्ता अपने छी। तेकरा जँ अपना जकाँ नै रखि बिनु आड़ि-मेड़क घर बना लेब तखन किए कहै छिऐ जे नारीक शोषण होइए। की एहेन नारी नै छैथ जे पुरुखसँ मालिश करबै छैथ? मुदा से नहि, ई भेल गप-सप्प...।

जिला कार्यालयमे की खाली सरकारीए काम-काज होइए आकि जिला भरिक कथा-कुटुमैती, गाए-बरद आ महींसक खरीद-बिकरीक संग राजनीति, कूटनीति, छलनीति, दुर्नित इत्यादि सभ कथुक जिला छीहे। भलेँ कामकाजी लोक काजक औगताइमे तारिकोपर जेता मुदा पाछूसँ वारंट नेने औता। मुदा तेतबे तँ नइ अछि, कचहरी जाइ छी, भरि दिन

केतए बैस समय गमाएब। तइसँ नीक किए ने पूर्बा हवाक गरपर बैस गाँजाक गन्ध पसाइर सभ गजेरीकेँ एकठाम समेटब नीक। एक चेहरा अनेक रूप दुनियाँक नव हाल भइये गेल अछि। के अपराधी आ के अपराध रोकिनिहार? ई विचित्र स्थिति अछिए। जँ दू-तीन-चारिक जोगकेँ खिचड़ी कहब तँ चाउर, दूध, चीनी आ मसालाक जोग खीर केना भऽ गेल? जँ से नहि, चाउर-दालि आ अल्लू-पानिक बीच चीन्नियोँ दऽ दिऐ तखन की हएत..? तँए सोझहे नून-चीनीक बात नइ अछि।

सिंचाइ विभागक बड़ाबाबू छला जुगल किशोर। आब सेवा निवृत्ति भऽ गेला अछि। इलाकाक एक्के जातिक नहि, अधिकांश जातिक पजियारीक पेशा सेहो अपनौने छला। कार्यालय सभमे अहिना होइ छै एक चिन्हारे भेने तीन दिनमे हजार चिन्हरबा भऽ जाइ छइ। सरकारीए काजक भाषामे जुगल किशोर निपुण नहि, घटकैतीक भाषाक सेहो पाकल पड़ोर छला। हुनके भाँजमे मनोहर पड़ि गेला।

जखने जानकी एगारहम बर्ख टपि बारहममे पएर रखलक तखने सुनयना मनोहरकेँ जानकीक बिआहक भार सुमझा देलखिन। अखन धरि मनोहरकेँ कथा-कुटुमैतीक बोध नहि। भाँज लगलैन जे जुगल-किशोरक हाथमे छपड़िया पैकार जकाँ साइयो जोड़ा बरद-गाए रहिते छैन। जिला कार्यालयमे मनोहरकेँ अपन पहचान छेलैन। जइसँ काजक बोझो कम रहै छेलैन। एक दिन चारि बजे छुट्टी होइते जुगल किशोरसँ भेँट करैत मनोहर अपन बात जानकी बिआहक रखलैन। जेना जुगल किशोरकेँ जीए-पर रखल रहैन तहिना मनोहरकेँ कहलखिन जे कृष्णकान्त बी.ए. पास कऽ नोकरी-ले वौआइए, मुदा लेन-देन दुआरे काज नै भऽ पबै छइ। से जँ अहाँ अपनेसँ जा कऽ कहिऐन तँ ओहिना–माने बिनु लेन-देनेक–काज भऽ जेतैन आ अहूँकेँ बिआहमे लेन-देनक भार नै पड़त।

मनोहरक मन मानि गेलैन जे एक परिवारकेँ ठाढ़ होइक प्रश्न छै से जँ कहलासँ भऽ जेतै तँ उचित-उपकार दुनू भेल। अपनो काज ससैर जाएत। ओना, बीचमे एकटा बाधा ठाढ़ भेल, ओ ई जे पहिने नोकरी होइ आकि बिआह। घटकैती भाषमे जुगल किशोर कहलखिन- "मनोहर बाबू,

अहूँ सभ दिन कागतेमे ओझराएल रहलौं, एतबो ने बुझै छिऐ जे जइ घर बेटी जाएत तेकरा घरो ने छइ। दू-चारि मास कमा कऽ घर बनौत तखन निचेनसँ बिआह हेतइ। अखन एगारहे-बारहे बर्खक बेटी अछि, आब कि कोनो ओ जुग-जमाना रहलै, आब तँ बीस-बाइसक चलैन भऽ गेल अछि। नीको अछि।”

सोझमतिया मनोहर जुगल किशोरपर सोल्हनी बिसवास कऽ लेलैन। समय बीतैत रहल, बीतैत रहल...। मनोहर निचेन रहैथ जे बीस-बाइस बर्खक बीचक काज टरि गेल।

स्थायी रूपेँ जखन कृष्णकान्त बेवस्थित भेल तखन जुगल किशोर अपन बेटीक बिआह कृष्णकान्तसँ पाँच लाख नगद गनि करा लेलैन। कृष्णकान्तो अपन पूर्व जन्मक कमाइ बुझलक। एक पट्टीमे नोकरी, दोसर पट्टीमे पाँच लाखक संग कनियाँ। के हमरा सन भागमन्त हएत। जानकी जखन बाइसम बर्खमे पहुँचल, तँ सुनयना अन्तिम वारनिंग मनोहरकेँ देलखिन। तखन मनोहरकेँ चाँकि जगलैन। धर्म-कर्म बुझि मनोहर जुगल किशोरक गाम पहुँचला। तीन साल पहिने जुगल किशोर सेवा-निवृत्त भेले रहैथ। दरबज्जापर बैसल जुगल किशोरक मन मनोहरकेँ किछु मोट बुझहेलैन। मुदा अपन काज तँ पहाड़ी इलाकामे लोक गदहो चढ़ि कऽ लइए। खाएर, हमहूँ कोनो कुटुमैती करए थोड़े एलौं जे मान-रोख रखब। काजे एलौं काज करब जाएब तैबीच समैये कखन बँचत जे पहुनाइ करब। बुढ़ियो बाघीन तँ फेर बाघीन छिऐ किने। मनोहरकेँ देखिते जुगल किशोर चपाड़ा दैत अभिवादन केलकैन-

“आउ-आउ मनोहरबाबू! आब तँ भेँटो दुरलव, केमहर-केमहर..?”

मनोहर कहलकैन-

“जानकी बाइस बर्खक भऽ गेल, सएह काजे आएल छी।”

अखन धरि मनोहरकेँ नै बुझल जे कृष्ण कान्तक बिआह जुगल किशोरेक बेटीसँ भऽ गेलैन। मुदा ई दुनियाँक खेल छी जे दुनियाँमे रहितो लोक दुनियाँकेँ नै जानि पबैत अछि।

जुगल किशोरक मनमे भेलैन जे मास दिन पहिनहि काज भेल आ आइ ई ताना-मारए दरबज्जापर चलि एला! अपना सीमा कुकुरो बताह। जुगल किशोर सोझहे कहलखिन- “ऐठामसँ चलि जाउ, नै तँ पुलिसकेँ बजाएब!!”

ओना जुगल किशोरक बात मनोहरकेँ तेते कठाइन नै लगलैन जेते लागक चाही। किएक तँ अपन दरबज्जापर उचित-अभ्यागत-ले पुलिस आनी, सएह तँ मिथिलाक दरबज्जा छी।

पुलिसक नाओं सुनि मनोहर भरमे-सरमे घरमुहाँ भेला।

तही दिनसँ ऑफिसक काजमे मनोहरकेँ उन्टा-फेड़ हुअ लगलैन। जइसँ पागल घोषित कऽ देल गेला।



शब्द संख्या: 3341

बगबाइर

अदरा अपन चौदहम दिन बिता काल्हि चलि जाएत। बहुत दिनक पछाइत अदराकेँ एहेन जश भेल। जशो केना ने होइत, पहिल दिन अबिते बरिस गेल जइसँ धू-धू जरैत धरतीकेँ असमानी पानि भेटते एक दिस मन तिरपित भेलै तँ दोसर दिस पैछला सात सालक पछाइत एहेन आम-कटहरसँ भेँट भेलइ। तहूमे पैछला सालक छगाएल मन–आमक अभावमे–रहने आरो बेसी सिनेहासिक्त भऽ गेल।

दोसर साँझ। जारैन-काठी चुल्हि लग ओरिया कऽ रखि फुलिया पतिकेँ अदरा नक्षत्रक अन्तिम दिन मोन पाड़ैत कहलखिन-

"काल्हिए भरि अदरा अछि, तँए..?"

पत्नीक बात सुनि हरानन्द ओहिना मनमे औंटए-पौड़ए लगला जेना नेबोक रस, चीनी आ पानिकेँ औंट-आँटि शरबत बनौल जाइए। बातकेँ औंटैत-पौरैत हरानन्द बजला-

"काल्हि जाए कि परसू जाए आकि नहियेँ अबितए-जइतए तइसँ अपना की। ने आम-कटहर अछि आ ने खुट्टापर लगहैर गाए-महींस। तखन अदराकेँ एने की आ गेने की!"

पतिक बात फुलियाकेँ आन घरक जनिजाति जकाँ छुलकैन नहि, बल्कि विचारकेँ गौर करए लगली। कहै तँ ठीके छैथ मुदा साल भरिक पाबैन छी, बाल-बच्चाक घरमे छोड़ियो केना देब। एकबेर छुटने तँ जिनगीए भरि छुटि जेतइ। बजली-

"नइ पान तँ पानक डंटियोसँ पाबैन नै करब से केहेन हएत?"

फुलियाक आग्रह सुनि हरानन्द सामंजस करैत बजला-

"घरमे रहने सभ दिन पाबैने-पाबैन होइ छै आ नै रहने पाबैनो फोंक भऽ ओहिना चलि जाइ छै जहिना आन दिन चलि जाइए।"

फुलिया मुड़ी डोलबैत बजली- “हँ, से तँ चलिये जाइ छै मुदा पाबैनक अपन ‘रूपं मधुरम् तिलकं’ मधुरम होइ छइ किने।”

फुलियाक बातपर मुस्की दैत हरानन्द बजला- “हँ, से तँ होइ छइ। मुदा एहनो तँ होइते छै जे सालक सत्ताइस नक्षत्रमे अदरो एकटा छी, जे पनरहो दिन अरबा चाउर, दूध, चीनी, आम आ कटहरसँ पूजल जाइए आ एहनो नक्षत्र तँ होइते अछि जेकरा एको दिन पूजन-पाबैन नै होइ छइ। तँए कि ओ सालक नक्षत्र नै भेल?”

“भेल किए ने, मुदा सभकेँ लौल रहै छै किने जे आगत-भागत हुअए।”

फुलियाक बात ओराएलो ने छेलैन कि बिच्चेमे हरानन्द टपकला-

“लौलो-लौलमे भेद होइ छै किने। कियो अपन सेवा कएल छागर बलि चढ़बैए आ कियो नगद नारायणसँ कीनि चढ़बैए, चढ़बैत तँ दुनू अछि। मुदा अहीं कहू जे दुनू एक्के मने चढ़बैए?”

“जखन घरमे अरबा चाउर नै अछि, दूधक जोगार नै अछि, ओहो जे बगबारिमे आम-कटहर होइ छेलए सेहो छिनाइए गेल, तखन तँ ठीके...। छुछ मुहेँ शंख बाजत?”

“हँ से तँ नै बाजत। मुदा..?”

साठि बर्खक हरानन्द अपन अन्तिम हार पैछला साल तखन मानि गेला जखन अपन लगौल-सजौल गाछी-कलमक टुकलोसँ वंचित भेला।

पिताकेँ परोछ भेला पछाइत हरानन्द पाँच बीघा चास, तीन कट्ठा बास आ आठ कट्ठा गाछी-कलमक रक्षक छला। ओना चास-बास अरजैमे हरानन्दक कोनो योगदान नहि छेलैन मुदा आठ कट्ठा गाछी-कलम लगबैमे तँ छेलैन्हे।

दस-बारह बर्खक जखन हरानन्द रहए तखने रूपलाल अपन पुरना गाछी उपटबैक विचार केलैन। उपटबैक कारण रहैन जे एक तँ आम सभ नीक नै छेलै दोसर जेहो छेलै से पुरान भेने या तँ फड़बे नै करइ या फड़ला पछाइत रोगाइये जाइ छेलइ। रूपलालक मनमे उठलैन जे गाछी-कलम कि लोक अपना नापसँ लगबैए जे हम तीस बर्ख जीब तँए आमो गाछ तीसे

बर्ख रहत। तीन-तीन-चरि-चरि पुश्तक गाछी-कलम, पोथी-कलम सभसँ परिवार सुख करैए। से नहि तँ दस बारहे बर्खक हरानन्द अछि तइसँ कि मुदा अपना संगे ओकरो किछु भार देबइ। दुनू बापूतक सीमानपर एकटा गाछियो रहत।

पुरना गाछीक गाछ हटा रूपलाल पाँच बर्ख जोत-कोर केलैन, अन्न उपजौलैन। पछाइत गाछी लगबैसँ पहिने हरानन्दकेँ कहलखिन जे बौआ नीकहा आमक आँठि बीछि एकठाम रोपिहह आ कलम लगबैले सहरगंजा एकठाम हाथ-हाथ भरिपर रोपि दिहक जे उखाड़ैमे असान हएत। अपन लगौल गाछी-कलम अधिक बिसवासू होइ छइ। समय तेहेन भऽ गेल अछि जे बिसवास अपन चेहरे बदैल लेलक अछि। जे नर्सरी गाछी-कलम, बाड़ी-फुलवारीक बीआ बेचैए ओहो ओहन भऽ गेल अछि जे कहत सागवानक गाछ छी आ भऽ जाइए बौनैया काँट! खाएर जे हौउ, अपन गाछी अपने लगाएब।

साल भरिक पछाइत आँठीसँ डेढ़-डेढ़, दू-दू हाथक गाछ भऽ गेल। सरहीकेँ मुसरा काटि, बरद जकाँ सुरेब बनैले थल्ला उखाड़ए हरानन्दकेँ कहि रूपलाल आगूमे आबि ऐ ताकमे बैसला जे देखिऐ केना उन्टा-सुन्टा खुरपी चलबैए। आठे कट्ठा कलम-गाछी लागत तइमे गाछे केते रोपल जाएत। तहूमे नवका वौना किस्म नहि, बड़का किस्म छेलइ। मेल-पाँच कऽ सरही एक भाग आ कलमी एक भाग लगाएब नीक बुझि हरानन्द सएह केलैन। अपन खेती-पथारीक जिनगी हरानन्दक तँए झूठ-फूससँ कम भेँट।

एक्कैस बर्खक अवस्थामे हरानन्दकेँ बेटा भेलैन। तीन मासक पछाइत बच्चाक माथ नमहर हुअ लगलै। साल भरि जाइत-जाइत असर्द्ध देखैमे लागए लगलै। दुनू परानी हरानन्द विचारलैन- कोखिक पहिल सन्तान छी। केना छोड़ि देब। जमीन-जत्था लोक किए रखैए। से नहि तँ जाबे तक जीबैक आशा रहतै ताबे तक तकतियान करबै। तइले जे हौउ। खेत-पथार रहौ आकि चलि जाउ। जँ मनुक्ख बँचत तँ ओहूसँ बेसी अरैज लेत आ जँ मनुक्खे ने रहत तँ खेते-पथार कोन काजक। गणेशजीक माथ सन ओइ बच्चाक माथ भऽ गेलइ। एनमेन हाथीक माथ सदृश...।

समाजक चलैनानुसार हरानन्द दुनू दिस बढ़ल। एक दिस गामक

डॉक्टरी-इलाज तँ दोसर दिस झाड़-फूक, टोना-टापर। बिमारीक चक्रमे पड़ने दुनू बेकतीक जीवनचक्रे बदैल गेलइ। जहिना हरानन्द भरि-भरि दिन झाड़-फूक केनिहारक भाँजमे वौआइत तहिना फुलिया पथ्य-पानिक संग घरेक आइ-पाइमे समय गमबए लगली। एक दिस सौनक बून जकाँ खर्च बरसए लगलैन तँ दोसर दिस खेती-पथारीसँ बिमुख भेने आमदनी हराए लगलैन। छह मास बीतैत-बीतैत तीन बीघा जमीन हरानन्दक बिका गेलैन। मुदा अखनो दुनू परानीक आशा ओहने बनल छैन जहिना छह मास पहिने छेलैन। डॉक्टरसँ लऽ कऽ झाड़-फूक केनिहार धरि जे कियो देखैत तँ ई कियो ने कहैत जे ई रोग छुटैबला नइ अछि बल्कि एते बोल-भरोष दैत जे रोग निसचित भगबे करत। जइ खेतक अन्नसँ हरानन्दक परिवार चलै छेलैन वएह खेत बेचि-बेचि बेटाक इलाजो करबैथ आ अपनो खाए लगला। ठाकुरक बरियाती जकाँ सभ ठाकुरे-ठाकुर। उचित-अभ्यागतक भाँजमे अपनो दुनू परानी हरानन्द सएह बनैत चलि गेला। खेत बीक रहल अछि आ रोगो बढ़िये रहल अछि। समुद्रमे भँसैत नाव जकाँ केतए जाएत कोनो ठीक नहि।

दस मास पुरैत-पुरैत बच्चा मरि गेलइ। बच्चा तँ मरिये गेलै मुदा परिवारोक कोनो तनभगन नै रहए देलकै। खेतक लूट भऽ गेलइ। कियो उचित मूल्य दऽ लेलैन, तँ कियो हथपैंच एकक तीन लेलैन। घराड़ी छोड़ि हरानन्दकेँ किछु ने बँचलैन। खाली एतबे जे चास बटाइ करता आ गाछी-कलम ओगरवाहि।

मृत्युओ तँ सबहक एक्के रंग नै होइत। कियो जनमिते मरि जाइए तँ कियो रोग-वियाधिसँ चटपटा मरैए। मुदा तैसंग ईहो ने होइ छै जे कियो जनमरोगी बनि जीबैए तँ कियो रोगाएले जिनगीक आनन्द लुटैत जीबैए। जहियासँ हरानन्द बेटाक बिमारीक इलाजक पाछू बढ़ला तहियेसँ दुनू बेकतीक मन-मोटाव सेहो बढ़ए लगलैन। मन-मोटावक कारण रहैन दुनूक दू धारणाक धारा। हरानन्दक मनकेँ पकड़ने रहैन जे डॉक्टरी इलाजसँ रोग भागत आ फुलियाक मन झाड़-फूकमे पकड़ाएल। जेकर फलाफल डॉक्टर आ झाड़-फूक केनिहारकेँ एलापर स्पष्ट देखि पड़ैत। जैठाम हरानन्द डॉक्टरक आइ-पाइ नीक जकाँ करै छला तैठाम फुलिया झड़निहार-

फुकनिहारक आगत-भागत करै छेली। काजक दौड़मे परिवारोक बीच अहिना होइ छइ। कियो काजकेँ काज बुझि करैए आ कियो काजकेँ काज बुझैए। भलेँ कियो काजक आ कियो अकाजक किए ने बनि जाए। बिलाइक झगड़ामे बानर पंच। जखन मंतरिया अबैत तँ घन्टो बैस डॉक्टरी इलाजकेँ अदखोइ-बदखोइ करैत। दुनूक बीचक लट-पट-सट-पट दुनू बेकती हरानन्दक विचारपर सेहो पड़िते छेलैन। रोगकेँ कमैत नै देखि दोसर-तेसर साँझमे सभ दिन दुनू परानीक बीच एक आखर भइये जाइ छल। एक दिस खेत बोहाइत देखि हरानन्द झाड़-फूककेँ अनुचित खर्च बुझि पत्नीकेँ झपटैथ तँ दोसर दिस फुलिया डॉक्टरी इलाजकेँ अनुचित बुझि पतिकेँ झपटैत रहै छेली। पंच कियो ने। दुनू पार्टी लड़िये कऽ फरियेता, जे दसम मासमे निर्मूल भेल।

हरानन्द बोनिहार-बटेदार नहि किसान-बटेदार बनि नव जीवन धारण केलैन। जिनगी बदलने बहुत किछु बदलैयो पड़ै छै आ बहुत किछु अपनो बदैल जाइ छइ। हरानन्दक अपन खरिहाँन उसैर गेलैन। खेतक उपजा अदहा-अदही, सेहो ने अपना मने ने लगा सकै छी आ ने काटि सकै छी। तेतबे नहि, आब आमक बगबारि करए पड़तैन जइमे कलमी चारिमे एक आ सरही तीनमे एक भेटतैन। भलेँ कलमीसँ सरहीए किए ने नम्हरो आ गुदगरो होइत।

वसन्त पंचमीक दिन। सरस्वती पूजाक संग किसान हरो ठाढ़ करता। जोड़ा बरदक बटेदार किसान रहितो हरानन्द हर केतए ठाढ़ करता। किसान तँ अपन ओजार–हर-कोदारि-खुरपी-हँसुआ–बड़ही ऐठामसँ सान करा अपना घरमे पूजा करत आकि अपन हाथ आ हाथक ओजार अनका घर? हर ठाढ़ केतए करब ई हरानन्दक मनकेँ हौंर देलकैन। सतंजा अन्न सतंजा तीमन-तरकारी जकाँ हरानन्द बेरा नै पाबि रहल छला जे की कथी छी। अपन रंगे बदैल नेने अछि। खेतमे मेहनत ओतबे करब मुदा उपजा अधिया हएत। जइ साल रौदी-दाही हएत तइ साल बटेदारक खर्च जाएत आकि खेतबलाक खेत? मुदा उपाइयो तँ दोसर नहियेँ अछि। हरानन्दक मन घुमलैन- किछु खेती जोति-कोरि होइ छै आ किछु ओहुना–माने छिटुआ–सेहो होइ छै, तइमे की नीक? आगू सीमा घेरल अछि।

अधिया। जखन अदहे हएत तखन किए ने लागतमे कटौती कएल जाए। ओते तँ बँचत हेबे करत किने। मुदा जँ बीए खा जाएब तखन खेती कथीक करब..? श्रमक ह्रास मंथर गतिए नै दुरूत गतिए हुअ लगल। जहिना सौनक झटकीमे पानिक नमहर-नमहर बूनक संगबे हवा भेने आरो दगनियाँ रूप पकैड़ बरसैए तहिना श्रमक ह्रास भेने रंग-बिरंगक रोग श्रम-शक्तिकेँ धेलक। फलाफल केतौ श्रमक चोरि तँ केतौ श्रमक बेइमानी, केतौ अनदेखी तँ केतौं बलजोर हुअ लगल!

तेसर सालक पंचायत चुनाव हरानन्दकेँ आरो धकिया देलकैन। जिनगीमे दुनू परानी हरानन्दकेँ छल-प्रपंच, गरीब भेनौं नै छुबि सकलैन। भगवानक लीला बुझि सभ दुख-सुखकेँ दुनू परानी घोंटि गेला। मनो मानि लेलकैन जे जहिना बेटा आएल तहिना गेल। दुनियाँ थोड़े दोखी बनाएत जे बेटाक तकतियान नै केलिऐ। धर्म-कर्म धने ने सुधन कहबैए। की ई हमर सफलता ई नहि जे बेटा-ले अपन सर्वस्व गमा लेलौं। मुदा दोखोक तँ एक नै अनेक कारणो होइते छइ। जेकर फलो सोझहेमे अछि।

हरानन्द जिनका हाथे अपन गाछी-कलम बेचने छला, अखन हुनके बगवार बनि गाछीक ओगरवाहि करैत रहथिन। तीन गोरे पंचायतक मुखिया-ले उम्मीदवार रहैथ। तीनूमे के नीक ओ विचारि दुनू परानी हरानन्द भोँट देलखिन। कुलानन्द अपन बगवार बुझि हरानन्दकेँ अपन भोँटर बुझैत रहथिन। कुलानन्दक हारि हरानन्दक कपारपर हड़हड़ा कऽ खसलैन।

अँगनाक ओसारपर दुनू परानी हरानन्द अपन दिन-दुनियाँक गप-सप्प करैत रहैथ। साठि बर्खसँ ऊपरेक दुनू बेकती। जिनगीक संगी खाली लभे-मैरेजक नहि, चलैत-फिड़ैत समाजोक बन्धन तँ छिऐ। एहेन स्थितिमे दू-दिलक दिलराजक बास केतए हएत? ओहुना लोक बुझैए जे ओल्ड बेटल, ओल्ड वाइन आ ओल्ड वाइफ बेसी चसगर होइ छइ। ओना, दुनू परानी फुलियाक अवस्था दुनूक चेहराक रूपे-रंगकेँ बिगाड़ि देने अछि। फुलियाक मुँहमे तीनटा चौह बँचल आ हरानन्दकेँ सेहो नहि। बिनु दाँतक मुहसँ अदन्त बच्चा जकाँ गुलावी हँसी हँसैत हरानन्द फुलियाकेँ कहलखिन- “आब ऐ दुनियाँमे रहैक मन नै होइए। होइए जे जल्दी मरि जैतौं जे अपनो भार हटितए आ दुनियोँक भार घटितै।”

जिनगीक तीत-मीठ जे फुलिया आ हरानन्दकेँ पति-पत्नीक रूप बिगाड़ि देने छल ओ ठमैक पुन: जिनगीक धार लग पहुँच गेल। एक तँ उमेरक उपजा, दोसर संगी बनि संग-संग चलैक। फुलिया बजली-

“कहलौं तँ बैस बात मुदा एते दिन जे केलौं से केलौं, जहिना अहाँ केलौं तहिना हमहूँ केलौं मुदा आबो जे ओहिना पहिलुके जकाँ करब से थोड़े मानि लेब।”

फुलियाक बात सुनि हरानन्द ठमकला। ठमकैक कारण भेलैन पैछले जकाँ आब नै जीबए चाहै छैथ। वैचारिक मेल-मिलानक मन बना जीबए चाहै छैथ। पुछलखिन- “एना किए करुआएल बात बजलौं?”

पतिक शान्त भाव देखिते फुलियाकेँ सह भेटलैन। भरियबैत बजली- “जखन दुनू बेकती संगीए नहि, अर्द्धांगिनियोँ छी तखन एहेन बात बिना विचारने किए बजलौं जे मरि जाएब? अहाँकेँ जीबैक मन नै अछि? अकैछ गेलौं तँ मरि जाउ। मुदा हमरा जे मारब से दोखी के हएत?”

विधवो नारी तँ अधमौगैते जिनगी जीबै छैथ। तहूमे फुलिया आ हरानन्दक बीच उमेरक दूरी मात्र साले भरिक। तहूमे साल भरि फुलिया आरो निच्चेँ। गुम्म भऽ हरानन्द विचारिते रहैथ कि तखने कुलानन्द बेधड़क आँगन पहुँच हरानन्दकेँ दबारैत कहलकैन- “हमरा गाछीक भीर काल्हिसँ कियो नै जैहह। देखि लेलिय जे केहेन हितैषी बगवार छह।”

जहिना ध्वनि साधनाक समय बमक आवाज साधनाकेँ भंग करैत तहिना पत्नीक बात बिसैर हरानन्द कुलानन्दकेँ उत्तर देलखिन- “बेटा चलि गेल से तँ छाती लगा मारलौं आ बगबाइरक जे आमे चलि जाएत तेकर सोच अछि। जे मन फुरए से करब।”

हारैत-हारैत हरानन्द जिनगी हारि चुकल छला। मिसियो भरि कलेज निरोग कहाँ रहि गेल छेलैन जइसँ हूबा कऽ बजितैथ जे अही हाथक लगौल गाछी-कलम छी, हिस्सेदारी टुटि गेल मुदा अखनो ओहिना मोन अछि जे लोटे-लोटा जड़िमे पानि देने छी।

❑ शब्द संख्या: 1900

मुइलो बिसेबैन

काल्हि भोरेसँ केताबेर लूटनी भौजी धीरू भैयाकेँ खोज करए एली मुदा भेँट नै भेलैन। ओना लूटनियोँ भौजी अपने मनक लोक, खोज करए तँ अबै छेली मुदा परिवारक कोनो सदस्यकेँ सोझहे पुछि दइ छेलखिन-

“धीरू बौआ आँगनमे छैथ?”

तँ उत्तर भेटै छेलैन-

“नहि।”

‘नहि’ सुनिते घुमि कऽ लूटनी भौजी लौट जाइ छेली। दोहरा-तेहरा खरियारि कऽ ऐ दुआरे नै पुछै छेलखिन जे अपना घरक बात सभ लग बाजब नीक नहि। ओना किछु मानेमे नीको अछि। नीक ऐ मानेमे जे झगड़ा-दनक बात जखन लोक बाजए लगैए तँ केते रंगक बात बजा जाइ छै जइसँ समैयोक बेरबादी आ झगड़ा सेहो टरल रहैए। मुदा सातम बेर एलहा लूटनी भौजीकेँ सुतरलैन। धीरू भैया गंगा नहा कऽ आएले छला कि लूटनी भौजी आबि गेलखिन।

गाड़ी-सवारीक झमारल धीरू भैया, तँए आन गप करैक मन नै होइ छेलैन। थाकलो छला आ अपनो घरक तीन दिनक समाचार पछुआएले छैन। आनठामसँ एला पछाइत कियो पहिने अपन परिवारक हाल-चाल ने बुझए चाहैए जे कोन काज अगुआएल, कोन पछुआएल आ कोन ठमकले रहि गेल...।

मुदा जखन लूटनी भौजी अपन दुखनामा कहए एलखिन तखन नहियोँ सुनता से उचित नहि। अपन परिवारसँ बेसी महत आन परिवारकेँ नै देनाइ तँ स्वार्थीएक काज भेल। मुदा अपन काज छोड़ि जँ दोसरेक काज करए लगब तँ की दोखी नइ हएब? हेबे करब। सभकेँ अपने अधिकारो आ करतबो छै जँ तेकरे छोड़ि देब तँ करब की? खाएर जे हौउ...।

एक तँ धीरू भैया रस्ताक झमारल छैथे तैपर सँ दोसर झमार दैत

लूटनी भौजी कहलकैन- "पहिने सभ काज छोड़ि हमर पनचैती कऽ दिअ, तखन आन काज करब।"

ओना गंगा स्नान केलाक पछाइत धीरू भैयामे किछु संकल्पो आ किछु काज करैक नव उहियो आबि गेलैन आ किछु छोड़बो आ बदलबोक निर्णय करबे केलाह अछि।

लूटनी भौजीक बात सुनि धीरू भैयाक मनमे उठलैन जे अखन दूर-दराजसँ आएल छी, लगले पनचैती करए बैसब, तहूमे मनो थाकले अछि आ देहो गरमाएले अछि। तँए समैयक हिसाबसँ ई काज नीक केना हएत। कोनो पोखैरसँ अछींजल भरब तखन ने उचित होइ छै जखन जल असथिर रहल, जइसँ ने चहल-पहल आ ने गादि-गन्धक सम्भावना रहत। मुदा लूटनी भौजीकेँ टारबो असान नहियेँ बुझि पड़लैन।

एक कालखण्ड धीरू भैया आ लूटनी भौजी गामक नेतागिरी कऽ चुकल छला। ओना लूटनी भौजी बिनु पेनक लोटे जकाँ छेली मुदा जासूसी-ले तँ ओहने फूटल-फाटल, पचकल-पुचकलक ने जरूरत होइ छइ। तइमे लूटनी भौजी सोल्हन्नी उपयुक्त। ओना, सभ बुझै छला जे लूटनी भौजीक बात आ उनटा गाड़ीक चालि, दुनू बरबैर। मुदा तैयो गाममे वएहटा मरदक बेटी छैथ जे थनो-पुलिसक आगूमे ठाढ़ होइ छैथ। जेहने रेकार-तेकार पुलिसक बोल तेहने तँ लूटनियोँ भौजीक रेकार-तेकार छैन्हे। गामक लोक जे बुझैन मुदा सरकारी जासूससँ तँ नीक चरित्रक छथिए। केना नै छैथ, गाम-घरक जासूसी मुखौती चलै छै मुदा सरकारीक तँ लिखौती चलैए। मलकारे ने महींसक घीकेँ गाइक घी आ गाइक घीकेँ महींसक घी मुखौतियो बना लइए! आकि कीननिहार बनौत? कीननिहारकेँ जे जरूरत रहलै ओ मांग करैए। मलकारकेँ जेते जल्दी घी बिकाएत ओते पहिने ने काजसँ छुटकारा भेटतै। जखन सभ अपने लाभक रोजगार करैए तखन मलकारेकेँ किछु कहब केते उचित हएत। लिखौतीए जासूसीमे ने कोनो कारखानासँ लाखक माल सैंकड़ा बनैए आ सैंकड़ा लाख बनैए। भलेँ बीचमे इन्कम-टैक्सक जे करामात हौउ...। एहेन जासूसी लूटनी भौजी कहियो ने केलैन आ ने अखनो करै छैथ। ओना, केतबो माहिर लूटनी भौजी किएक ने बुझल जाथि मुदा सभ घरक जासूसी

करैमे खिलैच जाइ छैथ। जे पुरुख कोट-कचहरीक गप अपन जनानाकेँ कहि दइ छथिन, ओइ बुझैमे लूटनी भौजीकेँ बेसी भाँगठ नै होइ छैन मुदा जइ घरक जनानाकेँ अपन घरक बात केतए बाजी, केते बाजी, केतए नइ बाजी इत्यादिक ज्ञान छैन, ओइ घरक भाँज बुझैमे भौजी हारि जाइ छैथ। जराएल मन भौजीक रहबे करैन। कण्ठ फाड़ि दोहरी आवाजमे प्रश्नकेँ दोहरबैत बजली-

“हमरा बातपर कान किए ने दइ छी जे मने-मन गुड़-चाउर फँकै छी?”

जहिना आमक डारिमे दोहरी दोम पघिलल, घुलल आ कठगर तीनूकेँ झखबए लगैए तहिना धीरू भैयाकेँ भौजीक दोहरौल बात सुनि भेलैन। मुदा मन तँ गंगा-संकल्पकेँ जपैत रहैन जे सासु-पुतोहुक झगड़ाक फरिछौठमे नइ पड़ब। ई की कोनो झगड़ा छी। सोल्हन्नी रगड़ा छी। नइ तँ वएह बेटी हँसी-खुशीसँ माइक घर लक्ष्मी बनि बीस बर्ख बीतबै छैथ आ सासुर अबिते सासु चुड़ैल बनबए लगै छैन। एकरा रग्गड़ नै कहब तँ की कहब? सोझ बात अछि, परिवारक कोनो काज करैसँ पहिने सासु पुतोहुसँ पुछि लेथुन जे कनियाँ ई काज अहाँ नैहरमे केना करै छेलौं। दुइए रंगक जवाब भेटत, या तँ नै कएल अछि वा केलहा ढंग कहि देत। कारणो अछि जे एक्के मिथिलांचलक बीच क्षेत्र-क्षेत्रक विन्यासो बनबैक आ बाजबोक आ पाबैनो-तिहारक संग गीतो-नादक रूप अगल-अलग अछिए। तइले जे सासु भागलपुरक चलैनकेँ अधला आ मधुबनीकेँ नीक कहैथ, ई केते उचित हएत? गाम-गामक बीच ढेरो रंगक खाधि बनल अछि। जे खान-पान, ओढ़ब-पहिरब, बाजब-भूकबसँ लऽ कऽ गीत-नाद आ विधि-बेवहार धरिमे पसरल अछि, तैठाम...।

एक तँ ओहिना धीरू भैयाक मन रस्ताक चालिसँ असोथकित रहैन, तैपर लूटनी भौजी आरो नमहर-नमहर चेका काटि-काटि लादए लगलैन। धीरू भैयाक मन गवाही दैत कहलकैन जे नीक हएत लूटनीए भौजी किए ने हमर बेथा बुझैथ। सभकेँ अपन-अपन बेकतीगतो आ सामाजिको किछु समस्या रहिते छइ...।

मुदा से लूटनी भौजी मानैथ तखन ने, ओ तँ अपने ताले बेताल

छैथ! बेतालो किए ने रहती। मनमे ओहिना छोटकी पुतोहुक बात नचैत रहैन जे 'आब हिनकर भानस नै करबैन। अपन कऽ कऽ खाउथ वा नै खाउथ हमरा कोनो मतलब नहि।' मुदा से मन मानैले तैयारे ने होइन। सासु-पुतोहु दू पक्ष भेलौं जँ दुनू पक्षक बीच सोझहा-सोझही किछु टक्कर हएत तखन आगूक रस्ता केमहर बनत? या तँ एक गोरे पटका खसि पड़त या दुनू दिससँ तेहेन देवाल ठाढ़ भऽ जाएत जे रस्ते रोका जाएत! ओना, तूफानी धाराकेँ सेहो रोकल जा सकैए, ओना धार बनब, पहाड़ ढाहब धिया-पुताक खेल नहि। जे साधन छै ओ बिनु अपनौने थोड़े हएत। केतौ बान्ह बन्हैक जरूरत होइ छै तँ केतौ छोट-छोट नासी-नहर बना पानिक वेगकेँ कम करैत रोकल जा सकै छइ। तँए नीक हएत जे एक दिस भौजीकेँ चाहो-पानक आग्रह करिऐन आ दोसर दिस पहिलुका पुतोहुक चर्च ठाढ़ केने मन ससरबे करतैन तइसँ तमतमी कमतैन, तखने जान बँचत। झगड़ो झगड़ा सन रहए तखन ने। ओहन झगड़ा जेकरा हजारोठाम गीरह-गाँठ पड़ल छै तैठाम तँ न्यायालय-ले बेसी उचित यएह ने हएत जे दुनू पक्ष अपनेमे मुँह-मिलानी कऽ न्यायमूर्तिसँ हस्ताक्षर करबा लैथ। जेठकी बेटीकेँ धीरू भैया कहलखिन- "बुच्ची, कनी भौजियोकेँ चाह पीआ दहुन आ हमरो पियाबह। बड़ीकालसँ चाह पीबैक मन होइए।"

धीरू भैयाक जाल सुतरलैन। ओना घुमौआ जाल नहियेँ रहैन, मुदा तैयो चाह हाथमे लइते लूटनी भौजीक मुँह टुस्कियेलैन।

भौजीक मुँहक टुसकी देखि धीरू भैया बजला- "पहिलुका पुतोहुक घरदेखी हमरा ओहिना मोन अछि भौजी, अहाँ बिसैर गेलिऐ?"

सह पाबि लूटनी भौजीक मन तेसर पुतोहुकेँ छोड़ि पहिलुकाकेँ झोंट लपकलक। बजली- "अपन केलहा काज लोक वएह ने बिसरैए आकि बिसरए चाहैए जे अधला रहै छै, मुदा नीक केना बिसैर जाएत। अहाँ तँ ओइ काजमे अगुए रही, कहू जे कोन धरानी पुतोहुकेँ घर अनने रही।"

लूटनी भौजीक दोहरी पंच बनिते धीरू भैया बजला- "ओना मुँहपर केकरो बड़ाइ आकि छोटाइ चटुकारी भेल मुदा नीक कि अधला बजलो नै जाए सेहो तँ नीक नहियेँ हएत। केतौ अधलाकेँ नीक दबतै तँ केतौ नीककेँ अधला दबतै। ओहने बात अखन उठि गेल अछि। जे समांग वा कुटुम घर

छोड़ि परदेश जा घर बना लेलैन, पैघ बनि गेला। जँ कोनो काज-पीहानीमे भाग लइले नोत-हकार देबैन तखन जँ अबै-जाइक गाड़ी-बस आकि जहाजक भाड़ा-किराया नै देबैन तँ की हुनका मान-मर्जापर नै पड़तैन? मुदा तैसंग ईहो प्रश्न तँ जोड़ले अछि जे जे पेटक खातिर गामसँ हजारो कोस दूर भागल ओइ धरती धारण केनिहारकेँ नै परेख पाबी? खाएर...।"

मुस्की दैत धीरू भैया फेर बजला- "मुदा ओ बात हम कहियो ने अहाँक बिसरब।"

'बिसरब' सुनि लूटनी भौजी अन्हरोखमे फुलाइबला फूल जकाँ हलैस कऽ खिलैत बजली- "कोन बात कहलिऐ बौआ?"

"वएह-वएह! अहाँ बिसैर गेलिऐ?"

"एँह, की कहब काजक तेहेन ओझरौठ होइ छै जे कोन बात लोक मोन रखत आ कोन बात नै मोन राखत। काजो करैत-करैत कखनोकाल मन हेरा जाइ छै किने।"

सिमसिमाएल लूटनी भौजीक मन देखि धीरू भैयाक मन सेहो थीर भेलैन। बजला- "पहिल बेटाक घरदेखीमे जे अहाँ सभकेँ बड़-बड़ी खुऔने रहिऐन, तही दिन ने बेटीबला सभसँ कहबा नेने रहिऐन 'एते रंगक बड़-बड़ी हम नइ खुआ पाएब।"

जहिना हौहैट-कलकैल कुरियबैकाल सुआस पड़ै छै तहिना धीरू भैयाक बात सुनि लूटनी भौजीकेँ सुआस पड़ए लगलैन। बजली- "कोन परगनाक बेटी हमरासँ लूरिगर अछि, सात-परगनाक बड़-बड़ी बनबैक लूरि ऐ देहमे गहना जकाँ सजा कऽ रखने छी।"

बजैत-बजैत लूटनी भौजी झोंक दैत झोंकली- "अखुनका लोक कहत जे हम बड़ लूरिगर छी, चलह तँ अखनो हमरा सेने भानसमे!"

चुटकी लैत धीरू भैया बजला- "भौजी, यएह बात भरिसक छोटकियो पुतोहु बुझि गेली, तँए भानस करब छोड़ि देलैन।"

लूटनी भौजीक सनक जहिना आगू ससरल रहैन तहिना धीरू भैयाक बात सुनि ढील भऽ गेलैन। पुन: पहिलुके पुतोहुक चर्च उठबैत बजली- "ओहो पुतोहु कि कोनो अधला छैथ, मुदा ई दोख तँ छैन्हे ने जे

जइ घरमे थेहगर सासु रहती ओइ घरक जुइत पुतोहुक हाथमे केना जाएत। बेटा-बेटी परिवारमे होइ छइ। आनक बेटी आनक बेटीक संग केहेन बेवहार राखत, ई बात तँ माइए-बाप ने बुझि सकैए आकि कनियाँ-मनियाँ बुझत!"

बजैत-बजैत लूटनी भौजीक मन चढ़ए लगलैन। तैबीच धीरू भैया कहलखिन- "देखू, ओइ पनचैतीमे बेसी दोख अहींक रहए। पुतोहु जकाँ कहियो जेठकी पुतोहुकेँ नै बुझलिऐ।"

मोन पाड़ैत लूटनी भौजी बजली- "देखियो बौआ, जेते दोखी अहाँ बनबै छी तेते नै छी। कनी-मनी दोख केतौ भऽ गेल हएत से भऽ सकैए मुदा जेते बुझै छी तेते नहि।"

"केना नै रहिऐ। देखै छेलौं जे चिचिया-चिचिया पुतोहुकेँ सरापै छेलिऐ आ कहै छी जे केना केलिऐ!"

"ऐमे हम की दोखी भेलौं?"

"ऐमे अहाँ ई दोखी भेलिऐ जे एक तँ ओहुना बेटी नैहरक मुँह पौतीमे बन्न कऽ लइए, तैपर जे सासु साँढ़-पारा जकाँ ढेकैर-ढेकैर टोकारा देथिन तँ की ओ पशु-मुँह केते दिन बरदाश करत। अहींक जे पुतोहु छैथ, किए ने बेटी जकाँ पुचकाइर कऽ गप करै छेलौं, जे अनठिया माल-जाल जकाँ ढुसि लइ छेलिऐ!"

अपन तर्क कमजोर पड़ैत देखि लूटनी भौजी छिछलैत बजली- "बौआ, ऐमे दोसर भाँज रहै जे हमहूँ नै बजलौं।"

चुम्मक जकाँ जेते धीरू भैया लूटनी भौजीकेँ पकड़ए चाहैथ तेते लूटनी भौजी- जहिना लोहामे आन-आन द्रव्य मिलौलासँ चुम्मकीय शक्ति कमजोर होइ छै तहिना आन-आन बात जोड़ए लगली। धीरू भैयाक मन गबाही देलकैन। बजला-

"कथी दोसर भाँज रहए, बाजू। अखने की भेल, आबो तँ बुझब ने?"

धीरू भैयाक प्रश्न सुनि लूटनी भौजीक मन धकमकेलैन। मनक एक पक्षक कहब रहैन जे घरक कोनो बात छिपा कऽ किए राखब। जखन

समाजक एकटा खुट्टा हमहूँ छिऐ तखन गराड़केँ किए चोरा कऽ राखब। मुदा दोसर पक्षक कहब रहैन जे पसीना चुबौल काजकेँ लोक लग बजैमे हर्ज नहि। पसीनाक धार आनोक-आन देखैए। मुदा बिनु पसीना चुबौल काजक आमदनी बजलासँ नीक नहि हएत। मुदा डारिक चुकल बानर जहिना अपनाकेँ मरले बुझैए तहिना मनमे अबिते फरैक कऽ लूटनी भौजी बजली- "अहाँ सभ जे पंचैतीमे जाइ छिऐ तँ झगड़ाकेँ उनटा-पुनटा कऽ नइ देखै छिऐ। जखन उनटा-पुनटा कऽ देखबै तखने ने सुपत बात बाजल हएत।"

जइ आवेशमे लूटनी भौजी बजली ओइ आवेशकेँ धीरू भैया सुखल पछबा हवा जकाँ मात्र 'विर्ड़ो' बुझलैन। दस-बीस मिनटक खेल, भलेँ घर-दुआरक कोन बात जे मोटगर-मोटगर गाछो किए ने उखाड़ि दिअए...।

अपनाकेँ समटैत धीरू भैया बजला-

"आबे की भेल, बाजू। अखन तँ दुइए गोरे छी, कोनो बात झाँपि-तोपि नहि राखू। जँ पनचैतीमे इशारोसँ आएल हएत आ ओइपर पंचक धियान नै गेल हेतैन तैठाम पंच दोखी। मुदा जैठाम काजक कोनो गपे ने उठै तैठाम तँ घरबैए दोखी। छातीपर हाथ रखि बाजू।"

धीरू भैयाक जिज्ञासा देखि लूटनी भौजी सहमली। सहमैक कारण भेलैन परिवारक अर्थ बिन्दु केना दोसर लग बाजब। अखन धरि तँ आबिए रहल अछि जे अपन मेन्टेन करैले भुखलो पेट बाबरी उनटा मुँहमे पान फुलबैत चलिते अछि...।

जहिना बिनु गुनाक रिंच धीरू भैया लगा खोलए चाहै छैथ तहिना लूटनी भौजी दालि तँ बाजैथ मुदा राहैड़ आकि खेसारी, से छिपबैमे माहिर। बजली- "मोन अछि किने जे अहूँ रस्तेपर सँ सुनैत रहिऐ?"

"नइ मोन अछि। कनी मोन पाड़ि दिअ।"

सह पाबि लूटनी भौजी छड़ैप बजली-

"अहीं सन-सन बिसराह पंच नियालयमे अपन गवाही बदैल दइ छइ!"

छिड़ियाएल लूटनी भौजीकेँ देखि धीरू भैया पुछलखिन- "सूनू, जे

गप करै छी तेकरा पहिने मुड़नसँ सराध धरि विचार कऽ लिअ तखन दोसर बात चालब। अच्छा, ओइ दिनका मोन पाड़ि दिअ जइ दिनक नाओं कहै छी।"

जाल सुतरैत देखि लूटनी भौजी टुसियाइत बजली- "सुनने रहिऐ ने जेठकी पुतोहु बाजल रहए। ई केहेन भेल जे एक शीशी लोहासव भाए दऽ गेलै तेकर उपराग दिअए। कहै कि नहि जे नैहरसँ दबाइ-दारू नै अबितए तँ कहिया ने मरि गेल रहितौं।"

"नइ मोन पड़ैए। कनी सेरिया कऽ मोन पाड़ि दिअ।"

जहिना खिस्सकरकेँ सुननिहार भेटते मन खुशी भऽ जाइ छै तहिना पुतोहुक पितम्बरी ओढ़ि लूटनी भौजी बजली-

"अहींकेँ पुछै छी जे एकटा लोहासवक शीशीकेँ केते दाम हेतइ। बड़े हेतै तँ एक साए रुपैआ। एक दिनक एक गोरेक खेनाइ केते होइ छइ। से जोड़ि लिअ। तखन मिला कऽ देखियौ जे जे तीस दिनक खर्चा जोड़लक तेकर कोनो मोजरे नहि, आ एक शीशी लोहासव जोड़निहारक ढोल पीटए, से अहींकेँ बरदाश हएत?"

धीरू भैया जवाब दैत पुछलखिन- "बरदाश हुअए कि नइ हुअए, मुदा जे परिवार तीस दिनक खर्च जोड़ैए तइ परिवारमे एक शीशी दबाइए किए बाहरसँ औत? मुदा नैहरक देल वस्तुकेँ बेसी आ सासुरकेँ कम कहब केहेन हएत। होइ किए अछि, होइए ऐ दुआरे जे नैहरक सम्पैतक नाओंपर परिवारमे चोरि पनपैए। तँए किए ने सम्मिलित परिवारक बीच बाहरक सभ वस्तु, सहबक आँखिक सोझहा आबि जाउ। जखन परिवार सबहक छिऐ तँ परिवारक वस्तुओ ने सबहक भेल?"

बोहियाइत धीरू भैयाकेँ देखि बिच्चेमे लूटनी भौजी टोकलकैन-

"एना नहि हएत! जखन अहूँ सुनए चाहै छी आ हमहूँ कहैए-ले एलौं तखन सुकचेनसँ सुनियेँ लिऔ।"

बजैत लूटनी भौजी चौकीपर पल्था जमा बैसली।

भौजीक निसचिन्ती देखि धीरू भैया बुझि गेला जे पेटमरूक घरमे दुपहरिया सिदहा रहने भिनसुरका उखड़ाहामे निसचिन्ती आबिए जाइ

छइ। मुदा हमहूँ तँ आब अपनाकेँ पहिलुका जकाँ नहियेँ बुझै छी। सबहक झगड़ा हमरे छी, पहिने से बुझै छेलौं, मुदा गंगा डूम देला पछाइत एते तँ तँइ कऽ लेलौं जे सभ झगड़ाकेँ अपन नइ बुझब। झगड़ा झगड़ौआक छिऐ। जखन भौजी आशा लगा कहए एली तँ पनचैती करए नै जाएब, मुदा चलैक रस्तामे जेतए जे गीरह-गाँठ छै तेकरा ताकि नै बेराएब सेहो तँ नीक नहियेँ हएत!

जहिना माघक सिताएल कुत्ताकेँ छाउरक ढेरीपर बैसल देखि उकट्ठी छौड़ा लोटो भरि पानि ऊपर उझैल दइ छै तहिना धीरू भैया भौजीपर उझलैत बेटीकेँ कहलखिन-

“बुच्ची, लूटनी भौजीक संगे बैस कऽ खेना बहू दिन भऽ गेल, तँए पहिने जलखै लाबह। पछाइत कलौओ खुअबिहह।”

धीरू भैयाक आग्रह सुनिते लूटनी भौजीकेँ पैछला एकटा घटना मोन पड़लैन। घटना मोन पड़िते कनबात बिसैर लूटनी भौजीकेँ धीरू भैयाक बात अनसून हुअ लगलैन। जेकर फल भेलैन जे विचारमे जबरदस धक्का लगलैन। जे पाछू बुझलखिन। मोन पड़लैन ओ घटना जइमे लूटनी भौजी पार्टीक पंच बनि पनचैतीमे गेल छेली। जैठाम बुझि नै पेली जे ई जगह केहेन अछि। गाम-गामक चालि-ढालि भिन्न-भिन्न छइ। जइसँ गाम-गामक जगहो चोटाह भऽ गेल छइ। कोनो गामक बेसी लोकक हाथमे किताब रहै छै तँ कोनो गामक बेसी लोकक हाथमे चुटपुटियासँ नमहरका धरि हथियार रहै छइ। तहिना कोनो गामक बेसी लोकक हाथमे खेलक सामग्री रहै छै तँ कोनो गाममे हँसुआ-खुरपी-कोदारि...।

तेतबे नहि, कोनो गामक बेसी लोकक हाथमे रिंच-हथौरी आ पेंचकश रहै छै तँ कोनो गाममे एजेंसीक फार्म-जिल्द।

गपक हलहलीमे लूटनी भौजीकेँ शरबतमे कियो बीख मिला देने रहैन। संयोग नीक रहलैन जे लोकक बीच रहैथ, उठा-पुठा कऽ डॉक्टर लग जा जान बँचौलकैन। तही दिन लूटनी भौजी कान धऽ लेलैन जे जगह देखि किछु करैक चाही। मुदा लूटनी भौजीक भक्क तखन खुजलैन जखन धीरू भैया दोहरा कऽ आग्रह केलखिन- “पहिने किछु खाइए लेब तखन गप-सप्प हेतइ।”

'खेनाइ' सुनि लूटनी भौजी चमैक बजली- "खाइ-पीबैक अड़सट्ठा छोड़ू। गपेमे कनी तेजी आनि लिअ। अखन खाइक बेरो ने भेल अछि। अहुना काज-उदममे कनी-मनी अबेर-सबेर भइये जाइ छइ।"

अपन जाल सुतरल देखि धीरू भैयाक मन असथिर भेलैन जे जहिना गोनूझाक बिलाइ दूध देखि भागि जाइत तहिना खेनाइक नाओंपर लूटनी भौजीकेँ भगा सकै छी। मन थीर भेलैन। धीरू भैया बजला-

"अहीं तेजियोक बात कहै छी आ अनठेबो करै छी?"

"नहि-नहि, अनठबै कहाँ छी। एकटा ओझड़ी रहए तखन ने, तहूमे तेहेन-तेहेन भत्ता सभ धेने अछि जे केकर मुँह केमहर छै आ केकर नाँगैर केमहर छै जे बतिया जकाँ निहारि-निहारि देखए पड़ैए। ई तँ नहि जे घेरा-झुमनीक बीआ जकाँ रोपैकाल केकरो मुड़ी अकास दिस आ केकरो पताल दिसकेँ दऽ दियौ आ जनमैकाल जे पछुआए ओकरा भोरेसँ गरियाबए लागी...।"

जहिना कथाकार लोकैनकेँ सालक किछु मास विषाये खोजैमे राजगीर चलि जाइ छैन तहिना लूटनी भौजीक कथाकेँ हराइत देखि धीरू भैयाक मनमे हजार वाटक बिजलीक बौल जकाँ भुक्क-दे मनमे उठलैन-जहिना शिकारी जालक एकटा सूत पकैड़ सौंसे जाल खोलि लइए तहिना तँ गपे-गपमे झगड़ोक रग्गड़ पकैड़ खोलल जा सकै छइ। बजला-

"जएह सोझहामे पड़ए तेकरे अन्है जकाँ केम्हरोसँ मुट्ठियेने आउ। अपने ने देखबै जे ऐगला जन्ममे कोन साँप हएत।"

धीरू भैयाक सह पाबि लूटनी भौजी समैध-समधिन दिस छड़पैत बजली- "कहू तँ एहेन बात अहींकेँ बरदाश हएत!"

बिनु मुड़ीक बात सुनि धीरू भैया अकचकेला। मनमे उठलैन-कालीए ने अन्हरिया राति छी। जिनकर जिह्वा लपैक-लपैक दुष्ट नाश करै छैन। मुस्की दैत धीरू भैया भौजीकेँ टुस्कियबैत कहलखिन-

"एना झाँपि-तोपि बजने काज नइ चलत। उघारि-उघारि बाजू।"

सह पाबि सहटैत लूटनी भौजी अपन आँखि-कान, मुँह-नाक आ दहिना हाथक पाँचो ओंगरी छिड़ियबैत बजली- "घरक बात छी, आनठाम

बजैमे लाज होइए मुदा अहाँ तँ जिनगी भरिक संगी छी, बारह-बजे दिन कि जे बारह बजे रातियोमे संगे लोकक बीच रहलौं, दुनू गोरेक तीत-मीठ दुनू गोरे जनिते छी, तँए कहै छी। कहू जे ई केहेन बात हरिदम जेठकी कहै छेलए जे हमरा माइक पैरधोनो जकाँ हिनकर छीछा-बीछा नै छैन।"

लूटनी भौजीक बात सुनि धीरू भैया कहलखिन- "ऐमे अहाँक कोन लखराज-बह्मोत्तर चलि गेल। जइ आदमीकेँ अपन माए-बापक सिखौल बात मन नै रहलैन। ओकर बातकेँ एते किए धेने छी। जँ मन रहितैन तँ विचारि कऽ ने बजितैथ जे जखन दुनू समधीनक बीच हम बेटी-पुतोहु दुनू भेलौं, तखन हमरा लिऐ दुनू ने एक्के रंग। एक भेल- जिनगीक पूर्व पक्ष आ दोसर भेल- उत्तर पक्ष। तइले एते अहीं किए आमील पीने छी?"

मीठगर बात रहितो लूटनी भौजीकेँ अमताइन लगलैन। मन गबाही दइले तैयार भेलैन जे कोनो वौस रसगुणसँ खट्टा होइए मुदा जे रसगुणसँ खट्टा नहियोँ होइए ओहो बाइस-तेबाइस भेने तँ खटाइए जाइए। जँ से नइ होइए तँ दहीक सुआद खट्टा तँ नै छिऐ, मुदा चीनीक काज किए पड़ै छइ..?

पेराशूत जकाँ मजगूती लूटनी भौजीक मुँहकेँ धकेल खोललकैन-

"अच्छा अहीं कहू तँ एक्के विद्यार्थी कौलेजमे प्रोफेसरसँ पढ़ैए, हाइ स्कूलमे उच्च शिक्षकसँ पढ़ैए आ तइसँ कम मिड्ल स्कूलक आ सभसँ पहिने अपना परिवारक भाए-बापक संग अगुआएल भाए-बहिनसँ सेहो पढ़िते अछि, तइमे के कम श्रेष्ठ, के श्रेष्ठ आ के बेसी श्रेष्ठ भेल, से पहिने बुझा दिअ।"

लूटनी भौजीक प्रश्न सुनिते धीरू भैया टेढ़ रस्तापर जहिना साइकिलक मुँह घुमौल जाइ छै तहिना भौजीक मुँह घुमाएब जरूरी बुझलैन। किएक तँ भौजी तेहेन नेतागिरीबला सबाल पटकए चाहै छैथ जे अनेरे दिनक-दिन मासक-मास खाइबला अछि। मुदा आँखि-मुँहक चढ़ती देखि अपनाकेँ चढ़बैत धीरू भैया बजला- "देखू, अखन धरि नइ कहने छेलौं मुदा जखन गप-पर-गप उठैए तखन कहिये दइ छी।"

हराएल वौस भेटैक सम्भावना देखि जहिना जिज्ञासुकेँ जिज्ञासा

जगैत तहिना जिज्ञासु लूटनी भौजी बजली- “मनक बात जे चोरा कऽ रखैए ओ चोरे भेल। अखन धरि अहूँ सएह भेलौं।”

लूटनी भौजीक तीनकमियाँ बंशी धीरू भैयाकेँ लगलैन जरूर मुदा जीहमे नहि, गलफरमे झिट्टा मारलकैन। जे कनी-मनी घाउ भेने तँ छुट्टियो जाइ छइ। मुदा अमती काँट निकालैले बगूर आकि बेलक काँटक जरूरत पड़िते अछि। तँए पुछलखिन-

“केते दिन अहाँक जेठकी पुतोहु कहलैन जे सासु सासु जकाँ हुअए तखन ने, बुढ़िया तेहेन लुपकाहि छैथ जे भेल भानसपर चुल्हि गरमे रहै छैन, केम्हरोसँ एकटा करैला, तँ केम्हरोसँ एकटा झुमनी नेने औती आ हाँइ-हाँइ कऽ दू-तीनटा टुकड़ी तड़ि लेती। तड़ै छैथ तइले दुख नइ होइए मुदा तेहेन अपसोगारथी छैथ जे आगूमे बैसल मुँह तकैत रहि जाएब मुदा एको टुकड़ी देती नहि।”

कोठीक मुहसँ जहिना धान-चाउर भुभुआइए तहिना लूटनी भौजी भुभुएली- “बौआ, पेटक बात बजै छी। हमरा एक खढ़ इच्छा नै छल जे जेठकी साझी रहए। तीनटा बेटा अछि तीनटा पुतोहु हएत। अहीं कहू जे तीन-तीन गोरे जइ घरक भनसिये भऽ जाएत तइ घरमे भानसक जोगार के करत। कनियेँ उच्छन्नर देने भीन भेल, अपन परिवारक भार उठौलक।”

धीरू भैया बुझबैत कहलखिन-

“भौजी, सम्मिलित परिवारक माने ई नहि ने जे किछु गोरे कमेलौं बाँकी सभ बैस खेलौं। सम्मिलित परिवारक माने सम्मिलित जिनगी होइ छइ किने। तँए...।”

धीरू भैयाक बात सुनि लूटनी भौजी बजली-

“अखन जाए दिअ।”

‘अखन जाए दिअ’ बजिते लूटनी भौजीकेँ धुक-दे मोन पड़लैन छोटकी पुतोहु। ओकरे कारनामा कहैले एतए आएल छी।

तइ बिच्चेमे धीरू भैया चरियबैत पुछि देलखिन- “देखू, बेर-बेर एक्के घरक पनचैती केने घर हेहरू भऽ जाइ छइ। तँए जेते झगड़ा अछि से सभटा आइए सुनि लेब। बाजू, दोसर पुतोहु किए परदेश चलि गेल?”

पहिलुका पुतोहुक खेरहा ओराइते लूटनी भौजी खरहीसँ निकैल परतीपर डण्ड-बैसकी करैत नढ़िया जकाँ बजली- “देखियौ बौआ, मझिली सुहरदे मने गेल। ओकरासँ कहियो झगड़ा-झाँटी नै भेल। ओना झगड़ा-झाँटी करए चाहितौं तँ दुनू साँझ होइतए मुदा अपने परहेज करैत रहलौं।”

‘अपन परहेज’ सुनिते धीरू भैया पुछलखिन- “की परहेज केलौं?”

“की पुछै छी जेते करूतेल सात दिनमे खर्चा होइ छेलए तेते एक्के दिनमे करै छेली। मुदा घरक बात केकरा कहितिऐ। लोक कहैत जे पुतोहुकेँ खैयोले ने दइ छइ।”

“अच्छा छोड़ू, भरि दिन अहाँ पुतोहुकेँ नीक-निकुत खुऐबते रहलौं। परदेश किए जाए देलिऐ। बेटा कमाइले गेल आकि घर-दुआर बनबैले?”

धीरू भैयाक प्रश्न लूटनी भौजीक मनकेँ हौंर देलकैन। जहिना छाँछीमे दूध, मक्खन आ पानि रेहीक बले संगे नचैत तहिना लूटनी भौजीक मन नाचए लगलैन। बजली- “बौआ, ओकर बापो शहरे-बजारमे परिवार रखि बेटीकेँ पढ़ेबो केलक आ टरेनिंगो करा देलकै। ओतए ओ दुनू परानी नोकरी करत, कमाएत। ऐठाम कोन काज करैत, तँए विचारेसँ जाए देलिऐ।”

“जहिना दुनू जेठकी-छोटकी पुतोहु आ बेटा घर छोड़ि चलि गेल तहिना जँ तेसरो चलि जाएत तखन की करबै?”

धीरू भैयाक प्रश्न लूटनी भौजीकेँ मरोड़ि देलकैन। चारू दिस नजैर दौगबए लगली। मुदा, जवाबक कोनो बाट नै देखि पाशा पलटैत बजली-

“देखियौ बौआ, गण्डा हुअए आकि गाही, दर्जन हुअए आकि सोरे, असल बेटा तँ दुइए-टा ने होइ छइ जेठका आ छोटका। बाँकी- मैझला-बीचलाक संग तँ कटा-कटी भइये गेल छइ।”

‘कटा-कटी’ सुनि धीरू भैया प्रश्न उठौलैन- “की कटा-कटी भेल छइ?”

प्रश्न सुनिते लूटनी भौजी मचियापर बैसल मचिबाह जकाँ मचमचबैत बजली- “जेना कोइ बिलैंतसँ आबि कहै छै जे गामक किछु ने बुझल अछि तहिना अनठा कऽ बजने नै हएत।”

लूटनी भौजीकेँ धकियबैत देखि धीरू भैया बामा ठेहुनकेँ अरकबैत झमाड़ देलखिन- "अच्छा बाजू, की कटा-कटी भेल छइ?"

धीरू भैयाक आग्रह सुनि लूटनी भौजी अगुआ जकाँ अगराइत बजली- "अहाँकेँ नै बुझल अछि जे जेकरा चारि या पाँचटा बेटा रहै छै, ओइमे बीचला बिनु किछु केनौं पाक-साफ रहैए, मुदा से जेठका छोटकाकेँ समाज बनए देत?"

लूटनी भोजीक प्रश्न सुनि धीरू भैया बौलकेँ आगू बढ़बैत गोलकीमे सेरिया कऽ फेकलैन- "अहाँ मने बीचला जेते बेटा भेल ओ बेटा भेबे ने कएल?"

दुनू हाथसँ गोली बौलकेँ पकैड़ जहिना गोल होइसँ बँचा लइए तहिना लूटनी भौजी बजली- "भेबो कएल आ नहियोँ भेल। रीति-रेबाजकेँ मानबै तँ नइ भेल, अपन बेटत्व बुझबै तँ जहिना एकटासँ छोट अछि तँ दोसरसँ नम्हरो तँ ऐछे किने।"

लूटनी भौजीक बात सुनि दोसर दिस मुड़ैत धीरू भैया बजला-

"एहनो बेटा तँ होइते छै जे जेठका-छोटकाक सीमा तोड़ि माए-बापक सेवा करैत अपनाकेँ जेठका, मझिला, सझिला, छोटकाक पतियानीक बीच ठाढ़ भऽ जाइए?"

धीरू भैयाक प्रश्नक उत्तर नै पाबि लूटनी भौजी करोटिया मारली-

"देखियौ, जेठका-छोटका नै कोनो बात भेल। जँ से होइत तँ हजारक-हजार बेटाबला सगरकेँ कियो काज नै देलकैन। खाइयो बेर भेल जाइए मुदा बात पछुआएले रहि गेल अछि।"

"अहाँ तँ अपने खापैड़मे देल मकइ जकाँ कुदि-कुदि छिड़ियेबो करै छी आ तीसी जकाँ चनचनेबो करै छी। बाजब की फेर वौएबे करब।"

टिकासनपर बैसल घरछाड़ा जकाँ मठौठक खढ़-बत्ती अजमबैत लूटनी भौजी बजली- "अहीं कहू जे ई केहेन भेल, ठेँसगैर जकाँ जे बाजल रहए।"

'ठेँसगैर' सुनि धीरू भैया बजला- "खाली टीकमे ककही चलौने बाबरी नै होइ छइ। सेरिया कऽ बाजू जे झगड़ाक जड़ि की अछि?"

“झगड़ाक जड़ि की रहत? अहाँ नै देखै छिऐ जे घरसँ बलजोरी घिच-घिच स्त्रीगणक संग की होइ छै, तैठाम कहैए जे केमरा लऽ कऽ बिआह-मुड़नमे फोटोग्राफी करब। तेकरा हम रोकबै नहि। लुच्चा-लम्पटक बरियाती भऽ गेल अछि। ताड़ी-दारू पीब छौड़ा सभ नाच करैए तैठाम इज्जत-आबरू लोक अपने नै बँचाएत तँ आन गोरे लेतै की बँचौतै।”

लूटनी भौजीक बात सुनि धीरू भैया ठमकला। अपनाकेँ निरूत्तर पाबि पुछलखिन- “बीचमे तँ बेटो अछि तेकरा की कहलिऐ?”

बेटाक नाओं सुनिते लूटनी भौजी चौकीपर सँ कुदि निच्चाँ आबि बजली- “ओ तँ हिजरा छी हिजरा! ने मौगीए ने पुरूखे, बलिगोबना! ओकरे सहसँ तँ पुतोहुओ दुरि भेल अछि। ओइ निर्लज्जाकेँ कथी कहबै?”

“तखन मुँह किए तकैत रहै छी, दुनू हाथे झोंटा पकड़ब से नहि?”

“मन अपनो होइए मुदा फेर सोचै छी कहीं हाथा-वाहीं भेल तँ ऐ बुढ़ाड़ीमे मारि खाएब, नै जे झोंटा-झोंटौऐल भेल तँ ओकर तरगर केश छै गोटे-आधे उखड़तै मुदा अपन तँ पकल अछि गोट-गोट कऽ बीछा जाएत। तँए डर होइए। एक बेरक जँ पकलाहा केश रहैत तँ ओते दुख नहियेँ होइतए मुदा समरथाइए-सँ जे गोटि-पंगरा शुरू भेल ओ आब सोलहन्नी पाकल हेन।”

‘डर’ सुनि धीरू भैया बजला-

“बेटा-पुतोहु दुनूकेँ कहि दियौ, तुकपर खाइले दिअए। ऐसँ बेसी आब कथीक जरूरत अछि। इन्दिरा आवासक घर भइये गेल, तेहेन-तेहेन स्वीटर, कम्मल, साड़ी पुतोहुओ पठा दइए आ बड़ो-विदाइ तेते होइए जे लत्ता-कपड़ाक जरूरते ने अछि। तखन की चाही। ओना करैए वा नै करैए ई ओकर धर्म काज भेलइ। जँ नहियोँ करत तँ अहाँकेँ छोड़ि भगती से काज चलतैन।”

धीरू भैयाक बात सुनि लूटनी भौजीकेँ जेना किछु हराएल वौस भेटलैन। पुछलखिन- “नइ बुझलौं जे की कहलिऐ, नहि बनतैन?”

गदगदाइत लूटनी भौजीक चैहरा देखि धीरू भैया बजला- “जीता जिनगी अहिना होइ छै हेबै करतै। कहुना अहाँ माए भेलिऐ। जीबैसँ मरै

धरिक भार ओकरा छइ। से जाबे नै पुरौत ताबे परतवाए-क भागी रहत। तँए अहाँ मुइलोपर बिसेबैन।”

मृत्युक असरा देखि लूटनी भौजीकेँ अपन ओछाइनिक जिनगी मनमे एलैन। दबाइयो-दारू तँ करैए पड़तै...।

धीरू भैया लूटनी भौजीक झगड़ा समापन केनौं ने रहैथ आकि लूटनी भौजीक छोटका बेटा–सोमना–आबि रूआब झाड़ैत बाजल-

“काका, ऐ बुढ़ियाकेँ पुछियौ जे एहेन गपक्कैर किए अछि जे अपनो भूखे टटाइए आ हमरो सभकेँ टटबैए।”

सोमनाकेँ सम्हारैत धीरू भैया बजला- “पुरना गप-सप्प मोन पड़ि गेल छेलै तँए देरी भऽ गेलइ।”

आँखिक इशारा लूटनी भौजीकेँ दैत धीरू भैया सोमनाकेँ कहलखिन- “माएकेँ अण्डा-तण्डा खुअबै छहक किने?”

दाँत पीसैत सोमना बाजल- “की खुएबै, बुढ़िया अपने हथकट्टू अछि।”

आगू-आगू लूटनी भौजी आ पाछू-पाछू सोमना घरमुहाँ भेल। मुदा अमती काँटमे लूटनी भौजीक मन ओझराइते रहैन, होनि जे अखन मुहेँ-काने सोमनाकेँ तोपि दिऐ मुदा फेर सोचैथ- एक तँ अबेरक सगुन छी जँ तेकरा भंगठाइए लेब तँ औझुका दिने ओहिना रीब-रीबेमे चलि जाएत। तँए चुपे रहब नीक।

तहिना सोमनाक मनमे अपन तँ कम्मो-सम्म मुदा घरवालीक बात कहैले आन गोरे लग किए गेल, से तामस रहइ। होइ जे लोक जँ नीक कहितए तँ अखने चारिए थापरमे मुँह घूमा घर दिस कऽ दैतिऐ। मुदा एक तँ ओहिना समाजमे अबाह छीहे तैपर जँ एहेन काज करब तँ आरो दोखी हएब। तँए चुपे रहब नीक।



शब्द संख्या: 4288

सड़ल दारीम

नीन टुटिते कुमरा कक्काक मन चनैक उठलैन। ओछाइनपर सँ उठैत कुमरा काका हृदयसँ भगवानकेँ प्रणाम केलैन। प्रणाम करिते मन रमकलैन। रमकल रमैत कुमरा कक्काक मन दिनक कर्माहार-सँ-फलाहार दिस बढ़लैन। बढ़िते ठमैक गेला। ठमैकते मनमे अपन जिनगी नाचए लगलैन- कृषक छी कृषि जीवन अछि। करमेसँ फलागम होइए। गाड़ीक पहिया जकाँ जहिना दिन-रातिक धुरीमे समय चलैए तहिना ने काजोक धुरीमे जिनगी चलैए। चौबीसे घन्टाक बीच जेतेटा दिन तेतेटा रातियो अछि, मुदा से कहाँ होइए? सालक बँटवारामे भलेँ दुनू एक-समान भऽ जाए, मुदा मास आ दिनमे से कहाँ भऽ पबैए? जाड़क मासमे रातिक बढ़ती आ दिनक घटती जहिना होइए तहिना गरमी मासमे दिनक बढ़ती आ रातिक घटती भऽ जाइए। जँ कहियो बरबैर होइतो अछि तँ टिक किए ने पबैए। पाहुन जकाँ दिन भरि रहल आ प्रातेकाल विदा भऽ जाइए। समैये संग ने जिनगियो आ कृषियो चलैए। कृषियो तँ भिन्न-भिन्न अछि। जहिना अन्न तहिना तीमन आ तहिना फलो अछि। मुदा एक रहितो भिन्न-भिन्न चालि-ढालि आ भिन्न-भिन्न गुणो-सुआदमे अछिए। कहैले बारहो मास तीन साए साइठो दिन धान होइए मुदा तँए कि तीन-मसुआ, छह-मसुआ नै होइए? हेबे करैए। हेबो किए ने करत, जन्म-सँ-मृत्यु धरिक जे दूरी छै ओकरा पार करैमे समय लगबे करत। मुदा सेहो एक रंग कहाँ छइ? कोनो धान तीन मासमे अपन जिनगी लीला समाप्त करैए, तँ कोनो चारि मासमे, कोनो छह मासमे आ कोनो साल भरिमे। तहिना तीमनो-तरकारी आ फलो-फलहरीक अछि। जइसँ कोनो समैया, कोनो छहमसिया आ कोनो बरहमसिया बनि जीबैए, तँ कोनो बरहबर्खा बनि सेहो हँसैत रहैए।

कुमरा कक्काक मन पुन: ठमैक गेलैन। ठमकल मनमे फेर उठलैन- जेहेन धरतीक गुण-सोभाव रहत तेहने ने भोजनो-छाजन, वस्त्रो-भूषण आ साजो-श्रृंगार करत। मुदा धरतियोक खेल तँ अपना हाथमे नहियेँ छै, ओहो

तँ दोसरे हाथक खेलौना छी। जँ से नहि तँ केतौ मरूभूमि अछि आ केतौ गाछ-बिरीछ अपन फूल-पातक संग फल-फलहरीसँ लदल केना रहैए..? चित्त असथिर भेलैन। असथिर होइते मनमे एलैन- दारीमक समय आबि गेल। दारीमपर नजैर जाइते कुमरा कक्काक मनमे उठलैन- केना नान्हिटा फूल एते सुन्दर फल गढ़ि लइए! आ सुन्दर की सोझहे फलेटा गढ़ैए? नहि, ओकर रंग-रूप आ भोज्य-अभोज्यक गुणो-सोभाव सेहो सभ ने गढ़ि लइए। तेतबे नहि, जहिना फूल-फल गढ़ैए तहिना अपन शरीरो गढ़ैए। यएह तँ जिनगीक खेल छी, लीला छी...।

ओछाइनपर सँ उठि देह-हाथ समेट कुमरा काका कुरसीपर बैसला। बैसते मोन पड़लैन बाबाक रोपल दारीम। मिथिलाक अमुल्य फल, जनकक फुलवारीक ओहन फल जे ॠषि-मुनिसँ लऽ कऽ राजा-रानीक अतिथि-सत्कार्य करैबला फल। जहियासँ जन्म भेल आ देखैत एलौं तहियेसँ बाबाक रोपल दारीमक गाछकेँ देखैत एलौं। की ओ जनै छला जे आमक तँ गाछी ऐछे, जे एकटा दारीमक, एकटा नेबोक, एकटा लतामक, एकटा शरीफाक दूटा अनरनेबाक गाछ लगौलासँ फूले नहि फलोबला भऽ जाएब। सभ कथुक गाछ अपन घरक पछुआरमे लगौने छला। छोट परिवार रहने अपनासँ उगड़िये जाइ छेलैन। जे दरबज्जापर खुअबेबला रहल ओ बजा-बजा लोककेँ दरबज्जापर खुअबै छला आ जे दरबज्जा परहक नइ रहैत ओ अँगने-अँगने दैयो अबै छेलखिन आ रस्ता-पेरा भेँट भेने कहियो दइ छेलखिन जे लऽ अबिहह। ई सभ तँ बच्चाक बात भेल। जखन स्कूलमे भगवानक प्राथर्ना सेवाक संकल्पित भक्त बनैक करै छेलौं।

जहिना बाबाकेँ अपन जिनगी अपने हाथे चलै छेलैन तहिना श्रवण कुमारकेँ सभ सीख-लीख सिखा देने छेलखिन। सिखा कहाँ देलखिन बच्चेसँ संग रहने एका-एकी अपने सिखैत गेलैन। फलसँ लऽ कऽ अन्न धरिक खेती करै छला, अपन हर-बरद अपन समांग। छोट खेती-बाड़ी अपने सम्हारि लइ छला। सम्हारि कि लइ छला जे छोट परिवारमे जँ काज केनिहार कम रहत तँ खेनिहारो ने कमे रहत। मुदा तँए कि कम श्रमक परिवार अपन जिनगी पूरा कऽ नहि चलैत, मुदा पिताक परोछ भेला पछाइत समैयोमे मोड़ आएल। किसान परिवारमे करखन्नादारक बेटी

आबए लगल। खेतमे काज करैबला बेटी करखन्नादारक घर पहुँचए लगल। फलाफल श्रम शक्तिक हाथसँ काज लूटा गेल। जँ से नहि तँ सभ परिवार बसबए चाहैए मुदा टुट-फाटक एहेन स्थिति किए बनि गेल, जे सभ डीह छोड़ि पड़ेला वएह सभ अपनाकेँ डीही कहि कामत पुजबए चाहै छैथ!

दारीमक समय आबि गेल। सभ फलक अपन समय होइ छइ। अपना समयमे सभकेँ बेसी चलती रहबे करै छइ। रहनाइयो उचिते। रौद-बसात सहलक ओ आ गिरथानि बनइ आन, सेहो उचित नहि। केकरो की समय बान्हल छइ। जेकरा जेहेन मन होइ से तेहेन करह। ओना तँ सभ दिन बाड़ी जाइते छी मुदा ओगरबाहिक हिसाबसँ। काजक हिसाब काजसँ जोड़ल अछि।

कुमरा कक्काक मनमे फेर उठलैन- 'ओह! काजमे ढिलाइ भेल अछि!' जइ समय दारीमक फलमे गोबरसँ लेबा लगबैक छल, तइ समय तेहेन ने लगन जोर मारि देलक जे नते-पिहानीमे वौआ गेलौं। चुक भेल! अखन ने रंग-रंगक दवाइयो आ नव-नव तकनीको आबि गेल अछि मुदा हम तँ अखन धरि गोबरेक लेबापर खेती करैत एलौं..!

सोझहामे काज अबिते कुमरा काका फुरफुरा कऽ कुरसीपर सँ उठि आँगन जा पत्नीकेँ चाह बनबए कहलखिन।

चाह पीब कुमरा काका दारीमक बाड़ी विदा भेला। रस्तेमे मन ततमत करए लगलैन जे दस गोरेक परिवारमे जँ अदहो-अदहो फल देब तैयो पाँचटा चाही। तहूमे धिया-पुता सेहो औत आ जँ कियो हित-अपेछित आबि जाथि तँ की हुनका नै आग्रह करबैन! फेर प्रश्न उठलैन जे आठटा गाछ अछि। करीब दू साए फल हेबे करत। बेरा-बेरी गाछमे सँ तोड़ी आकि सभमे हाथ लगा दिऐ। ओना किसिमक हिसाबे समैयो आगू-पाछू अछि मुदा सभटा रोहणियेँ अछि। नीक हएत जे सभ गाछमे हाथ लगा देब।

बाड़ी पहुँचते फल देखि कुमरा कक्काक मनमे खुशी भेलैन। आन फल जकाँ दारीमकेँ नै होइ छइ। ऊपर नान्हिटा छेद रहै छै, खोंइचाक वृद्धि होइते रहै छै मुदा दाना नष्ट भऽ गेल रहै छइ। मनमे अबिते बेलक गाछपर नजैर गेलैन। जहिना घटक रंग-रंगक बर-कनियाँक जोड़ाक हिसाब लगबैए तहिना कुमरा काका दारीमक भजार बेलसँ करए लगला। बेलपर नजैर

जाइक कारण छेलैन खोंइचाक शक्ति। आम केरा जकाँ नहि जे पहिने गुद्दा सड़त कि खोंइचा तेकर कोनो ठीक नहि। मुदा जेना बेलक खोंइचा मोटो आ सक्कतो होइ छै तेना दारीमक नै होइ छइ। मोटाइमे बेलसँ भलेँ कनी बेसियो भऽ जाउ मुदा सक्कत कम होइ छइ। भगवानोक खेल अजीव छैन। नीक गुणक रक्षा करैले हाथियारो संगे दऽ दइ छथिन। नइ तँ कहू जे आम-जामुनक गाछमे, जे ओते फड़ैए, तइमे काँट देबे ने केलखिन आ बेलमे किए दऽ देलखिन? काँटेटा कहाँ देलखिन, सभटा गहनो-जेबर ओकरे दऽ देलखिन। कहू जे ई उचित भेल? पातो ओहन देलखिन जइमे श्रद्धा-प्रेमक सीरफ बनबैक गुण छै, तँए ने महादेवो बाबा ऐगला आसन दइ छथिन। नहि तँ फूलक डालीमे पात केना चलि आएल। तहिना सुगन्धित फूल देलखिन आ तहिना बनल-बनाएल भोज्यकेँ महिनो दिन रखैक कोठी सेहो देलखिन। तेतबे नहि, जँ तेतबे केने रहितैथ तँ पनचैतीमे सोल्हो-सलूकत होइत मुदा तहूसँ बेसी अन्याय केने छथिन जे तेहेन सुगन्ध भरि हाड़-काठ देने छथिन जे चानन बनि चानिपर चमकैत रहै छइ। सभ फल-ले रोग वियाधि देलखिन आ ओकरा रोग भगबैक गुणो दऽ देलखिन। बेसी फड़ने टिकुलामे जे झड़ि-झूड़ि जाए मुदा अन्हड़-झाँटसँ मुकाबला करैले दमो बेसी ओकरे देलखिन। ओना, दारीम जकाँ भलेँ ओकर रक्षक नै हौउ किएक तँ दारीमक काँट बहुत नमहर होइ छै, मुदा जेतबेटा होइ छै ओ दारीमकेँ के कहए जे बगुरोक काँट निकालि सकै छइ।

कट्ठा पाँचेक बाड़ी कुमरा काकाकेँ छैन, जेकरा ओ पुश्तैनी बुझै छैथ। पुश्तैनीक कारण अछि तीमन-तरकारी आ फल फलहरीक ओ विद्यालये छी। उत्तरबरिया-पछबरिया कोणपर दारीमक आठटा गाछ लगौने छैथ। ओइ आठो गाछपर नजैर पड़िते मनमे उठलैन- दारीम तोड़ए एलौं हेन। काज छी तँए पहिने कइए ली। मुदा जँ पहिने दारीम तोड़ि कऽ रखि दोसर दिस जाएब आ गाछक जड़ियेसँ जँ टुटलाहा फल हल्ला करए लगए जे 'जखन गाछसँ उतारलह तँ पहिने देवस्थान पहुँचाबह आकि गाछक जड़िमे रखि देलह हेन जे परिवारक संग टुटि-टुटि कानैत रहब! से नहि तँ नीक हएत जे जेकर समय समाप्त भऽ गेल आ जे दारीम पछाइत औत दुनूक विचार तँ करब जरूरीए अछि।

सौंसे बाड़ी टहैल-बुलि कुमरा काका दारीमक आड़िपर पहुँचला। आड़िपर बैसते मनमे सुमारक हुअ लगलैन। यएह छी जिनगी, जे फुलाएल-फड़ल आ पकि कऽ टुटि रहल अछि। चौकोर बगानक कोणपर मचान-खोपड़ीक जगह। साले-साल मरम्मैत होइत नव सिरासँ बनैत अखनो धरि अछि। कोण दिसक गाछ हियबैत काका विचारए लगला जे ई बाबेक अमलदारीक छी। पुरना सिरो आ गाछो सुखाएल जाइ छै आ नव-नव सिरो आ गाछो होइत जाइ छइ। पचास बर्खसँ ऊपरेक गाछ छी। बाबू तँ दोसर नै लगौलैन मुदा ओकरे ताम-कोर, छाँट-छुँट करैत रहला। मुदा जखन फलक महत बुझलौं तखन आगू बढ़ि दारीमक बगान लगबैक विचार भेल।

दोसर गाछपर नजैर पड़िते मोन पड़लैन। ओही पुरना गाछक दूटा गाछ अछि। एक गाछसँ दोसर गाछ बनबैमे कहाँ कोनो बेसी तरद्दुत करए पड़ल। हुनके कहल बात मन रहबे करए, अदरा नक्षत्रमे डारि माटिमे गाड़ि देलिऐ, भरिये बरसातमे अपने सिर एते भेलै जे गाछक भार उठबैक शक्ति भऽ गेलइ। कोजगराक परात गाछसँ जुड़ल डारि काटि देलिऐ, जइसँ पुरना गाछसँ सम्बन्ध समाप्त भऽ नव गाछ बनि कऽ ठाढ़ भऽ गेल। अहिना ने सनातन वैदिक पद्धति चलैत आएल अछि। जन-जनक फुलवारीक अमूल्य फल दारीम छी। मुदा जहिना-जहिना तेज गतिए देशक विकास होइत जा रहल अछि तहिना-तहिना जनकक फुलवारी सेहो उजैर रहल अछि। उजैर कि रहल अछि जे उजैरिये गेल अछि। जँ से नहि तँ केतए गेल मिथिलाक अध्यात्म-चिन्तन। केतए गेल संयुक्त परिवार आ केतए गेल स्वयंवर पद्धति?

..जइ मिथिलामे देश-देशक राजा-रजबारक राजकुमार आबि, सीताक बामा हाथक उठौल धनुष तोड़ेक कोन बात जे हिलाइयो नै सकल, धरतीपर जेते ॠषि, मुनि, महात्माक आगमन भेल ओ कोनो-ने-कोनो रूपमे मिथिला आबि मिथिलाक दर्शन केलैन आ दर्शनक पछाइत जनकक दरबारमे अपन उपस्थिति दर्ज करौलैन, एकरा धिया-पुताक गुल्ली डण्टाक खेल बुझब नेनमैतक सिवा आरो की भऽ सकैए। राम लक्ष्मण सन युवराज आ विश्वामित्र सन पारखी जनकपुर आबि अपनाकेँ धन्य बुझलैन।

पनरह दिनक पछाइत दिवाली दिन कुमरा काका दारीमक गाछ रोपैक विचार केलैन। मन कहलकैन- भने दिवाली सन पाबैन अमावसिया दिन होइए। अही पनरह दिनमे दुनू गाछो अपन जगह बना ठमा गेल। जेते दूरमे ओकर सिर पसरल छै तइसँ कनी आगूए-सँ माटिक स्थल उखाड़ि दोसरठाम रोपि देबै, किए गाछ बुझत जे हमरा संग कुभेला भेल, सेवामे दू लोटा पानि जड़िमे ढारि देब, सएह ने। दिवाली दिन, सुखल माटिकेँ मेहीसँ फोड़ि, पानिमे सानि, दुनू हाथक आँगुरसँ गढ़ि, एकटा मुँह बना, करुतेल आकि घीमे वस्त्रक सूतक बनल बातीकेँ भीजा, पेटमे भोजन दऽ ताधैर जरैले छोड़ि देल जाइ छै जाधैर तेलक संग बाती नै जड़ि जाइत अछि। जहिना सजमैन, कदीमा, घेड़ा-झुमनी रोपैले बुढ़िया दादी अपन पोतीकेँ संग केने छोटका खुरपी नेने भोरे बाड़ी पहुँच जाइत जे कुमारि कन्याँक सेवा सीता मैयाक सेवा छिऐन। तँए बच्चाक रोपल गाछ निरोगो हएत आ समय पबिते फड़बो करत। तेतबे नहि, अपन रोपल रहतै साँझ-परात देखबो करत जे जन्मल आकि नहि। आब जे अपना हाथे रोपब तँ ओहो कहीं बुढ़िया चालि पकैड़ बुढ़ाड़ीए-मे फड़ैक विचार ने कऽ लिअए। मुदा से नहि, बुढ़ाड़ीक रोग बिसरबो छी। जइ बीआकेँ माटिमे रोपि ओकरा औंकरा माटिक ऊपर आनि गाछ बना लत्तीकेँ साँगह दऽ दऽ फुलाइ-फड़ै-जोकर बनौल जाइए, तेकरा जे समुचित देखभाल नै हएत तँ जे नान्हि-नान्हिक कीड़ी-मकौड़ीक शिकार छी ओकर जिनगी केना बँचत।

अगते ऐगला मौसममे दुनू गाछक मुड़ी-मुड़ी नहि, एक्के मुड़ीमे निच्चाँ-ऊपर फुलाएल। मुदा कम आँट-पेटक रहने एक-एकटा फल पकड़लक। केना नै पकड़ैत? चुमौनियाँ कनियाँ ने रहए, कोनो कि कुमारि कन्याँ छेलए। हँ, ओना बहुतो एहेन अछि, जेना अनरनेबा, जे डारिक गाछक रूपमे फड़ि जाइत अछि...।

मनक जिज्ञासा कुमरा कक्काक बढ़लैन। दारीम केहेन माटि-पानिक छी ई तँ सोझहेमे अछि। कोनो अनाड़ी-धुनाड़ी खेती करब आ बकना जाए तइसँ नीक देखल-बुझल दारीमक खेती नीक। ओना अपना ऐठाम मौसमक जे खेल अछि ओ बहुत कमे इलाकामे छइ। जाड़-रौद-बरसातक बीच साधना स्थल छी। अहिना नहि ने कातिककेँ ‘धरम मास’

कहल जाइए। अनेको रंगक अन्न, अनेको रंगक तरकारी, अनेको रंगक फल-फूल लगबैक मास कातिक छी। अनुकूल समय रहने कातिकमे अंकुरन शक्ति धरतीमे अधिक भऽ जाइए। मुदा से लाभ तँ तखन ने लेब जखन ओकरा धर्म-स्थल जकाँ सजाएब। प्रकृति अपन अनुकूलते ने पसारत आकि कैयो वएह देत, कोनो कि ओकरा हाथ-पएर छइ। बड़ करत तँ बोन-झाड़ लगौत। छगुन्ताक बात ई नै भेल जे केतौ बीआसँ गाछ, तँ केतौ लत्तीए-सँ गाछ, केतौ लत्तीए-मे फल, तँ केतौ गाछेमे तरकारी, केतौ डारिये-सँ गाछ, तँ केतौ डारिये-मे सिर, केतौ पत्तेमे गाछ, तँ केतौ फुलेसँ गाछ होइए।

दारीमक गाछक दोसर पतियानीपर नजैर पड़िते कुमरा काकाकेँ धक-दे द्वारका मोन पड़लैन। ओइ साल जखन द्वारका गेल रही तँ आरो देश-कोस देखैक मन भेल रहए तँ नागपुर चलि गेलौं। की पहाड़ी इलाका छल। की फलक खेती रहइ..! कुमरा काकाकेँ अपना मनमे रहबे करैन जे दारीमक गाछ लेब। ओना नर्सरीमे हलुआइए दोकान जकाँ रंग-बिरंगक गाछ रहइ। मुदा पहिने जीवैत जिनगीमे जान फूकब आकि अनठिया भाँजमे पड़ि अनठीए बनि जाएब। मुदा तैयो कुमरा काका गाछक रंग रूप देखि नर्सरीबलाकेँ पुछलखिन- “ई कथीक गाछ छी?”

कहलकैन- “अनारक।”

ओना ‘अनार-दारीम’क बात मनमे उठलैन मुदा गाछक हाड़-काठ आ डारि-पात देखि बिसवास भऽ गेलैन जे दारीमे छी। भऽ सकैए जे माटि-पानि-हवाक दुआरे किछु अन्तर होइ मुदा छी दारीमे। ओना जहिना नीक खाँढ़क गाएकेँ दब साँढ़सँ पाल खुऔला पछाइत बच्चाक खाँढ़ निच्चाँ मुहेँ उतैर जाइए आ दबो खाँढ़क गाएकेँ नीक साँढ़सँ पाल खुऔलापर ऊपर मुहेँ खाँढ़ बढ़ि जाइ छै, तहुना भऽ सकैए वा एक कुल-खुटक रहितो दोसरो-तेसरो कारणे किछु अन्तर आबिए जाइ छइ। खाएर जे हौउ। कक्काक मन मानि गेलैन जे बेसी तँ नहि, एकटा गाछ कीनि लेब।

गाछबलाकेँ फेर पुछलखिन- “एकटा गाछक दाम कहू।”

कुमरा काकाकेँ नर्सरीबला बहरबैया बुझि परेख नेने रहैन। एकटा गाछ सुनि बुझबैत कहलकैन- “देखू, नबे-पनचानबे प्रतिशत गाछकेँ लगैक

गारंटी करै छिऐ। पाँच-दस प्रतिशत सुखियो सकै छइ। एकटा गाछ लेब आ जँ कहीं सुखि गेल तँ अहूँक आशापर पानि पड़ि जाएत आ हमहूँ गारि सुनब, तँए नीक हएत जे दूटा गाछ लिअ।"

नर्सरीबलाक बात कुमरा कक्काक मनमे जँचलैन मुदा एकटा दोसरो बात मनमे आबि गेलैन। ओ ई जे जखन एकटाक बिसवास दइए तँ दाम किए दूटाक लेत? पुछलखिन- "लगत एकटा आ दाम लेब दूटाक?"

कुमरा कक्काक प्रश्न सुनि नर्सरीबला बिनु विचारने बाजि देलक-

"गाछो तँ दूटा देब।"

मुदा कुमरा कक्काक गुम्मी नर्सरीबलाक मनमे ठमकल। विचारैत बाजल- "दूटाक दाम नहि, देढ़ेगोक दाम लागत, दूटा गाछ देब।"

दुनू गोरे राजी भेला। वएह चारिम गाछ छिऐन। आब तँ आने गाछ जकाँ ओहो फड़ै-फुलाइ छैन। ओना मिथिलांचलमे दर्जनो किसिमक अनार, दारीम, बेदाना, नारंगी इत्यादि अछि मुदा सबहक नाओं दारीमे छिऐ। गाछक फल द्वारकाक फलमे बदैल गेलैन।

चारिम गाछसँ पाँचम गाछपर कुमरा कक्काक नजैर पहुँचलैन, पहुँचते इलाहाबाद-प्रयागक कुम्भ मेला मोन पड़लैन। ई गाछ ओतुक्के छी। बहुत दिनक पछाइत कुम्भो लागल आ अपनो दारीम लगबैक विचार मनमे रहबे करए, ई दुनू गाछ ओत्तैसँ अनने रही। मुदा ओ 'बेदाना' कहि कऽ अनने रही। ऐठाम तँ दारीमे छी। ओना किछु अन्तर होइते छइ। से तँ आनो-आनोमे होइ छइ। तँए कि नामे बदैल जाए!

छठम गाछपर नजैर पड़िते काकाकेँ कश्मीरक अमरनाथ मोन पड़ि गेलैन। मोन पड़िते छगुन्ता लागए लगलैन। केतेक सुन्दर फल होइए! जहिना रंग-रूप तहिना मोती सन दाना, जे फलक भीतर बसहा कागजक चद्दैर ओढ़ि मधुमाछी छत्ता जकाँ घोदिया अपन जिनगीक पूर्ण विकास करैए..!

मुदा लगले कक्काक मन बहैट गेलैन। मनमे उठि गेलैन- झंझटिया जगहक फल छी। अकबरेक समय जे झंझटक जड़ि ओतए रोपाएल से सभ दिनक झंझटिये रहि गेल। कहियो कम, कहियो बेसी, मुदा झंझट

मेटाएल नहि। तइसँ नीक अपने सभ–बिहारी–छी। खाएर जे हौउ, मुदा बागक बोन आ झीलक झिलहोरि बेसी ओकरे सभकेँ छइ। जेहने शालीमार, निशातक बोन तेहने डल झील। ओना, अपने सभ जकाँ धानक चूरा-चाउर, भात गहुमक रोटी, मकैक भुजा, ओरहा खाइए मुदा मलड़ैए बेसी अपना सभसँ। किए ने बेसी मलड़त, अपना सभ पानिमे नहाइ छी, ओ सभ बेसी बरफेमे नहाइए। ओना अकास गंगाक जलधार सेहो होइ छै मुदा अपना सभसँ कम। मुदा जे हौउ, ओकरा सभ जकाँ फल सड़ा कऽ नहि खाइ छी, टटका खाइ छी। सातम गाछपर नजैर पड़िते कक्काक मोन पड़ि गेलैन हरिद्वार। पाथरक धारक पवित्र जलधार। माटिसँ घोराएल नहि, किए ने हरिक दुआर बनत। आठम गाछपर नजैर पड़िते जगरनाथ मोन पड़लैन। समुद्र-पहाड़ बीच बसल जगरनाथ। एक्के बगानमे दारीम, अनार, बेदाना, नारंगी सभ अपन-अपन जगह पाबि जिनगीक फल लूटबैए...।

चढ़ैत सुरूज देखि काजकेँ आगू बढ़ाएब बुझि कुमरा काका आड़िपर सँ उठि दारीम तोड़ैले पहिल गाछ पहिल फलपर हाथो बढ़लैन आ नजरियो देलखिन। फल तँ छेदाएल छइ! ऊपरेसँ भूर भेल अछि। जरूर फलमे कीड़ाक प्रवेश भऽ गेल अछि। पहिल फल छोड़ि दोसर देखलैन, ओहो तहिना..!

छेदाएल फल देखि कुमरा कक्काक मन कलैप उठलैन। भरिसक गाछक सभ फल सड़ि गेल अछि! मुदा हूबा करैत दोसर गाछ दिस बढ़ि हाथसँ फल उठा देखलैन तँ ओहो छेदाएले! दोसरो-तेसरो चारिमो ओहिना रहइ।

आठो गाछक फल देखि काका हिया हारि देलैन जे सालक अमृत फल छिना गेल। मन कहलकैन- चूक अपने भेल जे लगन-पाती आ भोज-भातक फेरिमे पड़ि फल छिनबा लेलौं।



शब्द संख्या: 2577

चुप्पा पाल

गोसाँइ लुकझुक कऽ रहल छल। ओना छह बाजि गेल छल मुदा सुरूज अपन दिन भरिक यात्राक अन्तिम पड़ावपर अँटैक तकिते छला...।

पतराएल काज रहने नीलकण्ठ काका सबेरे-सकाल निचेन भऽ गेल छला। जहिना परिवार मोटेलासँ परिवारक काजो मोटाइ छै आ दुबरेलासँ दुबरेबो करै छै तहिना नीलकण्ठो काकाकेँ भेलैन। ओना, परिवारक संस्कारो आगू बढ़लैन मुदा काजो पूरने काज पतराइए। होइतो तँ तहिना छै जे जन्म होइते संस्कारोक जन्म होइ छै आ अन्त होइत अन्तो होइ छइ।

नीलकण्ठ काकाकेँ तहिना भेलैन। किए ने हेतैन, सोझहे लग्गीसँ घास खुएलासँ नहि ने होइ छै जे आगू ताकब तँ दादा-परदादा देखब आ पाछू ताकब तँ नाति-छेड़नाति देखब। बाल-बच्चाक बिआह-दान भेने माए-बापक जिनगीक प्रमुख कर्म-धर्मक पूर्ति होइ छै जइसँ बाल-बच्चाक प्रति अपन दायित्व पूर्ति करै छैथ। बेटा बिआहक आइ पनरहम दिन छिऐन। पैघ यज्ञसँ दुनू परानी मुक्ति पाबि जहिना साबुनसँ वस्त्रक मोलि साफ कएल जाइए तहिना माए-बापसँ लऽ कऽ बेटा-बेटीक परिवार बना जिनगीक मोलिकेँ कर्मक साबुनसँ घोइ अपन मनक सफाइ करए चाहलैन। नीलकण्ठ कक्काक मनमे उठलैन जे बेटा-बिआहक अन्तिम हिसाब जोड़ि किए ने काजक विसर्जन कइए ली। आब कि कोनो ओ जुग-जमाना रहल जे तीन-तीन-चरि-चरि मास गरदैनमे उतरी झूलिते रहत। जे काज महज चारि-पाँच घन्टाक छी। मन गबाही देलकैन जे से नहि तँ आइ अन्तिम हिसाब–बिआहक लाभ-हानिक हिसाब–कऽ काजक विसर्जन कइए लेब। जहिना बोनैया हरिणक बच्चा पकड़ाइते चारूकात चौकन्ना हुअ लगैत तहिना नीलकण्ठ काकाकेँ भेलैन।

पतिकेँ काजसँ विश्राम होइते देखि सुचिता काकी हाँइ-हाँइ अपन काजक मुड़ी मोड़ि चाहक ओरियानक विचार मनमे अनलैन। किएक नहि

अनती, ओहन जनाना थोड़े छैथ जे पतिकेँ विकलांत देखि ओइसँ बेसी अपने विकलांतता देखबए लगती।

सुचिता काकी केतली-लोटा नेने कल दिस बढ़ली, मनमे उठलैन पहिने अपने हाँइ-हाँइ पएर धोइ लोटा-केतली अखाड़ब आकि लोटे केटली अखाड़ि पानि भरि ली? मन ततमत करए लगलैन, ओना ऐ उमेरक ई प्रश्न नइ भेल, मुदा सभ काजक अपन गति-विधि छइ किने। अपने जिनगीक काज ने दोसराकेँ सेहो बाट देखौत। समयसँ पहिनहि सुचिता काकी चाह बना दहिना हाथे गिलास नेने नीलकण्ठ काका लग पहुँचली।

अखन धरि नीलकण्ठ काका मुड़ी निच्चेँ मुहेँ केने छला। मनमे बेटा बिआहक काज घुरियाइत रहैन। मुदा चाहक गिलास जखन सुचिता काकी निच्चेँ दबा बढ़ौलकैन तखन आँखि पड़िते काका नजैर उठौलैन। भकुआएल मुँहक सुरखी देखि काकी नजैर-पर-नजैर गड़ौलैन। मुदा कक्काक मन अपन विचारपर रहैन। ओना, काकीकेँ बुझि पड़लैन जे भरिसक कोनो दब कएल काज मनकेँ पकड़ने छैन। मुदा जँ चाह पीबैसँ पहिने किछु बाजि जँ कोनो बात लाड़ब तँ भऽ सकैए जे चाह पीब छोड़ि अपने बेथासँ बेथित भऽ जाथि, तइसँ नीक जे चुपचाप हाथमे चाहक गिलास पकड़ा अपनो चाह अँगनासँ आनि एतै पीबो करी आ पछाइत पुछियो लेबैन। तैबीच दू-चारि घोंट चाहो घोंटि नेने रहता जइसँ मनोक जुआरि कमतैन। ओना उदास चेहराक केतेको कारण होइ अछि। केतौ रौद-बसातक उदासी, तँ केतौ कोनो काज नै भेने उदासी होइए, केतौ परिश्रमक नोकसानक उदासी, केतौ धिया-पुता मुइने उदासी तँ केतौ माए-बाप मुइने। मुदा तँए कि पतिक बेथा पत्नी नहि सुनैथ। पति-पत्नीक बीच हजारो रूप अछि, हजारो रंग अछि तँए कि बजा-भुकी बन्न भऽ जाए..?

आँगन दिस सुचिता काकी बढ़ली। तैबीच एक घोंट चाह पिबते नीलकण्ठ कक्काक मुँह मुस्कियेलैन। मुस्कियाइत मनमे उचरलैन- कहू जे एहेन काजकेँ की कहबै?

काज छेलैन डेढ़ साए जोड़ धोती आ तेकर आरो संगी सबहक–माने पाँचो टुक कपड़ाक–संग विदाइ करब। ओना डेढ़ साए बहुत भेल मुदा से नहि, अज-गज बला परिवार छैन किने कक्काक। चारि भाँइक अपन

भयारिये छैन, तेकर नैहर-सासुर भेल, नाति-नातिन, पोता-पोतीसँ लऽ कऽ अपन सासुरक सातो सम्बन्धी, तैसंग बेटाक हाइ स्कूलसँ लऽ कऽ कौलेजक संगीक संग नोकरीक संगी धरि। मुदा नीलकण्ठ काका हृदय खोलि काज केलैन। ओना, प्रश्न तँ मनमे उठलैन मुदा लगले जवाब भेटलैन जे जग-जापमे खर्च होइते छइ। जँ से नै होइ तँ धनक काजे की रहत। पेट तँ सागो आ एक लोटा पानियोँसँ मानियेँ जाइ छइ...।

कक्काक मन नचिते रहैन कि सुचिता काकी मुँहमे चाहक गिलास भिरौने आगूमे आबि बैसली। तही बीच नीलकण्ठ काका अपन चाहक गिलास चौकीपर रखि हाथक पाँचो ओंगरी घुमबैत बजला- “कहू तँ ई केहेन भेल!”

नीलकण्ठ कक्काक प्रश्न सुनि सुचिता काकी अकचकाइते रहली जे की केहेन भेल। बाघ भेल कि साँप भेल से केना बुझती। ओना दुनू परानीक मन बेटा बिआहसँ तेते खुशी रहैन जे छोट-छीन केते बातो आ काजो मनसँ हटि गेल रहैन मुदा मनोक तँ अपन संसार छइ। प्रसंगोक अपन स्थानो आ महत्तो छइहे। दुनू बेकतीक सझिया काज रहैन तँए आरो बेसी मन खुशी रहैन। खुशी हएब उचितो छल किएक तँ केतो एहनो होइ छै जे प्रेमरस पीब, मधुर गीत गाबि सन्तान पैदा होइ छै आ किछुए दिनक पछाइत सभ किछु उनैट जाइ छै, ओइ बेटासँ तँ नीक काज भेले रहैन।

ओना चारि सन्तानमे एकटा बेटा तीनटा बेटी छेलैन। जे तीनू बेटी बेटासँ जेठे छेलैन जेकर बिआह-दुरागमन पहिनहि कऽ नेने छला। तीनू बेटी- बिआहक दान-दहेज देखि दान-दहेजसँ मने उचैट गेलैन, जइसँ नीलकण्ठ काकाकेँ बेटाक प्रति दान-दहेजक विचार मनेमे दबि गेलैन। कारण ई भेलैन, तीनू बेटीक बिआहमे जेतेक खर्च भेल तइसँ बेसी जँ बेटीबलाकेँ खर्च कराएब ई तँ सोझहा-सोझही अन्याय हएत। मुदा से कहाँ होइ छै, दहेजक दुआरे बेटी बिआहकेँ लोक अगर-मगर करैत टपि जाइए मुदा बेटा बेरमे बिनु पढ़लो-लिखलकेँ डॉक्टर-इंजीनियर बना देल जाइए। जहिना बरदहट्टामे फुसि-फासिक तेजी रहै छै तहिना ने बेटो-बेटीक बिआहमे...।

यज्ञ सन पवित्र स्थलमे जँ फुसि-फासिक तेजी नै रहत तँ ओ यज्ञ

शुद्धे केना हएत? खाएर जे हौउ, मुदा नीलकण्ठ कक्काक मन मानि गेलैन जे जेते तीनू बेटीक बिआहमे खर्च भेल ओते आमद एकटामे केना हएत। तइसँ नीक जे मुँह-छोहैने नइ करब। हथउठाइ जे हएत सएह हएत।

पतिक बिपटा बानि–हाथक ओंगरी घुमा बजैत–देखि सुचिता काकीकेँ हँसी लगलैन मुदा हँसबो तँ हँसबे छी। केतौ गुदगुदबैए तँ केतौ भकभकेबो करैए। माने, काज नफगर रहल घट्टो नफे बुझाइ छै आ घटगर रहल तँ नफो घट्टे बुझाइ छइ। पथराएल केराउक भुज्जा जकाँ सुचिता काकीक दाँत तर नीलकण्ठ कक्काक आक्रोश पड़लैन। मुदा आक्रोशो तँ आक्रोशे छी, मुदा कथीक आक्रोश? तँए जाबे उघारि-उघारि नै बजता ताबे बुझब केना? सुचिता काकी बजली-

“तेना झाँपि-तोपि कऽ बजै छी जे ऊपरे-घाँड़े रहि गेलौं, तँए कनी बिक्छा कऽ बजियौ। जखन दुनू गोरेक सझिया जीवन अछि तखन हम हँसी आ अहाँ कानी ई केहेन हएत?”

खिस्सकरकेँ जहिना एक्कोटा खिस्सा सुननिहार भेटला पछाइत अपन सुधि-बुधि हेरा जाए छै तहिना नीलकण्ठ काकाकेँ सुचिताक बोल सुनि भेलैन, बजला-

“परिवारक महान यज्ञ बेटा-बेटीक बिआह छी, आ ओ यज्ञ जँ नीक जकाँ सम्पन्न भऽ जाए तँ खुशीक बात भेबे कएल। ओना, तइले देहोक धौजैन आ पाइयोक धौजैन तँ हेबे करत। मुदा तइमे उचित-अनुचितक तँ विचार करए पड़त किने?”

नीलकण्ठ कक्काक मनकेँ पकड़ैक चुट्टा सुचिता काकी भिड़ा हुँहकारी भरैत बजली-

“ऐमे के ‘नहि’ बाजत?”

जहिना एक्के भगवान भिन्न-भिन्न स्वरूप भिन्न-भिन्न फूल-पत्ती पाबि खुशी होइत तहिना नीलकण्ठो काकाकेँ भेलैन। सुचिता काकीक नजैर-पर-नजैर गड़ा बजला-

“उचित-अनुचितकेँ बेराएब असान नइ अछि, जिनगीक संगीए रहने की हएत। विचारक संगी भेने ने काज चलत?”

नीलकण्ठ कक्काक बात सुचिता काकीकेँ अकठाइन लगलैन। मनमे उठलैन- कहू! सभ दिन एकठाम रहि सभ किछु करै छी तखन एना किए बजै छैथ? भरिसक कोनो एहेन उकड़ू सोग ने तँ मनकेँ पकैड़ नेने छैन। आन दिन केहेन बढ़ियाँ हबगब करै छेलौं आ आइ की भऽ गेल छैन! बजली- "कनी नीक जकाँ अपन उदासीक कारण बजियौ। हम ऊपरे-झापड़े रहि गेल छी।"

सुचिता काकीक जिज्ञासा देखि नीलकण्ठ काका बजला-

"उचित अनुचित दुनू काजक दू छोर भेल। एक छोर उचित भेल आ दोसर अनुचित। मुदा तइसँ थोड़े काज चलत। सुत-सुत मिलि जहिना डोरी बनैए तहिना दुनू अछि। तेकरा जँ बिहिया कऽ नै सीमा देब तँ काजे भँसिया जाएत किने। बुझबे ने करबै जे केतए की भऽ गेलइ। पछाइत बाजब जे मनमे जे छेलै से भेबे ने कएल। अहीं कहू जे मनेक विचारकेँ ने काज रूप बना केलिऐ तखन किए ने भेल?"

नीलकण्ठ कक्काक विचार सुचितो काकीकेँ दमगर बुझि पड़लैन। माथ कुड़ियबैत बजली-

"तखन केना हएत?"

सुचिता काकीक पघिलल मन देखि नीलकण्ठ काका बजला-

"बड़ भारी जाल छइ। फुलवारीक फूलमे देखबै जे एके नामक अपराजित फूल उजरो होइए, लालो होइए आ कारियो होइए। तँए सोझहे अपराजित आकि आने फूल जे रंग-रंगक होइए, कहलासँ थोड़े बुझि पेबे जे लाल-कारीमे कोन नीक आ कोन अधला भेल?"

नीलकण्ठ कक्काक छिड़ियाएल बात सुनि सुचिता काकी समटैत बजली- "अच्छा, छोड़ू एते छान-पगहाकेँ। एक-एक काजकेँ उठा बेड़बैत चलू जे की नीक भेल आ की अधला भेल।"

पत्नीक विचार सुनि नीलकण्ठ काका बजला- "हँ, बड़बढ़ियाँ विचार देलौं। मुदा पहिने ई कहि दिअ जे केते काज अढ़ेला पछाइत करै छी आ केते अपने फुरने करै छी?"

पतिक बात सुनि सुचिता काकी अकबका गेली। मने-मने विचारए

लगली जे ई की भेल? की एकरा काज करब नै कहबै? घर-परिवारक जखन काज भइये गेल तखन काज केना नइ भेल। भरिसक बुधिए तँ नै घुसैक गेलैन हेन, नै तँ एहेन बिनु हाथ-पैरक बोल किए भेलैन? हलाँकी एक्केटा बातमे सेहो मानब उचित नै हएत। जँ मन घुसकल-फुसकल हेतैन तँ दोसरो-तेसरो बात अहिना बजता।

ओना लोककेँ बेरो-बिपैत आ काजो-उदममे मन घुसैक-फुसैक जाइ छइ। आंशिक रूपमे ईहो की ई झूठ अछि जे किछु सरकारियो कर्मचारी वा शिक्षकोकेँ बेटीक बिआह सेहो पतित बनौलकैन। परिस्थितियो रहल जे केते शिक्षक हाइ स्कूल वा कौलेजसँ सेवा-निवृत भऽ गेला मुदा हाथसँ कहियो वेतन नै उठौलैन। मुदा तँए कि परिवारमे खर्च नै छेलैन? से तँ छेलैन्हे। मनकेँ थीर करैत सुचिता काकी तँइ केलीह जे से नहि तँ जे बुझैमे नै आएल से पुछिए किए ने लिऐन, पुछलखिन-

“की कहलिऐ अढ़ेलोत्तर आ अपने फुरने?”

सुचिता काकीक प्रश्न सुनि नीलकण्ठ कक्काक मनमे उपकलैन- भरि दिनक हराएल जँ साँझो घरि घर पहुँच जाए तँ ओ हराएब नै भेल। दिन तँ होइते छै वौआइये-ले तखन वौआएब हराएब केना भेल। बजला-

“जखन कोनो काज अढ़ेला पछाइत जे करैए ओ अपन उहिक नइ भेल। जँ ओकरा अढ़ाएल नै जाए तखन ओ करत की? अहीं कहू?”

नीलकण्ठ कक्काक विचार सुनि माथक मोटा पटकैत सुचिता काकी बजली- “अहाँ अपनाकेँ एतबे किए बुझै छिऐ जे हमरा कोनो काज करैले नै कहब। जँ से नै कहब तँ केना बुझबै जे हमर बात फल्लीं मानैए कि नहि?”

पाशा पलटैत नीलकण्ठ काका बजला-

“जड़िसँ छीप धरिक काजक हिसाब-किताब करैमे बड़ समय लागत। से नहि तँ एक्केटा काजक हिसाब करू।”

‘एक्केटा’ सुनि सुचिता काकीक मन हलचलेलैन। मन कहलकैन- ई तँ सोलहन्नी एकतरफा भेल! धड़फड़ा कऽ बजली-

“अहूँक बात रहल आ एकटा हमरो अछि।”

“से की?”

“सवारी बरियातीक हिसाबसँ होइ छै तइमे एते गाड़ीक कोन प्रयोजन छेलै, जे लऽ गेलौं?”

सुचिता काकीक प्रश्न सुनि नीलकण्ठ काका बजला- “अच्छा, अहीं विचार दिअ जे पहिने की विचारब?”

पतिक शीतल छाहैर पाबि सुचिता काकी बजली-

“पहिने गाड़ीए-सवारीक विचार करू। किए पच्चीसटा गाड़ी लऽ गेलिऐ, जखन कि डेरहे साए बरियाती गेलिऐ।”

‘गाड़ीक’ नाओं सुनि समाजमे जीतक अनुभव नीलकण्ठ काकाकेँ भेलैन। अखन धरि समाजमे कियो बीसटा गाड़ीसँ आगू नै बढ़ल छला तैठाम पाँच गाड़ी बढ़ैक प्रतिष्ठा केकरा भेटल। आह्लादित होइत नीलकण्ठ काका बजला- “अपन मनोरथ छल जे आगू बढ़ि काज करी। अहाँकेँ तेकर दुख किए अछि? प्रतिष्ठा की फूटा कऽ भेल आकि सम्मिलिते भेल।”

एक तँ ओहिना सुचिता काकीक मन बेटा बिआहक खुशीसँ उधियाएले रहैन तैपर पतिक मनोरथ सुनि आरो उधिया गेलैन। बजली-

“अनकासँ तँ नीक काज जरूर भेल। देखै छिऐ जे अल्हुआक बोरा जकाँ मनुक्ख गाड़ीमे ठसमठस बरियाती जाइ-अबैए आ गाड़ीए-मे मुँह पेट सभ चलए लगै छइ। तइसँ नीक भेल जे जे कियो गेला, अरामसँ गेला आ अरामसँ एला।”

सुचिता काकीक बोल सुनि नीलकण्ठ कक्काक मुहसँ हँसी फुटलैन।

पतिक हँसी देखि काकीकेँ भेलैन जे भरिसक हमर निशान उचित जगहपर लगलैन। अपन बराइ सुनि खुशी हएब मनुक्खक जन्मजात संस्कार रहल अछि। अपन उचित जगहक निशानसँ पतिक मुँहकेँ लाबा जकाँ हँसाएब सफल पत्नीक प्रमुख लक्षण तँ भेबे कएल। मुदा नीलकण्ठ कक्काक हँसीक कारण सुचिता काकीक निशान नै बल्कि समाजमे अरामदेह बेसी गाड़ीकेँ बेटाक बिआहक बरियातीमे लऽ जाएब छेलैन। जेकरा बेटाकेँ अधिक दान-दहेज बिआहमे भेटै छै, समाजमे ओकरे मान

भेल किने। जँ मान बढ़ल तँ जरूर अंको बढ़ले हएत...।

पेटक गुदगुदी असथिर होइते सुचिता काकी बजली- "आब, हाँ-हाँ-हीं-हीं छोड़ू। भानसोक बेर भेल जाइए। अखन पुतोहुकेँ चुल्हिक भार थोड़े देबइ। जइ बेथे बेथाएल छी से बेथा निकालू। जाबे गुर घाउ जकाँ कोनो बेथाकेँ नीक जकाँ नै निकालि बहा लेब ताबे सड़ैन-असाइक डर रहिते छै, तँए आदो-पान्त बाजू?"

जहिना कियो संगीतज्ञ उच्च कोटीक मंचपर कलासँ श्रोताकेँ मुग्ध कऽ सुता दइए तँ केतौ एकान्त बनमे असकरे कियो अपन गुणसँ निराकार रूप भगवानकेँ सुन-भरत जकाँ नन्दी गाम बना राज-काज चलबैए तहिना अपन बेथित वाणकेँ निकालैत नीलकण्ठ काका बजला- "बिआहक आन खरच आ काजपर मन केतौ नै अँटकल अछि, किएक तँ चाउर-दालिमे खर्चो भेल तँ बदलामे लोको, मालो-जाल आ चिड़ैयो खेलक। आ गाड़ी-सवारीमे खर्च भेल तँ ईहो उपराग नै भेटल जे किनको डॉक्टर ऐठाम जाए पड़लैन। मुदा डेढ़ साए जोड़ धोती मिला पाँचो टुक विदाइमे जे खर्च भेल ओ टारनौं मनसँ नै हटैए।"

जहिना मरूभूमिमे बालुक सिबा किछु नहि देखा पड़ैत तहिना सुचिता काकीकेँ बेटा बिआहक सफलता मनमे छेलैन्हे चमैक चरचरेली-

"राँड़ कानए अहिवाती कानए तइ लगल बड़कुम्मैर कानए..!' सुहरदे मुहेँ किए ने बजै छी जे अहूँकेँ आने बरक बाप जकाँ कननी बिमारी धेने अछि तँए कनै छी। अपने मने जे केतबो गुर-चाउर चिबबैत कानब तँ की संगियोँ रहैत हमहीं बाँटि थोड़े लेब? खाएर.., देह तँ रोगाएल अहींक अछि, तँए बिमारीक जड़ि तँ अपने बुझैत हेबइ। बाजू, खोलि कऽ बाजू, भानसमे देरीए हएत तँ की हेतइ। मनक घाउ जे मेटाएल रहत तँ खाइयो आ सुतैयोमे रुचि औत।"

सुचिता काकीक विचार सुनि नीलकण्ठ कक्काक मनमे उठलैन- जे भरिसक लोक ठीके कहै छै राजाकेँ किदैनक चिन्ता आ रानीकेँ किदैनक। मुदा मनक बेथा नीक जकाँ वएह ने बुझि पाबि सकैए जेकर हाथ-पएर नमहर हेतइ। घटको सबहक अजीब गति अछि। बर-कनियाँक घरदेखीमे

लगले सर्टिफिकेट दऽ दइ छैथ जे सीता-रामक जोड़ी अछि। विधातो जेना जोड़े लगा पठौलैन। मुदा नै सोलहन्नी तँ अठन्नियोँ बेथा तँ भगबे करत। सोलहन्नी तँ तखन भगै छै जखन सुननिहार पहिने बेथाकेँ सुनि बेवसथित ढंगसँ समाधान करै छैथ, मुदा तइसँ कि अपन बेथा हृदयसँ निकाललोपर तँ अदहा कमिते अछि। किएक ने कमत? लोक नै सुनत तँ नै सुनह मुदा उगलाहा तँ सुनबे करता...।

नीलकण्ठ काका बजला- "विदाइमे केते खर्च भेल से बुझल अछि?"

जेना ठोरेपर बरी पकैत रहैन तहिना सुचिता काकी बजली-

"विदाइ तँ विदाइ भेल, तइमे हमरा बुझैक की प्रयोजन? ई काज तँ पुरुख पात्रक छी जे घरसँ निकैल कुटुम-परिवार धरिक चीन-पहचीन रखै छैथ। सेहो अधला की भेल। जखन अधले नै भेल तखन चिन्ते किए हएत, आ जखन चिन्ते नै हएत तखन मने किए बेथाएत! मन हल्लुक करू, अनेरे तरे-तरे गुमसड़ै छी!"

नीलकण्ठ कक्काक मन मानि गेलैन जे मुँहछोहैन छोड़ि किछु ने भेटत। मुदा मनक बेथा-कथा जँ बाजियो नइ लेब तँ ओकरा संग अन्याय हएत। बजला-

"जे बात सुनैमे नै आबए ओ दोहरा कऽ पुछि लेब। मुदा जे बुझैमे नै आबए ओहन नै दोहराएब। शुरूहेसँ कहै छी।"

अपन भरियाइत आसन देखि सुचिता काकी हाथ-पएर सोझ-साझ करैत बैसली। सोझ-साझक कारण रहैन जे नजैर-नजैरक मिलानी नब्बे डिग्रीमे नहि, बल्कि शत-प्रतिशत हुअए। कहलखिन-

"देखू हम बिसराह छी, जँ बीचमे कोनो बिसैर जाइ तँ ओकर मदी नै हएत। मुदा अहूँ, काज केतौ आ बात केतौसँ नइ करब। जहिना-जहिना काज बढ़ैत गेल तहिना-तहिना बातो बढ़बैत चलब।"

सुचिता काकीक विचार नीलकण्ठ काकाकेँ दमगर बुझि पड़लैन। दमगरे विचार ने दमगर आशा जगबैए। बजला-

"डेढ़ साए गोरेकेँ विदाइ केलिऐन। ओना किनको ऐ दुआरे नै

बेरेलिऐन जे एक काजक एके विदाइ उचित बुझलौं। मुदा तइसँ की, किनको संग कम-बेसी तँ नहियेँ केलिऐन।”

पतिक बात सुनि सुचिता काकी टपकली-

“किए, कियो किछु उपराग पठौलैन अछि?”

“उपराग किए कियो पठौता। मुदा मन मानि नै रहल अछि। कहिये दइ छी। डेरहो साए विदाइ डेढ़ लाखक छल। एक-एक विदाइक वस्तुमे एक-एक हजार लागल छल। मुदा आब जखन पाछू उनैट तकै छी तँ बुझि पड़ैए जे दस-सँ-पनरह गोरे तँ धोतियो आ चद्दैरोक उपयोग करता, बाँकी कियो घरनीपा बनौता तँ कियौ गँरि-पोछना!”

पतिक बात सुनिते सुचिता काकी झपैट कऽ बजली-

“अपन महींसकेँ कियो कुरहरियेसँ नाथत तइले अहाँकेँ किए चिन्ता होइए?”

सुचिता काकीक बात सुनिते नीलकण्ठ काकाकेँ झड़क उठलैन, बजला-

“अहीं सन लोक बिआहमे काजसँ विधि भारी बनबैए। एकटा कहू जे अपन बिआह मोन अछि।”

“मन किए ने रहत?”

“केते खर्च बाप केने रहैथ से बुझल अछि?”

“दहेलहा-भसेलहा खनदान बुझै छिऐ जे काजक हिसाब बाप-माएसँ लेब!”

“एना नै छिड़ियाउ, सबा लाख रुपैआमे दुनू गोरेक बिआह भेल रहए। जाउ कनी चसगरसँ भानस करब। अहिना बेजाए नीक होइत एलैए?



शब्द संख्या: 2572

Notes

....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
